अध्याय 3

अक़ीदा (2)
एक अल्लाह पर ईमान और मृत्यू के बाद जीवन पर विश्वास

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوْا
مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى
فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

फिर आदम ने अपने ही रब से तौबा के कुछ अल्फ़ाज़ सीख लिये (और तौबा की) तो अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली, वो तो है ही तौबा क़ुबूल करने वाला (और) बड़ा ही रहम करने वाला। हमने हुक्म दिरया कि तुम यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर तुम को मेरी जानिब से कोई हिदायत पहुँचे तो जो कोई मेरी हिदायत पर चलता रहेगा, तो उसको ना कोई ख़ौफ़ होगा और न कोई ग़म व रंज। और जो कुफ़्र करेंगे और हमारी आयात को झूठ जानेंगे, सो वो ही दोज़ख़ी होंगे और उसमें हमेशा पड़े रहेंगे। (2:37-39)

इंसान को उसकी समस्त शक्तियों और कमज़ोरियों के साथ जब ज़मीन पर बसाया गया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह इंसान को स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता, आक्रामकता या आत्मसमर्पण जैसे व्यवहार से बचने के लिए समय समय पर अपनी हिदायत (निर्देश) भेजता रहेगा क्योंकि शैतान इंसान की इन कमज़ोरियों का शोषण करता है। शैतान की उक्साहटें इंसान की स्वभाविक प्रवृत्तियों को उक्साने के लिए होती हैं जो कि आदम व हव्वा के समय से जारी हैं जिन्हें शैतान ने जन्नत से निकलवा दिया था। आदम व हव्वा (दोनों पर सलामती हो) ने अपनी ग़लती के लिए अल्लाह से तौबा (क्षमा-याचना) की जिसे अल्लाह ने स्वीकार करके उन्हें ज़मीन पर उता दिया, और इस प्रकार इंसानी प्रजाति पहले इंसानी जोड़े की ग़लती या गुनाह के बोझ से आज़ाद हो गयी। और फिर एक के बाद एक जो नस्लें ज़मीन पर होती रहीं उनकी अपनी यह ज़िम्मेदारी ठहरी कि वे अल्लाह की हिदायत के अनुसार अपने इंसानी और भौतिक जीवन को विक्सित करें।

उपरोक्त आयत से यह ज़ाहिर होता है कि तौबा करने के लिए इंसान को अपनी ग़लती स्वीकार करनी चाहिए और फिर से उस ग़लती को दोहराने से बचने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए। लेकिन इंसान स्वभाविक रूप से कमज़ोर है, तो जब कोई सच्ची भावना के साथ अपने कृपावान रब की तरफ़ पलटता है तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है क्योंकि वह बहुत दयाशील रब है। उसकी दया इंसान को उसके ईमान और निर्देशों का पालन करने की इच्छा की बदौलत अपनी कमज़ोरियों पर प्नियत्रण पाने में मदद देती है। क़ुरआन में जहाँ कहीं भी अल्लाह ने स्वयं अपनी हस्ती की ओर इशारा किया है तो प्रायः अपने लिए बहु वचन ('हम') का उपयोग किया है क्योंकि यह अरबी भाषा का सिद्धांत है कि ऊंचे सम्मान की किसी हस्ती के लिए एकवचन के बजाए बहुवचन का उपयोग करते हैं। अलबत्ता, कुछ जगहों पर समीपता को व्यक्त करने के अल्लाह ने एकवचन की ज़मीर (सर्वनामद्ध भी अपनी तरफ़ लगाई है यानि 'मैं' कह कर अपने आपको जताया है।

इंसान को अपनी मानवीय कमज़ोरियों और कोताहियों पर नियंत्रण पाने के लिए अल्लाह ने हिदायत व मार्गदर्शन देने का आश्वासन दिया है। अल्लाह की हिदायत का अनुसरण करने से इंसान दुख और ग़म से बचा रहेगा यानि पूर्व में होने वाली किसी ग़लती के शोक में भी नहीं रहेगा और आगे जीवन में ग़लतियों के दोहराने की आशंका से भय और ग़म में नहीं रहेगा। अल्लाह से सम्बंध स्थापित होने के बाद दिल व दिमाग़ दोनों को एक मज़बूत सहारा मिल जाता है। इसके विपरीत, सत्य को, यह जान लेने के बावजूद भी कि यही सत्य है, लगातार झुटलाते रहने से इंसान के अंदर स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता और दुराचार की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है जिसका खुमियाज़ा इंसान इस दुनिया में भी भुगतता है और आख़िरत में भी वह घाटा उठाने वालों में होगा।

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

हाँ ये हक़ीक़त है जो अल्लाह के सामने झुकेगा, और ववो मुख़लिस भी हो। उसके लिए अपने रब के पास उसका बदला है उनके लिए ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना ग़मो रंज। (2:112)

यह आयत उन लोगों की ओर इशारा करती है जो अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ कर लेते हें, क्योंकि चेहरा इंसानी शरीर का सबसे पहली पहचान रखने वाला अंग है जिससे व्यक्तित्व का पूरा दर्शन होता है और यह चेहरा ही किसी व्यक्ति के पूरे ध्यान को दर्शाने वाला अंग है, और अरबी भाषा में किसी के पूरे व्यक्तित्व का हवाला देने के लिए चेहरे का शब्द उपयोग होता रहा है। उपरोक्त आयत की व्याख्या में जैसा कि मुहम्मद असद ने लिखा है, "इस तरह बयान यानि

दिशा या मुंह करने का बयान क़ुरआन में कई जगह आया है जो कि इस्लाम की एक सटीक परिभाषा व्यक्त करता है, इस शब्द अर्थात असलमः का अर्थ है किसी का अपने आप को अल्लाह के आगे समर्पित कर देना और इस्लाम व मुस्लिम शब्द भी इसी शब्द के मूल से बने हैं और यह सभी शब्द क़ुरआन में जगह जगह स्तेमाल हुए हैं।" स्वयं को अल्लाह के आगे पूरी तरह समर्पित कर देने से इंसान के अंदर स्वार्थपूर्ति, लालच और आक्रामकता का बल कमज़ोर पड़ जाता है और बड़प्पन व विनम्रता के बीच एक संतुलन स्थापित हो जाता है। रिश्तेदारी, दौलत और मकान जैसी चीज़ो से सम्बंध रखने वाली सभी इंसानी कमज़ोरियां (9:24) अपनी सभी भावनाओं, विचारों, उमंगों के साथ पूरी तरह अल्लाह के आगे समर्पित कर देने से और अल्लाह की हिदायत का अनुसरण करने से नियंत्रण में आ जाती हैं। यह अल्लाह के प्रति ऐसी निष्ठा है जो स्वयं अपने प्रति, किसी दूसरे इंसान के या इंसानी संगठन जैसे अपनी ब्रादरी, समुदाय, वर्ग या अपने गुट के प्रति निष्ठा से बढ़ कर होती है। इसमें शक नहीं कि यह वफादारियां भी स्वभाविक हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती लेकिन इन भावनाओँ को एक ख़ास हद से ऊपर नहीं चढ़ना चाहिए और उनको ही अपना सबसे बड़ा लक्ष्य नहीं बना लेना चाहिए कि उनके आधार पर हर चीज़ को देखा और बरता जाए। एक अल्लाह की इबादत शक्ति व कमज़ोरी की स्थिति में व्यक्ति के मानसिक संतुलन को बनाए रखती है और यही चीज़ शक्तिशाली और कमज़ोर लोगों के बीच सामाजिक संतुलन स्थापित करती है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ لَا
تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی
السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ
یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا
بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ وَ مَا خَلۡفَهُمۡ ۚ وَ لَا
یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا
شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرۡسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ
وَ لَا یَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الۡعَلِیُّ
الۡعَظِیۡمُ ﴿۲۵۵﴾ لَاۤ اِکۡرَاهَ فِی الدِّیۡنِ ۟ قَدۡ
تَّبَیَّنَ الرُّشۡدُ مِنَ الۡغَیِّ ۚ فَمَنۡ یَّکۡفُرۡ
بِالطَّاغُوۡتِ وَیُؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ

अल्लाह ही माबूद बरहक़ है। उसके सिवा तो कोई माबूद है ही नहीं। वही हमेशा ज़िन्दा और क़ायम रहने वाला है उसे न तो ऊँघ ही आती है और ना नींद। हर चीज़ उसी की है जो आसमानों में और ज़मीन में है। कौन है के उस की इजाज़त के बग़ैर उससे किसी की सिफ़ारिश करे। जो लोगों के रूबरू हो रहा है और जो उनके पीछे हो चुका है, वो सब अल्लाह को ख़ूब मालूम है, और वो अल्लाह के इल्म में से ज़र्रा बराबर भी किसी चीज़ पर कोई आहात नहीं कर सकते मगर जिस क़द्र वो चाहे उसी की बादशाही (और इल्म) आसमानों और ज़मीन में सब पर हावी है, और अल्लाह को उनकी हिफ़ाज़त कोई दुश्वार नहीं, वो बड़ा आली रूतबा और जलीलुलक़द्र है। इस्लाम में कोई जब्र और क़हर नहीं। हिदायत साफ़ और ज़ाहिर है और गुमराही से अगल थलग है, तो जो बूतों

اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ
وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٧﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ
يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٨﴾

को मानता ही नहीं और अल्लाह ही पर पूरा यक़ीन रखता है तो उसने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी भी टूटने वाली नहीं है। और अल्लाह तो है ही सब कुछ जानने वाला और सुनने वाला। अल्लाह मोमिनीन का दोस्त है जो उनको अंधेरे से निकाल कर रौशनी में ले जाता है। और जो काफ़िर हैं तो शयातीन उनके दोस्त हैं जो उनको रौशनी से निकाल कर तारीकी की जानिब ले जाते हैं। यही लोग दोज़ख़ी हैं। और वो उसमें हमेशा रहेंगे। (2:255-257)

उपरोक्त आयतें इस्लामी आस्था की बुनियादें (मूल आधार) हैं और बहुत ही महत्वपूर्ण व ज़रूरी जानकारियां उपलब्ध कराती हैं। आयत 2:255 में अल्लाह का 'इस्मे आज़म' (सबसे अज़ीम नाम) बयान हुआ है जैसा कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस में जो कि अलहाकिम ने नक़ल की है, है कि अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हू ..... अल्लाह का इस्मे आज़म है। अल्लाह के गुण हर उस चीज़ से अलग हैं जो कि इस दुनिया में मौजूद है। वह अलहय्यि यानि हमैशा से हमैशा तक जीवित है, उसके जीवन का कोई अन्त नहीं है और उसका अस्तित्व स्वयं उसी से है। वह किसी दूसरी चीज़ पर निर्भर नहीं है और वह समय व स्थान से बंधा हुआ नहीं है। इसके अतिरिक्त यह कि उसका जीवन जो कि सभी जीवों के अस्तित्व का स्रोत है, परिपूर्ण (मुकम्मल) है जबकि हमारे चारों तरफ़ मौजूद हर वस्तु और हस्ती अपरिपूर्ण है और उसके जीवन का एक अन्त है, हर एक को न केवल विलुप्त हो जाना है बल्कि उसके अंदर बीमारी और बिखराव भी होता है और उसे अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आराम करने व नींद लेने की भी ज़रुरत होती है।

जिस तरह अल्लाह का जीवन मुतलक़ और मुकम्मल (पूर्ण और निरंकुश) है, उसका अस्तित्व भी मुतलक़ और मुकम्मल है। आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी की सम्पत्ति है और सब उसके नियंत्रण में व उसके आधीन हैं। फिर कोई जीव आख़िर कैसे उसके आगे खड़े होने का साहस कर सकता है और किसी जीव के लिए सिफ़ारिश कर सकता है सिवाय इसके कि अल्लाह ख़ुद ही चाहे और सिफ़ारिश करने की अनुमति दे। अल्लाह का ज्ञान भी मुतलक़ व मुकम्मल है और समय या स्थान की सीमा में सीमित नहीं है, जबकि उसके पैदा किए इंसानों का ज्ञान इन स्थितियों में ही सीमित होता है। उसका ज्ञान और हमारा ज्ञान मूल रूप से अलग अलग है। आयत 2:156 इंसान की आस्था की आज़ादी को सुनिश्चित करती है कि आस्था के मामले में कोई दबाव नहीं है।

अल्लाह में विश्वास से हालांकि इंसान के अंदर अहंकार व हताशा के बीच एक मानसिक संतुलन और शक्तिशाली व कमज़ोर के बीच एक सामाजिक संतुलन स्थापित होता है, लेकिन अल्लाह पर और उसके ज्ञान, शक्ति और उसके गुणों पर ईमान रखने वाले लोग हमैशा उससे हिदायत व हिफ़ाज़त की दुआ करते रहते हैं, किसी पर अपना अक़ीदा ज़बरदस्ती नहीं थोपते। इस अक़ीदे को उन्होंने ख़ुद भी अपनी इच्छा और आज़ादी से ही अपनाया होता है, अतः इसके लिए कोई ज़बरदस्ती या बहाना उन पर नहीं है (देखें 10:99; 11:28)। आस्था और ईमान इंसान के एक सोचे समझे फ़ैसले के नतीजे में होना चाहिए जो उसे अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में आने के लिए करना है, न कि किसी मानसिक या भौतिक दबाव की वजह से हो कि लालच में आकर अपनाया जाए या मजबूर होकर अपनाया जाए। एक अल्लाह में विश्वास रखने वालों के अंदर अपनी आस्था और उसके वैज्ञानिक, तार्किक और मनोवेज्ञानिक पहलुओं के संदर्भ में और उसकी व्यक्तिगत, सामाजिक या वैश्विक उपयोगिता के बारे में आत्मविश्वास होना चाहिए क्योंकि हिदायत को गुमराही से अलग कर दिया गया है। जब तक कोई व्यक्ति अपनी आस्था पर स्वयं ठीक से नहीं जमेगा वह दूसरों को इसका कोई फ़ायदा नहें पहुंचा सकता। आस्था वास्तव में थोपे जाने की चीज़ ही नहीं है और इंसान को आस्था या अक़ीदे के सकारात्मक नतीजे उसे आज़ादी के साथ अपनाए बिना प्राप्त नहीं हो सकते। थोपना और मजबूर करना बे मतलब है। हर व्यक्ति को उसके अक़ीदे और उसकी नियत, ज्ञान और भौतिक व सामाजिक स्थितियों के लिहाज़ से जांचा जाएगा और उसका फ़ैसला होगा।

اَفَغَيۡرَ دِيۡنِ اللّٰهِ يَبۡغُوۡنَ وَ لَهٗۤ اَسۡلَمَ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّ كَرۡهًا وَّ اِلَيۡهِ يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۳﴾

क्या ये काफ़िर अल्लाह के दीन के सिवा दूसरे दीन की तलाश में हैं, हालांकि सब उसी के फ़रमांबरदार हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं ख़्वाह ख़ुशी से ख़्वाह ज़बरदस्ती से, और उसी की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। (3:83)

यह सृष्टि, यह जीवन को दर्शाने वाले तत्व और इंसान की अक़्ल व आत्मा सबके सब उस हस्ती के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं जिसने इन सब को बनाया है और जो इन सब का मालिक व स्वामी है(1:2)। ये सब के सब चाहे अन चाहे ढंग से अललाह के बनाए हुए निमयों के आगे नतमस्तक हैं और अल्लाह की क़ुदरत को और सृष्टि व जीवों में एक त्रिटु मुक्त व्यवस्था को दर्शाते हैं। जहाँ तक इंसान का सवाल है उसका शरीर तमाम दूसरे जीवों की तरह जैविक नियमों से बंधा हुआ है। लेकिन उसका दिमाग़ और उसका दिल (मन व मस्तिष्क) अपनी सोच व इरादे में स्वतंत्र है जो इंसान की शरीरिक और आन्तरिक योग्यताओं से ऊपर हो सकता है और इंसान अपने इरादे से अल्लाह पर ईमान और उसकी हिदायत का अनुसरण

करने की आस्था को अपना सकता है। अन्तः उसे अल्लाह की तरफ़ पलटना ही है और फिर उसके पास कोई विकल्प नहीं होगा, और अल्लाह अकेले हर इंसान के समस्त कर्मों का फ़ैसला करेगा जो उसने दुनिया में किए होंगे। यह एक तार्किक अंजाम है, जो अल्लाह की इस सृष्टि में सभी भौतिक, जैविक, शरीरिक, बौद्धिक और आत्मिक चमत्कारों का मतलब व मक़सद स्पष्ट करता है। (23:115-116)।

إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَ مَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۗ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَإِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَ مَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَ قُلْ لِّلَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ الْأُمِّيّٖنَ ءَأَسْلَمْتُمْ ۗ فَإِنْ أَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَ إِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۗ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

बिलाशुबह दीने बरहक़ अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है। और एहले किताब का इख़्तिलाफ़ तो एक दूसरे से आगे बढ़ जाने के सबब है हालांकि उनको इंजील और तौरेत के ज़रिये पहले ही बता दिया था, और जो शख़्स अल्लाह के एहकाम से इन्कार करता है अल्लाह बहुत जल्द उनसे हिसाब लेने वाले हैं। फ़िर भी अगर ये आप से हुज्जतें करते हैं तो आप कह दीजिये कि (तुम मानो या ना मानो) मैं तो अपना रूख़ ख़ास अल्लाह की तरफ़ कर चुका हूँ और मेरे पैरव भी, और एहले किताब और मुशरिक़ीने अरब से कह दीजिये क्या तुम भी इस्लाम लाये हो, सो अगर वो इस्लाम क़बूल करें तो वो भी सीधे रस्ते पर हो जायेंगे। अगर वो रूगर्दान करते हैं, तो आपके ज़िम्मे तो पहुंचा देना है और बस, और अल्लाह ख़ुद अपने बंदों को देख रहा है। (3:19-20)

وَ مَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَ هُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

और जो इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा उससे हरगिज़ क़बूल किया जाएगा, और वो ही आख़िरत में नुक़सान उठाने वाला होगा। (3:85)

इस्लाम शब्द का मूल अर्थ है आत्मसमर्पण, और धार्मिक शब्दावली में इसका अर्थ है अल्लाह के आगे आत्म समर्पण कर देना। अतः इस शब्द के व्यापक अर्थ के लिहाज़ से इस्लाम क़ुर्आन के अनुसार अल्लाह के सभी पैग़म्बरों का दीन (धर्म) है जो मुहम्मद सल्ल० के संदेश के साथ पूरा हो गया (2:182, 131-133; 3:20,52,67; 5:44, 11; 6:71, 162-163; 10:72-84; 12:10; 22:34; 27:44; 28:53; 31:22; 39:12; 40:66)। इस्लाम को शब्दावली के रूप में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेश के लिए उपयोग किए जाने से इसके

मूल अर्थ पर परदा नहीं पड़ना चाहिए। आयत 3:85 को जब इससे पहले की दो आयतों 3:83,84 के साथ मिला कर देखते हैं तो यह हक़ीक़त सामने आती है कि अल्लाह के सभी जीव व प्राणि उसके आगे नतमस्तक (अस्लमा की स्थिति) में हैं और यह कि इस्लाम अल्लाह के सभी पिछले पैग़म्बरों पर ईमान रखने को कहता है जिन्हें अल्लाह ने लोगों की हिदायत के लिए चुना था और पैग़म्बर बनाया था।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً
نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ
طَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ
الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ
مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ
لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ
قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ
لِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَ لِيُمَحِّصَ
مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

फिर उस ग़म के बाद अल्लाह ने तुम को चैन बख़्शा, यानी ऊंघ तुम में से एक जमात पर छाई हुई थी, और एक जमात को अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वो ख़िलाफ़े वाक़ेया अल्लाह के साथ बदगुमानियां कर रहे थे जो महेज़ हिमाक़त ही का ख़्याल था, वो ये कह रहे थे के क्या हमारा कोई इख़्तियार चलता है, कह दो के इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है, वो अपने दिलों में ऐसी बात पोशीदा रखते हैं जिसको वो आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं के अगर हमारा इख़्तियार होता तो यहाँ मक़तूल ना होते, कह दो अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके मुक़द्दर में क़त्ल लिखा है वो ख़ुद उन मुक़ामात की तरफ़ निकल पड़ते जहाँ वो गिरे पड़े हैं, और ये इसलिए हुआ के अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात को आज़माए, और तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तो दिलों की बात भी ख़ूब जानता है। (3:154)

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَ لَاۤ
اٰبَآؤُنَا وَ لَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ
شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾

और मुशरिकीन कहते हैं के अगर अल्लाह चाहता तो हम अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत ना करते और ना ही हमारे बाप दादा और ना ही हम किसी चीज़ को बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के हराम करते जो लोग उनसे पहले हुए हैं उन्होंने भी ऐसी हरकत की थी सो रसूलों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुंचा देना था। (16:35)

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ

और जब उनसे कहा जाता है के जो रिज़्क़ अल्लाह ने उनको दिया है उसमें से ख़र्च किया करो, तो काफ़िर

اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

मोमिनों से कहते हैं क्या हम उनको खाना खिलायें के जिनको अगर अल्लाह चाहता तो वो ख़ुद खिला देता, तुम तो खुली ग़लती में हो। (36:47)

وَ قَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَ نَحْيَا وَ مَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝

और वो कहते हैं हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी के अलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं है के हम मरते हैं और जीते हैं, और हमें तो ज़माना ही मार डालता है, और उनको उसका कोई इल्म नहीं है, सिर्फ़ क़यास है। (45:24)

इन सभी आयतों में क़ुरआन ने ज़ोर ज़बरदस्ती को नकारा है जिसे इंसान अपनी ग़लत हरकतों के लिए और अपनी ज़िम्मेदारी से भागने के लिए बहाना बना सकता है। बेशक अल्लाह तआला किसी मामले का फ़ैसला करने और उसे तय कर देने की क़ुदरत रखता है, लेकिन उसने तय किया कि इंसान को अपनी बौद्धिक योग्यता और आज़ाद मर्ज़ी प्राप्त होना चाहिए, और इसी लिए हर व्यक्ति उनका सही उपयोग करने के लिए ख़ुद ही ज़िम्मेदार है। अल्लाह की मंशा यह है कि इंसान को सोचने समझने की ताक़त प्राप्त हो और चयन की आज़ादी हो, और इस तरह उसे उन सभी कामों के लिए जबावदेह बनाना पूरी तरह उचित है जो वह स्वयं अपनी मर्ज़ी से करता है और जिन कामों को करने से वह स्वयं अपनी मर्ज़ी से बचा रहता है। अल्लाह तआला निश्चित रूप से यह जानता है कि कोई व्यक्ति अपनी आज़ाद मर्ज़ी से क्या चुनेगा, क्योंकि वह हर बात से बाख़बर है, और वह एक वास्तविक ईश्वर हो नहीं हो सकता अगर भविष्य के मामलों से भी इसी तरह अवगत न हो जिस तरह वह पूर्व की और वर्तमान की बातों को जानता है। इसलिए इसमें कोई हैरानी वाली बात नहीं कि हर व्यक्ति को इरादे और मर्ज़ी की आज़ादी प्राप्त है और उसे अपनी बौद्धिक व शरीरिक योग्यताओं की सुरक्षा करना और उन्हें तरक़्क़ी देना चाहिए ताकि वह अपने विचार और कर्म की आज़ादी को सुरक्षित रख सके जिसमें उसे परिवार, समाज और राज्य की सहायता भी प्राप्त हो।

इसके अतिरिक्त हर इंसान को जहाँ तक हो सके, सकारात्मक काम करना चाहिएं और सही बात को अपनाने के लिए आगे बढ़ना चाहिए और ग़लत बातों या कामों से बचना चाहिए। लेकिन इस आज़ाद मर्ज़ी के बावजूद जीवन देना या लेना प्राकृतिक रूप से किसी भी इंसान की शक्ति के बाहर है, और इसलिए उसे किसी भी इंसानी आज़ादी के दायरे से बाहर रखा गया है। इसका निर्णय केवल अल्लाह ही कर सकता हे जो जीवन भी देता और मौत भी (2:258; 3:156; 7:158; 9:116; 10:56; 23:80; 40:68; 57:2...)।

यह आयत एक अनिवार्य सिद्धांत को भी सामने लाती है, यानि यह कि अक़ीदे के मामलों पर आज़ादी के साथ बात चीत और परिचर्चा की जा सकती है या की जानी चाहिए। जब तक यह वार्ता या परिचर्चा एक सकारात्मक और नतीजा देने वाले ढंग से और तार्किक व नैतिक दायरे में जारी रह सके। इन आयतों में से अन्तिम आयत नास्तिकों के इस विचार पर सवाल खड़ा करती है कि इस सृष्टि की व्यवसथा को चलाने वाली कोई शक्ति नहीं है, बस यह एक युग है और प्राकृतिक गतिशीलता है इसलिए यह केवल प्राकृतिक नियम ही हैं जो इस दुनिया में काम कर रहे हैं, और इस जीवन के बाद किसी दूसरे जीवन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अल्लाह पर ईमान रखने के विरोध में इस गम्भीर तर्क को क़ुरआन नज़र अंदाज़ नहीं करता। इसके बजाए वह इस तर्क के निराधार होने को जताता है और मुसलमानों को यह सीख देता है कि ऐसे विरोधपूर्ण तर्कों को किस तरह तार्किक रूप से और बेझिझक रद्द किया जाए। पूरे क़ुरआन में पाठक को ऐसे तथ्यात्मक बयान मिलते हैं कि जो लोग ईमान नहीं लाए उन से क्या कहा गया और उन्हें तरह तरह से क्या क्या तर्क दिए गए। इस तरह धर्मों के ज्ञानियों और दार्शनिको को तर्क से बात करने का रास्ता दिखाया गया है कि अपने ज्ञान और अपने ज़माने के तरीक़ो के मुताबिक़ तर्कों पर अपने दावों का आधार रखें (16:152; 22:3,8; 29:46; 31:20; 34: 24-26)।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾

और उससे अच्छा और किस का दीन होगा जो अपना रूख़ अल्लाह की तरफ़ करे, और वो मुख़्लिस भी हो, और वो मिल्लते इब्राहीम (अस) का इत्तेबा करे जिसमें कजी का नाम ना हो, और अल्लाह ने इब्राहीम को ख़ालिस दोस्त बनाया था। (4:125)

क़ुरआन में हज़रत इब्राहीम का बयान बहुत ख़ास तरीक़े से हुआ है जो कि अल्लाह के दोस्त (ख़लीलुल्लाह) थे। उन्हें जब आग में फैंका गया तो यह उनकी एक परीक्षा थी और यह भी उनकी एक परीक्षा थी कि उन्हें अपने बेटे को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान कर देने को कहा गया। दोनों ही मामलों में और उनके अलावा अन्य मामलों में भी उन्होंने इस बात को सि) किया कि वह अपने आप को अल्लाह के आगे पूरी तरह समर्पित कर चुके हैं। वह अपने सच्चे ईमान और सदाचारी व्यवहार की वजह से एक आदर्श थे जिसका अनुसरण सभी ईमान वालों ख़ास तौर से उनके वंशजों को करना चाहिए (2:132; 12:38)। वह अपने जीवन में जहाँ भी गए हर जगह उन्होंने लोगों को मुस्तक़िल तौर से एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाने का काम किया। मुसलमानों का अक़ीदा है कि अल्लाह की इबादत के लिए पवित्र काबा उसका

सांकेतिक घर है जो मक्का में है और हज़रत इब्राहीम व उनके बेटे हज़रत इस्माईल ने इसे बनाया था और फिर बाद में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आने से पहले शाताब्दियों तक उनकी शिक्षाओं का प्रभाव इस इलाक़े में रहाँ इसीलिए यहूदियों व ईसाइयों और अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मानने वालों की आस्था हज़रत इब्राहीम से जुड़ी हुई है। मुहम्मद सल्ल० के अनुयायि व्यवहारिक रूप से हज़रत इब्राहीम के तरीक़े पर ही चल रहे हैं (देखें 2:124; 2:135; 3:68,95; 6:161; 16:120-123; 22:78; 33:7; 42:13; 60:4)।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضِ وَ هُوَ يُطْعِمُ وَ لَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ
اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَ
لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۴﴾ قُلْ اِنِّيْۤ
اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ
فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَ
اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ
اِلَّا هُوَ ؕ وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ
عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۸﴾ قُلْ
اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫
شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ۫ وَ اُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا
الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ
لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ
قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
وَّ اِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾

आप कह दीजिये, क्या मैं अल्लाह के सिवा जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, और कोई उसको खाने को नहीं देता, किसी और को माबूद बनाऊँ आप कह दीजिये के मुझे तो ये हुक्म है के मैं सबसे पहले इस्लाम क़बूल करूं और तुम मुशरिक़ीन में से हरगिज़ ना होना। आप कह दीजिये के मैं अगर अपने रब का कहा ना मानूंगा तो एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। जिससे उस रोज़ वो अज़ाब हटा दिया जाएगा तो उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम किया, और खुली और ज़ाहिर कामयाबी है। और अगर तुझको अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुंचा दे तो उसका दूर करने वाला अल्लाह के सिवा और कोई नहीं, और अगर तुझको वो कोई नफ़ा पहुंचा दे तो वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और वो ही अल्लाह अपने बन्दों पर ग़ालिब है बरतर है, और वो ही बड़ी हिकमत वाला और पूरी ख़बर रखने वाला है। आप कह दीजिये सबसे बढ़कर गवाही देने के लिए कौन है? आप उनको बता दीजिये के मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह है, और मेरे पास ये क़ुरआन बतौर वही के भेजा गया है, ताके मैं इसके ज़रिये तुमको और जिस जिस को ये पहुंचे उन सबको डराऊँ, क्या तुम वाक़ई यह गवाही दोगे के अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं, आप कह दीजिये मैं तो गवाही नहीं देता, आप कह दीजिये बस वो तो एक ही माबूद है, और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। (6:14-19)

इंसान को ज़मीन पर अपने अस्तित्व को बनाए रखने और अपनी भौतिक, बौद्धिक और शरीरिक व अध्यात्मिक शक्तियों के विकास के लिए बहुत सी अनिवार्य आवश्यकताओं की दरकार है। जो हस्ती जीवन भर इन आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है वह एक ही हस्ती है जिसे इंसान को ख़ुदा के रूप में मानना चाहिए जो कि मालिक, अन्नदाता और रब है। वह इंसान की आवश्यकताएं पूरी करता है लेकिन ख़ुद उसे किसी की ज़रूरत नहीं है। वह रचियता है और उसकी हस्ती अनन्त है और वही है जिसके आगे इंसानी मख़लूक़ को अपनी मर्ज़ी से झुक जाना चाहिए अगर वह अपनी इंसानी सूझबूझ को सही और गम्भीर तरीक़े से स्तेमाल करे। यह विचार कि इंसान की पैदाइश ज़मीन पर स्वतः ही हो गयी, और वह स्वयं अपने बल बूते पर ही ज़मीन पर जी सकता है, और इस जीवन को वह अपनी मर्ज़ी से बिताएगा, स्वीकार्य नहीं हो सकता। यह आस्था भी कि बहुत से देवी देवताओँ ने ख़ुदाई के कामों को आपस में बांट रखा है, तर्क और बुी के ख़िलाफ़ है। चुनांचि इंसान अपने दिल व दिमाग़ से इसी बात को पाता है/पाती है कि अपने पैदा करने वाले के आगे अपने आप को समर्पित कर दे जो एक अकेला प्रभु है और उसके साथ किसी देवी या देवता के साझी होने के दावे का खण्डन कर दे। अल्लाह को उसकी सभी शक्तियों के साथ अपना मालिक व पूज्य मानने के बाद इंसान की समझ में यह आता है कि इस जीवन को अन्तिम मानना बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि यहाँ अन्याय है और यह जीवन परिपूर्ण नहीं है, यह अन्तः समाप्त हो जाना है, इसके बाद एक दूसरा जीवन होना चाहिए जो अधिक न्यायपूर्ण, आनन्द दायक और परिपूर्ण हो (23:115-116)। इस जीवन के बाद आने वाले जीवन में जो लोग पीड़ा झेलेंगे वह उन पीड़ाओं का बदला होगा जो इस दुनिया के जीवन में उन्होंने दूसरों को दी होगी, और जो लोग अभी अकारण पीड़ाग्रस्त जीवन बिता रहे हैं या अल्लाह की हिदायत के अनुसरण करते हुए दूसरों की सहायता करते हैं उन्हें कभी समाप्त न होने वाला आनन्द प्राप्त होगा और अपनी स्वार्थपूर्ति, घमण्ड और लालच की भावनाओं को नियंत्रण में रखने का बदला उन्हें मिलेगा।

उपरोक्त आयत (6:7) स्पष्ट बताती है कि इस दुनिया में अल्लाह तआला न केवल राहत और आनन्द देता है बल्कि दुख व दर्द भी देता है। उसने इंसान को अपनी आज़ाद मर्ज़ी से और अपनी हिकमत (युक्ति) से पैदा किया है और इंसान से अच्छे या बुरे दोनों तरह के कर्मों की सम्भावना है। चूंकि पहले इंसान की पैदाइश के समय फ़रिश्तों ने हैरत व्यक्त की थी कि अगर इंसान को अपनी अक़ल और मर्ज़ी की आजादी के साथ ज़मीन पर उतारा जाएगा तो क्या ज़मीन पर विनाश और रक्तपात नहीं होगा (2:30)। अल्लाह ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों शक्तियों को एक साथ जमा कर दिया है क्योंकि उसने इस जीवन को इंसान की परीक्षा के रूप में बनाया है और इस परीक्षा का तकाज़ा यह है कि यहाँ आनन्द व कष्ट का सिलसिला बना रहे। जो लोग यह कहते हैं कि अल्लाह कोई नुक़सान और कोई तकलीफ़ नहीं दे सकता

क्योंकि वह रहीम व महरबान है, उन्हें यह बात मस्तिष्क में रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला निश्चित रूप से यह शक्ति रखता है कि अगर चाहे तो दूसरों को नुक़सान और तकलीफ़ पहुंचने से बचा ले, और यह कि उसने नुक़सान पहुंचाने वाले प्राकृतिक कारण भी पैदा किए हैं जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़, तूफ़ान, कीटाणु, शिकारी पशु पक्षी आदि। अल्लाह तआला तमाम जीवों व प्राणियों का रचनाकार है और वह अपनी मख़लूक़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। अल्लाह की रचना अर्थात सृष्टि अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए मुकम्मल है लेकिन दुनिया का यह जीवन पूरी तरह मुकम्मल नहीं है क्योंकि पूरी तरह दुरूस्त होना, न्याय, स्थिरता और स्थायित्व आख़िरत के जीवन के लिए ख़ास हैं (12:109; 13:26; 29:64; 35:35; 40:39)। इस जीवन के बाद एक दूसरे जीवन का होना यहाँ पैदा होने वाले सवालों का पूरा जवाब है और इस दुनिया में होने वाले अन्याय और अधूरेपन का बदल है, और इस सच्चाई को अल्लाह के पैग़ाम में बार बार ज़ोर देकर मनवाया गया है। इस तरह क़ुरआन इंसान के मन मस्तिष्क को संतुष्ट करता है और एक अल्लाह के सत्य होने और आख़िरत के जीवन के सच होने की तरफ़ ले जाता है।

وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ وَ مَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَ لَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَ يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَ هُوَ اَسْرَعُ

और तमाम पोशीदा चीज़ों के ख़ज़ाने तो अल्लाह की के पास हैं, उनको उसके सिवा कोई दूसरा नहीं जानता, और वो ही ख़ुशकी और तरी के तमाम पोशीदा चीज़ें भी जानता है, और कोई पत्ता नहीं गिरता जो वो ना जानता हो और कोई दाना ज़मीन तारीक हिस्से में नहीं हरा होता और ना कोई तर और ख़ुश्क चीज़ गिरती है, मगर ये सारी चीज़ें किताब में लिखी हैं। और अल्लाह वो है जो रात में तुम्हारी रूह को एक गुना क़ब्ज़ कर देता है और जो तुम दिन में करते हो वो उसको भी जानता है, फ़िर तुम को दिन में जगा देता है ताके मेअयादे मोईय्यन तमाम कर दी जाए, फ़िर तुम को उसी की तरफ़ जाना है, फ़िर तुम को बता देगा जो तुम किया करते थे। और वो ही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और बरतर है, और वो तुम पर निगेहदाश्त रखने वाले फ़रिश्ते भेजता है, यहाँ तक के जब तुम में कोई मरता है तो हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं, और वो ज़रा भी कोताही नहीं करते। फ़िर सब अल्लाह की तरफ़ लौट जायेंगे, जो उनका मालिके हक़ीक़ी है, सुन लो! फ़ैसला अल्लाह ही

الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ
ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ
خُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ
مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ
تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ
يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ
مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّ
يُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

का होगा, और वो बहुत जल्द हिसाब करने वाला है। (और) आप फ़रमा दीजिये, वो कौन है जो तुम को ख़ुश्की और तरी के अंधेरों से निजात देता है जब तुम उसको पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके के अगर आप हमको इनसे निजात दे दें तो हम क़द्रदान हो जायेंगे। आप कह दीजिये के अल्लाह ही तुम को उनसे निजात देता है, और हर ग़म से भी, तुम फ़िर भी शिर्क करने लगते हो। आप फ़रमा दीजिये, इस पर भी वो ही क़ादिर है के तुम पर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे, या तुम्हारे पाऊँ तले से या तुम को गिरोह गिरोह करके सबको उड़ा दे, और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई का मज़ा चखा दे, ज़रा आप देखिये हम किस किस पहलू से दलायल बयान करते हैं ताके वो समझ लें। (6:59-65)

अल्लाह तआला उन सभी चीज़ों को स्वयं और प्रत्यक्ष रूप से जानते हैं जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं और जो हमारी कल्पना से भी परे हैं। अल्लाह ने ही हर चीज़ को पैदा किया है और वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों में सक्रिय नियमों को जानता है और इस बात का ज्ञान पहले से ही रखता है कि उसका कोई प्राणि किसी ख़ास स्थिति में कैसे और क्या काम करेगा। थल और जल, धर्ती के आकर्षण और पौधों के जीवन के नियमों के अनुसार नमी व सूखेपन से विभिन्न प्रजातियों पर पडने वाले प्रभावों के नियम, और सामान्य कारकों व कारणों के बारे में उसे पहले से ही उन सभी बातों की जानकारी है जो विभिन्न स्थितियों में इन नियमों का नतीजा हो सकती हैं। हम धीरे धीरे उन नियमों में से कुछ की खोज कर सकते हैं लेकिन जितना जितना हम इस जिज्ञासा में पड़ेंगे उतना उतना हमें उन चीज़ों को जानने के महत्व का अहसास होता चला जाएगा जो हम नहीं जानते और जिन्हें जानने की योग्यता हम नहीं पा सकते। कुछ मामलों में हम केवल यह जान सकते हैं कि कुछ सम्भावनाएं है, लेकिन हम निश्चित रूप से भविष्यवाणी नहीं कर सकते कि ऐसा हो ही जाएगा। इंसान स्वयं भी जैविक और भौतिक नियमों से बंधा हुआ है, जिनमें से कुछ को जाना जा सकता है। हम रात में नीन्द आने और दिन में काम करने की ऊर्जा के क़ानून को जान सकते हैं। लेकिन इंसानी दिमाग़ और उसकी आज़ाद मर्ज़ी लोगों को ऐसा बना सकती है कि वह उसके विपरीत काम करने के आदी हो जाएं, इस तरह यह बात समझ में आ सकती है कि लोग एक ही स्थिति में अलग

अलग तरह के काम कर सकते हैं।

इस तरह अल्लाह तआला ही उन तमाम मामलों को जानता है जो इस सृष्टि में अंजाम पाते रहते हैं। वह उन की संरचना से भी अवगत है और उनका पूरा विवरण भी उसे मालूम है। मृत्यू पूरी तरह से एक रहस्य है और उसके बाद क्या होना है यह सभी जीवित इंसानों की कल्पना से परे है। जब कभी भी इंसान सोचता है कि दुनिया उसके नियंत्रण में है तो तरह तरह की समस्याएं उसे यह अहसास दिलाती हैं कि यह बात सच्चाई से कोसों दूर है। लोग माहौल में ज़ाहिरी बदलाव से, जैविक हानि से, मनोवैज्ञानिक असंतुलन से, सामाजिक टकराव व विवादों से और बीमारियों से प्रभावित होते हैं। अति विक्सित देश जिनके पास बहतरीन उपकरण हैं वह भी हाल ही में वातावरण प्रदूषण और जल व थल में होने वाले बिगाड से प्रभावित हुए। ओज़ोन की परत में छेद हो जाने की समस्या से लेकर भूकम्पों, तूफ़ानों, सेलाबों और दूसरी तरह के विनाश का एक सिलसिला है जिनसे लोग प्रभावित होते हैं। लेकिन अल्लाह का मार्गदर्शन और उसकी क़ुदरत किसी इंसान के अपने व्यक्तित्व में भी और व्यक्ति व समाज के बीच भी, समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भी, पूरी दुनिया के सभी देशों के बीच भी और मानवजाति के बीच भी एक संतुलन पैदा करने में सहायक होती है। लोग जब कठिन स्थितियों से दो चार होते हैं तो अल्लाह की ओर ध्यान लगाते हैं और उसके अनुपालन का वायदा करते हैं लेकिन जब उन्हें राहत मिल जाती है तो वो जल्द ही अपने वायदे और प्रतिज्ञा को भूल जाते हें। क़ुरआन इंसान को बार बार जीवन में आने वाले उतार चढ़ाव की याद दिलाता है और उन्हें ताकीद करता है कि वो इस बात को समझें के यह जीवन अनन्त नहीं है और इंसान चाहे कितनी भी शक्ति या ज्ञान रखता हो पूरी तरह अपना अधिकार नहीं रखता/रखती। अल्लाह और आख़रित के जीवन पर ईमान रखने और अल्लाह की हिदायत पर चलने से इंसान को दुनिया के इस जीवन की प्राकृतिक और मानवीय आपदाओं का सामना करने में संतुलन और अडिगता प्राप्त हो सकती है।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا
وَ لَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ
هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ
فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ
يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۭ قُلْ اِنَّ
هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَ اُمِرْنَا

आप कह दीजिये, क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें जो हमें ना तो कोई नफ़ा दे, और ना कोई नुक़सान, और हम क्या उल्टे पैरों फ़िर लौट जायें, इसके बाद के अल्लाह ने हमको हिदायत कर दी है, ये ऐसी मिसाल है के शयातीन ने जंगल में एक शख़्स को बेराह कर दिया, वो भटकता फ़िरता है, उसके साथी उसको सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं के हमारे पास आ, आप कह दीजिये, बेशक अल्लाह ही का रास्ता वो

لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۷۱﴾

रास्ता है जो सीधा है, और हमको ये हुक्म है के हम सारे जहान के रब की ही इताअत और फ़रमांबर्दारी करें। (6:71)

यह आयत इस बात को उजागर करती है कि अल्लाह को छोड़ कर किसी और हस्ती या वस्तु में विश्वास व आस्था रखना बुि) और व्यक्ति के व्यक्तिगत संतुलन और मन की सन्तुष्टि के विपरीत है। झूटे खुदा इंसान को एक टूटी फूटी शख़्सियत बना देते हैं और उनके कर्म संतुलित नहीं होते, और कोई व्यक्ति सामान्य बुि) के विपरीत कोई काम करता है तो वह ख़ुद अपने साथ भी और दूसरे इंसानों के साथ भी सामंजस्य को खो देता है और जो लोग उसे उसकी उलझनों से निकालने के गम्भीर प्रयास करते हैं उनको भी वह महत्व नहीं देता। अल्लाह की हिदायत ही सत्य है क्योंकि यह उस हस्ती की तरफ़ से है जो सभी प्राणियों को जीवन देने वाली है, जो किसी से कोई बैर नहीं रखती। इसलिए एक समझदार इंसान को यह चाहिए कि वह इस हिदायत व मार्गदर्शन के आगे स्वयं को झुका दे और अपने आप को बरतने में भी और दूसरों के साथ व्यवहार करने में भी अल्लाह के इंसाफ़ को अपनाए।

وَ كَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِيَكُوْنَ مِنَ
الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ
كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ
لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ
بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ
لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ
الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ
بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ
اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ
فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَاۤ اَنَا
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَ حَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ

और हम इसी तरह इब्राहीम (अस़) को आसमानों और ज़मीन की मख़लूक़ात दिखाने लगे ताके वो आरिफ़ हो जायें (यानी अल्लाह को पहचानने वाला) और कामिल यक़ीन रखने वाला हो जाये। फ़िर जब रात की तारकी उन पर छा गई तो उन्होंने एक सितारा देखा, आप ने कहा के ये मेरा रब है, सो जब वो ग़ुरूब हो गया तो कहा मैं ग़ुरूब होने वाले को पसंद नहीं करता। फ़िर जब चांद को देखा चमकता हुआ तो कहा मेरा रब तो ये है, सो जब वो भी गुरूब हो गया, आपने कहा अगर मुझको मेरा रब हिदायत ना करता रहे तो मैं गुमराही में हो जाऊं। फ़िर जब आफ़्ताब को देखा चमकता हुआ, तो कहा ये मेरा रब है, ये सबमें बड़ा है, सो जब वो ग़ुरूब हो गया, तो आपने कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। मैं अपना रूख़ उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, तो ख़ालिस मुसलमान हूँ, और मैं मुशरिक़ों में से नहीं हूँ। इब्राहीम की क़ौम उनसे बहस करने लगी, उन्होंने कहा क्या तुम

اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنِ ؕ وَ لَآ
اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَ كَيْفَ اَخَافُ مَآ
اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ
فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ
يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ
الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

अल्लाह के बारे में मुझसे बहस करते हो, जिसने मुझे सीधा रास्ता बताया है, मैं उन चीज़ों से नहीं डरता जिनको तुमने शरीक बना लिया है मगर मेरा रब जो चाहे, वो तो हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है, क्या तुम ख़्याल नहीं करते। और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूं जिनको तुमने शरीक बनाया है जबके तुम इससे नहीं डरते के तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक बनाया है जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं नाज़िल की, सो उन दो जमातों में से अमन का ज्यादा मुसतहिक़ कौन है, अगर तुम ख़बर रखते हो। जो मोमिनीन अपने ईमान को शिर्क में मख़लूत नहीं करते उन्हीं के लिए अमन है और वो ही राह पर चल रहे हैं। (6:75-82)

यहाँ क़ुरआन एक ऐसे व्यक्ति की बहतरीन मिसाल पेश करता है जो सृष्टि के विभिन्न दर्शनों व गतिविधियों के पीछे सक्रिय शक्ति के बारे में ग़ौर करने के लिए अपनी अवलोकन शक्ति और बुद्धि को काम में लाता है। हज़रत इब्राहीम जो अनेक पैग़म्बरों के पूर्वज हैं कुलदानी लोगों के बीच रहते थे जो सितारों और नक्षत्रों का ज्ञान भी रखते थे और उनकी पूजा भी करते थे। प्रतिक दर्शनों का सावधानी पूर्वक और सटीक अवलोकन व विश्लेषण करके हज़रत इब्राहीम इस नतीजे पर पहुंचे कि जीवों और प्राणियों को पैदा करने वाला ही वास्तव में रब (पालनहार) है। उन्होंने अल्लाह की रचनाओं में अल्लाह की निशानियों को देखा और सृष्टि की संरचना पर ग़ौर किया, यह ग़ौर व फ़िक्र (चिंतन मनन और अवलोकन) तब तक जारी रहा जब तक वह इस नतीजे पर नहीं पहुंच गए कि इन सब के पीछे और इन सब के ऊपर कोई महानतम शक्ति है जिसकी कल्पना इंसान अपनी इन्द्रियों से अवलोकन के आधार पर कर सकता है। क़ुरआन अपने पाठकों को हज़रत इब्राहीम की जिज्ञासा और खोज के बारे में बताता है जो उन्होंने ज्ञान व विश्वास प्राप्त करने के लिए जारी रखी। हज़रत इब्राहीम ने यह पाया और फिर साबित भी किया कि बुतों को पूजना हिमाक़त है (21:51-70; 37:83-98)। फिर जब कुछ दूसरी चीज़ों से वह हैरान हुए जैसे चमकते सितारों को देखा तो अपनी अक़ल से यह नतीजा निकाला कि वो दिखाई देने के बाद फिर छुप जाते हैं, अपने अस्तित्व और स्थान को वो कभी एक ही स्थिति पर नहीं बनाए रख सकते और न दूसरों का भाग्य बनाने या बिगाड़ने में उनकी कोई भूमिका है क्योंकि वो अपनी कक्षाओं में प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत परिक्रमा करते रहते हैं जिसके लिए उनके रचियता ने उन्हें बाध्य कर रखा है, चाहे उन्हें देख कर लोग कितना ही

धोखा खाएं। सृष्टि का स्वामी इन चमकते सितारों या ग्रहों से कहीं अधिक महान है चाहे इन ग्रहों या नक्षत्रों में कितना ही आकर्षण हो।

सृष्टि के अवलोकन में हज़रत इब्राहीम ने जो कुछ भी देखा और पाया उसमें इंसान के लिए एक स्थायी सीख है कि अपनी इन्द्रियों से होने वाले अवलोकन व ज्ञान को किस तरह काम में लाया जाए और बौद्धिक विवेचना से किस तरह सही परिणाम और सत्य तक पहुंचा जाए। सितारे, चांद और सूरज, उनका आकार और उनका प्रकाश जो कुछ भी हो, बहरहाल हमैशा रहने वाली चीज़ नहीं है और उनके होने या न होने से इस जीवन में इंसान के भविष्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, मृत्यू के बाद क्या होगा इसको तो जाने ही दीजिए।

सत्य की खोज में हज़रत इब्राहीम के प्रयास पूरी मानवता के लिए बहुत प्रभावपूर्ण और सीख देने वाले हें। उन्होंने कभी उन काल्पनिक ख़तरों की परवाह नहीं की जो उनके लोगों ने उन्हें दिखाए कि उनके काल्पनिक भगवान उन पर लानत करेंगे और उन्हें अभिषाप देंगे, इसके बजाए उन्होंने सत्य की खोज के लिए अपनी बुि को स्तेमाल किया। अपनी आस्था पर पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद उन्होंने सत्य को बयान किया और अपने लोगों का ध्यान उनकी आस्थाओं के विरोधाभासी और बेमतलब होने की तरफ़ दिलाया, जो कि तरह तरह की आशंकाओं और भय से ग्रस्त रहते थे जो उन्होंने खुद ही अपने लिए घड़ लिए थे और प्रति के दर्शन और अन्य चीज़ों से वे डरा करते थे। लिहाज़ा "दोनों पक्षों में कोन सा पक्ष शान्ति (मन के सुकून) का अधिकारी है ? जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को (शिर्क के) ज़ुल्म से ख़राब नहीं किया उन के लिए शान्ति (और मन का सुकून) है और वही हैं जिन्होंने सीधा रास्ता पा लिया है।"

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ
وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ
شَىْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ
شَىْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
وَّكِيْلٌ ﴿۱۰۲﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۖ وَهُوَ
يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۰۳﴾
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ
اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِىَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ

वही आसमानों और ज़मीन का मोजिद है, अल्लाह के औलाद कहाँ हो सकती है जबके उसकी कोई बीवी नहीं है, अल्लाह ही ने हर चीज़ पैदा की है, और वो ही हर चीज़ को ख़ूब जानता है। ये अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तुम उसी की इबादत किया करो, और वही हर चीज़ का कारसाज़ है। नहीं अहाता कर सकती उसको आँखें और वो सब आँखों का अहाता कर सकता है, और वो ही बहुत बारीक बीन बाख़बर है। बिलाशुबह तुम्हारे पास तुम्हार रब की तरफ़ से हक़बीनी के ज़राये पहुंच चुके हैं, जो देखा करेगा वो अपना ही फ़ायदा

करेगा और जो अंधा रहेगा वो ख़ुद ही नुक़सान उठायेगा और मैं तुम्हारा कोई निगरान नहीं हूँ। (6:101-104)

أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

अल्लाह सुबहानहू व तआला की मुबारक हस्ती हक़ीक़त में तो इंसान की कल्पना और इन्द्रियों के दायरे से बुलन्द है लेकिन अल्लाह ने क़ुरआन में अपना परिचय अपने गुणों के हवाले से कराया है और अपने ष्असमाय हुस्नाष (पाक नामों) से इंसान को परिचित कराया है (7:180; 17:110; 20:18; 59:22-24) जो गिनती में 99 नाम हैं (तिरमिज़, इब्ने हय्यान, अलहाकिम की मुस्तदरक, और बेहिक़ी की शोअबुल ईमान और अलसुयूती ने इसे प्रमाणित माना है)। अल्लाह के यह विशेष नाम क़ुरआन पढ़ने वाले के ज़हन में अल्लाह का कल्पनात्मक रूप बनाते हैं और अपनी रचनाओं के साथ ख़ास तौर से इंसान के साथ अल्लाह का जो सम्बंध है उसका बोध कराती हैं। अल्लाह के ये गुण ईमान वालों को अपनी कार्यशैली के लिए मार्गदर्शन देने का भी काम करते हें। अलबत्ता, यह सच्चाई है कि अल्लाह तआला अपने गुणों में अकेला है और उसके उत्तम गुणों तक पहुंचना इंसान के बस की बात नहीं है, और कुछ गुण तो ऐसे हैं कि जिन्हें इंसान को अपने विचार में भी नहीं लाना चाहिए कि वो केवल और केवल अल्लाह के अपने लिए ही ख़ास हैं जैसे कि वह आलिमुल ग़ैब (गुप्त को जानने वाला) है या वह अलक़ह्हार (ग़ज़बनाक) है या वह अलजाबिर (हर चीज़ पर अपना ज़ोर रखने वाला) है या अलमुतकब्बिर (बड़ाई या अभिमान रखने वाला) है। अल्लाह के विशेष नामों में एक नाम अल्लतीफ़ है यानि मुहम्मद असद के शब्दों में ष्वह बहुत ही महीन है और इसी लिए उसे देखा या महसूस भी नहीं किया जा सकता और उसकी गहराई को नहीं पहुंचा जा सकता।ष मुहम्मद असद आगे लिखते हैं कि जब यह शब्द क़ुरआन में अल्लाह की हस्ती के लिए ख़बीर शब्द के साथ आता है तो इससे यह बात व्यक्त होती है कि इंसान की कल्पना, विचार और बोध की पहुंच उस तक नहीं हो सकती, जबकि वह ख़ुद हर चीज़ से बाख़बर है (36:10; 22:63; 31:16; 33:34; 67:14)। असद यह भी टिप्पणी करते हैं क़ुरआन में दो स्थानों पर इन दोनों विशेष नामों के साथ प्रीफ़िक्स अल स्तेमाल हुआ है जिसका मतलब यह होता है कि केवल वही हस्ती ऐसी है जिसका बोध नहीं किया जा सकता, और यह गुण केवल उसी के लिए ख़ास है (आयत 106 पर असद की व्याख्या)। असद आगे लिखते हैं कि वह सभी दोषों और कमियों से मुक्त है। ... उस जैसा कोई चीज़ नहीं... (42:11), और कोई उसके समान नहीं है (112:4)। असद आगे लिखते हैं कि यह बात कि उसको किसी ख़ास मिसाल से बयान नहीं किया जा सकता इससे यह स्पष्ट होता है कि क़ुरआन में बयान हुए अल्लाह के गुण उसकी हक़ीक़त को सीमित नहीं करते बल्कि सृष्टि में उसकी क्रियाओं के असर का अहसास कराते हैं (आयत 106 की व्याख्या)। इस लिहाज़ से अल्लाह का विशेष नाम लतीफ़ अल्लाह की कृपा व दया को व्यक्त

करता है कि वह अपनी कृपा व दया के साथ सभी जीवों और प्राणियों के से मामला करता है चाहे वो (इंसान व जिन्न) अल्लाह की शिक्षाओं पर अमल करें या न करें, और कठिनाइयों व समस्याओं के समय भी उसे पुकारें या न पुकारें।

क़ुरआन में अल्लाह का यह परिचय इंसान को अल्लाह की मअरिफ़त (बोध) प्राप्त करने और जीव जन्तुओं से उसके सम्बंध को समझने में सहायक है और इंसान अपनी कल्पना शक्ति से अल्लाह की हस्ती को बोध कर सकता है। यह हर व्यक्ति के अपने ऊपर है कि वह अपनी बुद्धि और अध्यात्मिक अन्तदृष्टि का स्तेमाल करके अपनी क्षमता को इतनी ऊंचाई तक ले जाए, या इस क्षमता को अपने अन्दर पैदा करने व बढ़ाने की तरफ़ कोई ध्यान न देकर स्वयं को इतना सीमित रखे कि केवल छूकर और देख कर ही किसी चीज़ को समझ सकता होः ये लोग (बिल्कूल) मवेशियों की तरह हैं बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए, यही हैं जो ग़फ़लत (अचेतना) में पड़े हुए हें (7:179)।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ۝۱۰۶ وَ
لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَ مَا جَعَلْنٰكَ
عَلَیْهِمْ حَفِیْظًا ۚ وَ مَآ اَنْتَ عَلَیْهِمْ
بِوَكِیْلٍ ۝۱۰۷ وَ لَا تَسُبُّوا الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ فَیَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ
كَذٰلِكَ زَیَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ
اِلٰی رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَیُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
یَعْمَلُوْنَ ۝۱۰۸

आप ख़ुद इस पर चलें, जो आपको वही किया जाता है, आपके रब की तरफ़ से, अल्लाह के सिवा कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं है, और मुशरिक़ीन की तरफ़ ख़्याल ना करें। और अगर अल्लाह चाहता तो ये शिर्क ना करते, और हमने आपको इनका निगरान नहीं बनाया, और ना आप उन पर मुख़्तार हैं। और उनको बुरा ना कहा करो जिनकी अल्लाह के सिवा ये इबादत करते हैं, क्योंके वो फ़िर अल्लाह को बुरा कहेंगे अपनी जहालत की वजह से हद से आगे निकल कर, उसी तरह हमने हर तरीक़े वालों को उनका अमल मरग़ूब बना रखा है, फ़िर उन सबको अपने रब ही तरफ़ जाना है, सो वो उनको बता देगा जो वो किया करते थे। (6:106-108)

अल्लाह ने हर व्यक्ति की इच्छाओं और योग्यताओं के लिए यह गुंजाइश रखी है कि वह सृष्टि के जनक के बारे में जिज्ञासा करे और इंसानों के साथ उसके सम्बंध का ज्ञान प्राप्त करे। उसने फ़रिशतों की ही तरह इंसान को भी पैदा किया है जो प्राकृतिक रूप से अल्लाह को जानते हैं और केवल उसी की बन्दगी करते हैं, लेकिन इंसान को उसने यह अधिकार दिया है कि वह आज़ादी से अपना काम करे। ताकि आख़िरत में अपने सभी कामों के लिए ख़ुद जवाबदेह हो जो उसने अपनी मर्ज़ी से दुनिया में अंजाम दिए। अल्लाह तआला का पैग़म्बर दुनिया में इस

लिए नहीं आता कि कि अल्लाह ने सत्य की जो अनुभूति उस पर की है उसे मानने पर किसी को मजबूर करे। अल्लाह का फ़ैसला इस बात पर होगा कि कोई व्यक्ति क्या आस्था रखता है और क्या कर्म करता है, और इसी का बदला उसे आख़िरत में मिलेगा।

कोई इंसान अपने किसी ख़ास भौतिक, मनोवैज्ञानिक या मानसिक, या सामाजिक परिवेश के प्रभाव में हो सकता है, या पूर्व की उलझनों का शिकार हो सकता है या भविष्य की मान्यताओं से ग्रस्त हो सकता है, और अपने आस पास के माहौल से प्रभावित हो सकता है। जो इंसान लोगों को अल्लाह और उसके सीधे रस्ते की तरफ़ बुलाए उसे अपने सम्बोधकों पर इन प्रभावों से अवगत होना चाहिए ताकि वह जहाँ तक सम्भव हो उनके प्रतिरोध और असंतोष से बच सके। किसी नई सोच या काम का आग्रह जब तक सूझ बूझ और हिकमत के साथ न किया जाए तो न केवल उसे रद किए जाने की आशंका होती है बल्कि सही रस्ते की तरफ़ बुलाने और बुलाने वाले पर लोग ग़लत तरीक़े से आक्रामक हो सकते हैं। बहतर यह है कि मानने वाले और न मानने वाले दोनों लोग इस तरह की तकरार से बचने पर सहमत हों जिससे इंसानों के आपसी सम्बंध ख़राब होते हैं और भविष्य में आपसी समझ बूझ की सम्भावना समाप्त हो जाती है और कभी कभी ईमान वाले मुसीबत में पड़ जाते हैं। ईमान वालों को अल्लाह का यह निर्देश हमैशा ज़हन में रखना चाहिए कि अजब नहीं कि तुम में और उन लोगों में जिन से तुम्हारी दुशमनी है अल्लाह दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह (इस बात पर) क़ुदरत रखता है और अल्लाह मआफ़ करने वाला महरबान है (60:7)। अल्लाह पर ईमान रखने वालों के अमल में उन लोगों के प्रति जो अल्लाह का इंकार करते हैं और उसके पैग़ाम को झुटलाते हैं अल्लाह की दया, संयम और इंसाफ़ की झलक दिखनी चाहिए। इसी तरह जिन लोगों ने अपनी बुी और बोध से काम लिया और अपने दिल व दिमाग़ की शक्तियों को सच्चाई को मानने के लिए स्तेमाल किया उनके लिए यह ज़रूरी है कि वो उन लोगों के प्रति जो अल्लाह के पैग़ाम को झुटलाते और मुस्तरद करते हैं किसी भी तरह की उत्तेजक बात से बचें और अपमानित करने वाली शैली में उन की बातों का जवाब न दें कि वो भी जवाब में मुसलानों की आस्था पर चोट लगाएं और इस तरह विवाद और फ़साद बढ़े और व्यक्तिगत रंजिशें व रुकावटें बीच में आ जाएं। चूंकि इंसानों के अन्दर कमियों और कोताहियों का होना एक स्वभाविक बात है इस लिए अल्लाह की शिक्षाएं और इन शिक्षाओं पर अमल करने वाले लोग इंसान की इन कमियों और कोताहियों पर नियंत्रण पाने में उनकी मदद करते हैं। अल्बत्ता, ये शिक्षाएं किसी भी हालत में अल्लाह के मार्गदर्शन को छिपाने की अनुमति नहीं देतीं बल्कि इस बात की प्रेरणा देती हैं कि उन्हें लोगों के सामने लाया जाए हिकमत के साथ, अच्छी नसीहत के साथ और बहतरीन तरीक़े पर उनसे वाद विवाद करके। (16:125)

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

तो फ़िर क्या मैं अल्लाह के सिवा दूसरा कोई मुनसिफ़ तलाश करूं जबके उसने तुम्हारी तरफ़ वाज़ेह किताब नाज़िल की है, और अहले किताब ख़ूब जानते हैं के ये किताब जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुई है बरहक़ है, तो तुम शक करने वालों में ना होना। (6:114)

इस आयत में अल्लाह के तमाम पिछले पैग़ामों और अवतरित हुई किताबों का बाद में आने वाले पैग़म्बरों के साथ सम्बंध का ज़िक्र है। यह सम्बंध इन पैग़ामों और किताबों से समझता जा सकता है और जो लोग पहले अवतरित हो चुकी किताबों और उन्हें लाने वाले पैग़म्बरों का अनुसरण करते हैं वो यह बात समझ सकते हैं कि क़ुरआन भी उसी स्रोत से आया है और उसी के अनुसार वे इस क़ुरआन के प्रति अपना रवैया रख सकते हैं। लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमे के पैग़ाम को स्वीकार करने से उनके गुरेज़ के चलते इस बारे में कोई शक पैदा नहीं होना चाहिए। वो स्वयं अपने अन्दर झांक कर सत्य को देख सकते हैं और आख़िरकार अल्लाह तआला उन सभी बातों का फ़ैसला कर देगा जिन में इन दुनिया के अन्दर लोग मतभेद और विवाद करते हैं।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ۚ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ خَوْفًا وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

बिला शुबह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सारे आसमान और ज़मीन छः दिन में पैदा किये, फ़िर अर्श पर क़ायम हुआ, वही रात से दिन को छुपा देता है इस तरह के रात दिन को फ़ौरन पकड़ लेती है, और सूरज, चांद, सितारे उसी ने पैदा किये इस तौर पर के सब उसी के हुक्म के ताबे हैं, याद रहे, अल्लाह ही के लिए है ख़ालिक़ होना और हाकिम होना, अल्लाह ही बड़ी बर्कतों वाला है जो सारे जहानों का रब है। तुम अपने रब ही से दुआ किया करो, अच्छी तरह गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता आहिस्ता, वो वाक़ई हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। और दुनिया में शर व फ़साद ना फ़ैलाया करो उसको दुरूस्त करने के बाद, और अल्लाह ही की बन्दगी किया करो, डरते हुए और उम्मीद करते हुए, बेशक नेक काम करने वालों से अल्लाह की रहमतें बहुत क़रीब हैं। (7:54-56)

क़ुरआन में इस बात का बार बार ज़िक्र आया है कि यह सृष्टि छ दिन में पैदा हुई। दिन से अभिप्राय यहाँ अवधि है क्योंकि योम का मतलब निश्चित रूप से 24 घण्टे वाला दिन ही नहीं है बल्कि इसका मतलब युग या अवधि भी हो सकता है; देखें 22:47; 70:4)। ज़मीन पर चौबीस घण्टे का दिन सूरज के सामने अपनी धुरी पर ज़मीन के घूमने से होता है जबकि यहाँ योम अर्थात दिन का मतलब उन स्थितियों या चरणों से है जो सृष्टि के विक्सित होने से सम्बंध रखते है, उसे किसी चीज़ को बनाने में लगे समय से नहीं लिया जा सकता।

अल्लाह की सृजन शक्ति और जीव जन्तुओं पर उसका शासन मुस्तक़िल रूप से उन निमयों के अन्तर्गत होता है जिन से उसकी जनित सभी चीज़ें बंधी हुई है। क़ुरआन में रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने जाने की जो तसवीर खींची गयी है और हर दोनों स्थितियों के जो नियम बताए गए हैं उन्हें हर इंसान (चाहे मर्द हो या औरत) समझ सकता या समझ सकती है चाहे उसकी बुद्धिमता या ज्ञान का स्तर जो भी हो। सूरज, चांद और सितारे इस बात को साबित करते हैं कि सृष्टि में एक क्रम और व्यवस्था है जो अल्लाह तआला की क़ुदरत, उसकी निगरानी और उसके कण्ट्रोल को ज़ाहिर करती है। केवल वही है जो पैदा करता है और वही है जिसका पूरी सृष्टि और सृष्टि की हर चीज़ पर अधिकार है। लिहाज़ा तमाम प्राणियों के जनक स्वामी और पालनहार से कलाम करने में इंसान को बहुत ही विनम्र होना चाहिए और दिल की गहराइयों से इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि उसके दिल का झुकाव और बन्दगी की भावना किसी दूसरे के लिए हरगिज़ न हो। इंसान के सभी कर्मों में अल्लाह का मार्गदर्शन दिखाई देना चाहिए और इसी लिहाज़ से अपने बस भर उसे अल्लाह की बन्दगी करना चाहिए।

अल्लाह के बन्दे को जीवन के हर क्षेत्र और मामले में अल्लाह के मार्गदर्शन पर समान रूप से चलना चाहिए, ख़ास तौर से वातावरण और सामाजिक व्यवस्था व क्रम को बनाए रखने में ताकि सृष्टि में प्रदूषण फैलाने से बचा रहे और समाज में भृष्टाचार को बढ़ावा देने से बचे। बन्दा या बन्दी अपनी इच्छाओं व उमंगों को पूरा करने के लिए अल्लाह से दुआ करता या करती है और साथ ही साथ अपने दोष और कमी के चलते अपने मक़सद में नाकामी की आशंका रखता/रखती है। अल्लाह मआफ करने वाला है और बहुत ही महरबान है, लेकिन जो बन्दा या बन्दी अल्लाह से गुहार करे उसे अपनी हद तक इस बात का पूरा प्रयास करना चाहिए कि ख़ुद को अध्यात्मिक और व्यवहारिक बुराइयों से पाक करे जो अल्लाह से उसकी गुहार को बे नतीजा करने का कारण बन सकते हैं या बनते हैं।

क्या वो ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को बना ना सकें और वो ख़ुद ही बनाए जाते हों। और वो उनको किसी क़िस्म की मदद भी नहीं दे सकते, और वो

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّ هُمْ يُخْلَقُونَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا

وَّ لَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾ وَ اِنْ
تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ
سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ
صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

ख़ुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। और अगर तुम उनको हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारी पैरवी ना करें, तुम्हारे लिये दोनों बातें बराबर हैं ख़्वाह तुम उनको बुलाओ या तुम ख़ामोश रहो। वाक़ई तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनकी इबादत करते हो वो भी तुम जैसे बन्दे हैं, सो तुम उनको पुकारो, फ़िर उनको चाहिये के वो तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। (7:191-194)

यह सृष्टि सोचने समझने वाले इंसानों को इस बात पर ग़ौर करने की दावत देती है कि लोग आडम्बरों में फंस कर सितारों, मूर्तियों, प्रभावशाली इंसानों, दुनिया से जा चुके नेक लोगों य दूसरी हस्तियों को अंधेपन में अपना ख़ुदा बना लेते हैं, और इस बात को समझने का आग्रह करती है कि यह फर्ज़ी पूज्य हस्तियां अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखतीं और न दूसरों को कोई सहारा दे सकती हैं। इन सब को अल्लाह ने पैदा किया है और ये सब उसके बनाए हुए नियमों के पाबन्द हैं और कोई इंसान चाहे कितना ही शक्तिशाली हो जाए उसकी शक्ति सीमित ही रहती है वह स्वयं अपने जीवन पर अपना कोई अधिकार नहीं रखता और जब उसका जीवन या उसकी ऊर्जा जाती रहती है तो बिल्कुल लाचार हो कर रह जाता/रह जाती है।

وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ
وَ لَا يَنْفَعُهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا
عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ
تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ مَا كَانَ النَّاسُ
اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ
اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ
فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَ اِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ
رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ

और ये लोग अल्लाह के सिवा उनको पूजते हैं जो ना उनको नुक़सान पहुंचा सकते हैं और ना नफ़ा पहुंचा सकते हैं, और ये कहते हैं के ये अल्लाह के पास हमारी सिफ़ारिश करेंगे, आप कह दीजिये के क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ बताते हो जो उनको ना तो आसमानों में और ना ही ज़मीन में मालूम है वो तो पाक और बालातर है उनके शिर्क से। और सब इन्सान एक ही तरीक़ा पर थे, फ़िर उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात तय ना होती तो उनके दरमियान फ़ैसला हो जाता उस चीज़ का जिसमें वा इख़्तिलाफ़ करते हैं। और लोग कहते हैं के उनके रब की तरफ़ से उन पर कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई, तुम कह दो के ग़ैब का इल्म तो अल्लाह ही को है, सो तुम इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ। और जब हम अपनी रहमत का मज़ा लोगों को चखाते हैं उस

مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ۭ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ۭ
اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ
الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ حَتّٰٓى
اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ
بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَاۗءَتْهَا رِيْحٌ
عَاصِفٌ وَّجَاۗءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَىِٕنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ
هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ
اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا
مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

तकलीफ़ के बाद जो उनको पहुंची, तो वो हमारी आयात में हीले करने लगते हैं, आप फ़रमा दीजिये के अल्लाह जल्द उन हीलों की सज़ा देने वाला है, बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे हीले लिख लेते हैं जो तुम करते हो। वो ही तो है जो तुम को जंगल और दरिया में सैर कराता है, यहाँ तक के जब तुम कश्ती में सवार होते हो और कश्तियां पाकीज़ा हवाओं से सवारियों को लेकर चलती हैं और वो ख़ुश होते हैं तो अचानक ज़न्नाटे की हवा आ जाती है, और मौजें हर तरफ़ से उन पर आती हैं और वो ख़्याल करते हैं, अब तो मौजें घेरे में लेती हैं तो वो ख़ालिस एतेक़ाद से अल्लाह ही को पुकारते हैं, और दुआ करते हैं के अगर तू हमको निजात दे तो हम बहुत ममनून होंगे। फ़िर जब अल्लाह तआला उनको निजात दे देता है तो मुल्क में नाहक़ शरारत करने लगते हैं। ऐ लोगों! तुम्हारी शरारतों का वबाल तुम ही को भुगतना होगा, तुम दुनिया की ज़िन्दगी का मुनाफ़ा उठा रहे हो, फ़िर तुमको हमारे ही पास लौट कर आना है, फ़िर हम तुम का बता देंगे जो तुम किया करते थे।(10:18-23)

झूटे ख़ुदा, चाहे वह इंसान का अपना ऩस ही क्यों न हो, स्वयं अपने बल पर किसी को कोई पीड़ा या फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते। इस सच्चाई के मद्देनज़र इन झूटे भगवानों की पूजा करने वाले लोग स्वयं को यह तसल्ली देते हैं कि वो जिन चीज़ों को पूजते हैं वो वास्तव में ख़ुदा तो नहीं हैं लेकिन ख़ुदा के नज़दीा सिफ़ारिश करने वाले हैं। यह कितना बड़ा धोखा है जो वो ख़ुद को, दूसरों को और ख़ुदा को दे रहे हैं। उस ख़ुदा को जो आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ से बाख़बर है।

सृष्टि के जनक के बारे में और ख़ुद अपने भाग्य के बारे में इंसानों के बीच यह विपरीत विचार क्यों पैदा हुए? तमाम इंसानियत एक ज़ात से ही पैदा की गयी है और अल्लाह के सभी पैग़ाम जो विभिन्न युगों में और विभिन्न स्थानों पर आए वो अपने मूल में एक ही हैं, यानि यह कि एक अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के बन्दों के साथ बहतरीन बरताव करो। लेकिन इंसान की स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता और दूसरी कमियां लोगों को गुटों मे बांट देती हैं और उनके विचार व आस्थाएं अलग अलग हो जाती हैं। तमात तरह के लोगों को अल्लाह की तरफ़

से एक के बाद एक आने वाले पैग़ाम ऐसे तथ्य और सिद्धांत देते रहे हैं जो इंसानों को उनके आपसी मतभेदों के बावजूद सोच एवं व्यवहार का समान आधार उपलब्ध कराते हैं और उन्हें इस बात पर आमादा करते हैं कि वे सामूहिक हित में एक दूसरे से सहयोग करते हुए अच्छे कामों में एक दूसरे से मुक़ाबला करें। लेकिन उन्हें ख़ुद अपने फ़ैसलों में आज़ाद रखा गया है कि वो अल्लाह के पैग़ाम पर चाहें तो अमल करें और न चाहें तो न करें ताकि फ़ैसले के दिन हर व्यक्ति अपने उन तमाम कामों के लिए जिन्हें उसने अपने लिए चुना और किया ख़ुद जवाबदेह हो। लोग अल्लाह तआला पर ईमान लाने के लिए शर्त के रूप में अल्लाह से किसी चमत्कार का मुतालबा न करें, क्योंकि यह प्रति और इसके दर्शन उन लोगों के लिए ख़ुद ही अल्लाह की निशानियां हैं जो अपनी इंसानी क्षमताओं और योग्यताओं को जो अल्लाह ने उन्हें दी हैं, काम में लाते हैं। इंसानों को ख़ुद ही अपनी इन्द्रियों और अपने दिमाग़ों को काम में लाना है और ख़ुद ही आज़ादी के साथ अपने लिए फ़ैसला लेना है। लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो अल्लाह के पैग़ाम को मानने के लिए सुबूत के तौर पर उन चीज़ों की मांग करते हैं जो इंसान की पहुंच से बाहर हैं। यह अल्लाह तआला की मंशा के ख़िलाफ़ है कि इस जीवन में इंसान की योग्यताओं और आज़ाद मर्ज़ी से इंसान के कर्मों की परीक्षा का फल ज़ाहिर कर दिया जाए। अल्लाह तआला ने इस जीवन के लिए जो नियम बना दिए हैं वो कभी नहीं टूटेंगे, इन नियमों को तोड़ने के लिए इंसान अपनी जिज्ञासा में या तकरार व कुतर्क करने के लिए भले ही कैसी कैसी मांगें करें।

ये आयतें उस इंसानी कमज़ोरी की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं जो दैनिक जीवन में बार बार सामने आती है। अपनी स्वभाविक जल्दबाज़ी और अदूरदर्शिता पर क़ाबू पाने के लिए और इस जीवन में सब कुछ पा लेने की इच्छा से पैदा होने वाली मन की बेचैनी का मुक़ाबला करने और उसके बजाए आख़िरत में सदा का सुख प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना है। इंसान के सभी बौद्धिक और भौतिक विकास के बावजूद जीवन के उतार चढ़ाव में इंसान की आत्मा समुद्र में हिचकोले खाती नाव की तरह कपकपाती रहती हे। समुद्र में जब हवा अनुकूल होती है तो नाव पर सवार लोग मगन होते हैं और स्वयं को सुरक्षित समझते रहते हैं और कभी कभी ऐसी स्थिति में उनके अन्दर गर्व की भावना भी जाग उठती है। लेकिन जब तूफ़ान आ जाता है और नाव के यात्री को ख़तरा दिखाई देने लगता है, और अल्लाह के सिवा कोई मदद के लिए दिखाई नहीं देता तो वह अल्लाह से विनती करने लगता/लगती है कि अगर वह बच गया/गयी तो अल्लाह का आज्ञापान करेगा/करीगी। लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि जब ख़तरा टल जाता है तो अल्लाह से किए हुए वायदे को वह भूल जाता/जाती है। जीवन के उतार चढ़ाव इंसान को यह समझने का अवसर देते हैं कि न तो वह ख़ुद और न उसके वो झूटे भगवान जिनकी वह उपासना करता/करती है इस दुनिया में अपनी कोई शक्ति या आज़ाद

हैसियत रखते हैं। इंसान जब यह देखता है कि वह मुसीबत में फंस चुका है और अल्लाह के सिवा कोई और उसकी मदद को नहीं आ सकता तो वह मदद और सहारे के लिए उसी सर्वशक्तिमान की ज़रूरत को महसूस करता/करती है। लेकिन जैसे ही उसे राहत मिल जाती है और वह मुसीबत से निकल आता/आती है तो वह न केवल अल्लाह और उसकी सहायता को भुला बैठता/बैठती है बल्कि ख़ुद भी सत्य और सदाचारिता के ख़िलाफ़ काम करने लगता/लगती है और दूसरों को भी यही प्रेरणा देता/देती है (देखें 11:19; 17:83; 41:49; 89:15-16)। ऐसे कम नज़र लोग यह नहीं समझ पाते कि उनके बुरे रवैये के विनाशकारी नतीजे स्वयं उनके ही सामने आएंगे, जो फ़ैसले के दिन उनके ख़िलाफ़ सुबूत बनेंगे जब उन्हें बदले में वह कुछ मिलेगा जिस के वो पात्र होंगे। घमण्ड और अदूरदर्शिता इंसान की अन्तःष्टि को सीमित कर देते हैं और इंसान यह नहीं समझता कि दुनिया का यह जीवन अपने तमाम आनन्दों और राहतों के बावजूद बहुत थोड़ा है।

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَا ذَا بَعْدَ
الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾
كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ قُلْ هَلْ
مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ
شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ
اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى
الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ
اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَ مَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا
ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

तो ये है अल्लाह तुम्हारा रब बरहक़, फ़िर हक़ के ज़ाहिर होने के बाद क्या रह गया सिवाये गुमराही के, तो तुम कहाँ फ़िरे जा रहे हो। इसी तरह आपके रब की ये बात तमाम नादानों के हक़ में साबित हो चुकी के ये ईमान नहीं लायेंगे। कहा क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है जो मख़लूक़ात को पहली बार पैदा कर दे, और फ़िर दोबारा भी पैदा कर दे, कह दो पहली बार अल्लाह पैदा करता है, फ़िर वहीं दोबारा भी पैदा करेगा, फ़िर तुम किस तरफ़ जा रहे हो। आप उनसे दरयाफ़्त कीजिये, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है जो हक़ का रास्ता दिखाये, कह दीजिये के बस अल्लाह ही हक़ का रास्ता दिखाता है क्या फ़िर जो शख़्स हक़ का रास्ता दिखाये वो इस क़ाबिल के उसकी पैरवी की जाये या वो जो अपने आप हिदायत ना पाये जब तक उसको हिदायत ना दी जाये, तो तुम को क्या हो गया, तुम कैसा फ़ैसला करते हो। और उनमें अक्सर बेअमल ख़्यालात की पैरवी करते हैं, बेशक बेअसल ख़्यालात हक़ बात में कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते, बिलाशुबह अल्लाह ख़ूब जानता है।

(10:32-36)

सृष्टि और उसमें चल रही व्यवस्था को देख कर उसके जनक (अल्लाह) के बारे में ग़ौर करना जागरूक होने और सदबुद्धि रखने का संकेत है, और इस तार्किक बात पर ध्यान न देने का नतीजा केवल गुमराही (पथभृष्ट हो जाना) है। जो लोग सीधे तरह से सोचने और अमल करने से बचते हैं और बुद्धि व सूझबूझ की बात को अनदेखा करते हैं वे अल्लाह की तरफ़ से इंसान को दी गयी बुद्धि का अवहेलना करते हैं, और इसीलिए अपनी उन शक्तियों को बेकार रखने के दोषी ठहराए जाएंगे और उसकी सज़ा झेलेंगे। जब अल्लाह तआला का कलाम और प्रति में सक्रिय उसके नियम अमल में आते हैं तो उसे महसूस करने, उन पर ग़ौर करने और जीवन व भौतिक जगत के बारे में उनसे नतीजे निकालने में ऐसे लोगों की शक्तियां से नाकाम रहती हैं, ख़ास तौर से स्वयं इंसान के वजूद और दुनिया व आख़रित (लोक परलोक) में उसके भाग्य को समझने में असफ़ल रहती है। विचार एवं कर्म में इस तरह के बिखराव से अल्लाह के बारे में सही आस्था नहीं बन सकती, क्योंकि इसके लिए इंसान की भौतिक, मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक शक्तियों को सही ढंग से स्तेमाल करना ज़रूरी है। झूटे भगवान चाहे वो स्वयं इंसानों में से हों या कोई और, पैदा करने की शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते और जो कुछ पैदा किया गया है उसे पूरी तरह अपने नियंत्रण में नहीं ले सकते। वो इंसानों सहित किसी भी जीव को कोई रास्ता नहीं दिखा सकते न तो उनकी स्वभाविक प्रवृत्ति के माध्यम से और न उनके दिमाग़ के द्वारा।

क़ुरआन में इस सामान्य सिद्धांत पर ज़ोर दिया गया है कि गुमान और अटकल से सच्चाई तक नहीं पहुंचा जा सकता, इस मक़सद को प्राप्त करने के लिए इंसान को भैतिक अनुभव या तर्कशक्ति से ही काम लेना होगा। चुनांचि क़ुरआन ने बार बार उन लोगों को चुनौती दी है और उनकी निन्दा की है जो हर उस चीज़ को जिस का ज्ञान उन्हें पहले से नहीं है झुटला देते हैं (10:39)। किसी बात को रद करने के लिए कोई तथ्यात्मक सुबूत होने को क़ुरआन ज़रूरी क़रार देता है और निम्न आयतों में इसे दोहराया गया है:

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ شُرَكَآءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

अच्छी तरह सुन लो जो चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं अल्लाह ही की हैं, और जो लोग अल्लाह के सिवा अपने बनाये हुये शरीकों को पुकारते हैं, किसी दूसरे की पैरवी नहीं करते, सिर्फ़ बे सनद ख़्याल की पैरवी करते हैं सिर्फ़ क़यासी घोड़े दौड़ाते हैं। (10:66)

قَالُوا ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۖ هُوَ ٱلْغَنِىُّ ۖ لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى

वो कहते हैं के अल्लाह ने बेटा बना लिया है, उसकी ज़ात इससे पाक है, वो किसी का मोहताज नहीं, जो

الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

आसमानों और ज़मीन में है वो सबका सब उसी का है, तुम्हारे पास इस क़ौले बातिल की सनद नहीं है क्या तुम अल्लाह की निसबत ऐसी बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते। (10:68)

अल्लाह के साथ सन्तान को जोड़ने के खण्डन में क़ुरआन में कई जगह तर्क दिए गए हैं और अरब के बहुदेववादियों की इस मान्यता को नकारा गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियां हैं (16:57; 17:40; 37:149-153; 43:16; 52:39), इसी तरह ईसाइयों की, जो अरब के उत्तर, पूर्व और दक्षिण में रहते थे, मान्यता यह थी कि ईसा मसीह अल्लाह के बेटे हैं (2:116, 6:101; 10:68; 17:111; 18:4-5; 19:35; 88:93; 21:26; 23:91; 25:2; 72:3; 112:3)।

विशुद्ध रूप से केवल एक अल्लाह को मानने का इस्लामी नज़रिया और मूल धारणा यह है कि उस जैसी कोई चीज़ नहीं है (42:11), और कोई उसका समतुल्य नहीं है (112:4), अल्लाह तआला इस बात से बिल्कुल पाक (बरी) है कि उसकी कोई सन्तान हो।

وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَ مَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَ النُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

और अगर आपका रब चाहता तो वो सब लोग ईमान ले आते जो ज़मीन में हैं, क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं के वो ईमान ले आयें। हालांके ये किसी की ताक़त नहीं है के बग़ैर हुक्मे ख़ुदा ईमान ले आए, और वो ही नजासत बेअक़्ल लोगों पर डालता है। कह दीजिये ज़रा नज़र उठा कर देखो के आसमानों और ज़मीन में क्या क्या चीज़ें हैं, और जो लोग ईमान नहीं लाये उनको अल्लाह से डराना और अल्लाह की आयात कोई फ़ायदा नहीं देतीं। (10:99-101)

अगर अल्लाह की मंशा यह न होती कि इंसानों को मर्ज़ी व पसन्द की आज़ादी दी जाए तो वह अपनी क़ुदरत से तमाम इंसानों को इस के लिए बाध्य कर देता कि वो एक अल्लाह पर ईमान लाएं, लेकिन इस तरह किसी आस्था पर मजबूर कर देने से उन्हें अपनी विभिन्नताओं से फ़ायदा उठाने का अवसर नहीं मिलता और न अपने व्यक्तित्व और अपने समाजों को आगे बढ़ाने का अवसर उन्हें मिलता। आस्था या अक़ीदे की आज़ादी इंसान की पसन्द की आज़ादी के साथ साथ है और जो लोग ईमान ले आते हैं उन्हें दूसरों को अपना अक़ीदा मानने के लिए मजबूर करने की उक्साहट से भी बचना चाहिए। इंसानी प्रतिष्ठा और इंसान की अक़ल को

सुरक्षा देने वाला न्याय का आसमानी सिद्धांत क़ुरआन की निम्न आयतों में भी और दूसरे स्थानों पर भी ज़ोर देकर बयान किया गया है, जैसेः दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं है (11:28), और इसी लिए हर एक का फ़ैसला उसकी अपनी मेरिट की बुनियाद पर होगा।

अक़ीदा या आस्था इंसानी ज़हन और इरादे की आज़ादी को काम में लाकर पैदा होना चाहिए। इन चीज़ों की मौजूदगी और उनका स्तेमाल अल्लाह की मंशा व मंसूबे का हिस्सा है। क़ुरआन के शब्द षबि इज्निल्लाहष का मतलब ही यह है कि अल्लाह ने इंसान को इतनी क्षमताएं और योग्यताएं देदी हैं जो उसे आज़ादी के साथ ग़ौर करने और फैसला लेने का अवसर देती हैं। इंसान को इन माध्यमों को और अपनी क्षमताओं को स्तेमाल में लाना चाहिए और उन्हें इतनी तरक़्क़ी देना चाहिए कि वो सृष्टि का अवलोकन करें और समाज में इंसानों के अलग अलग रवैये को देखें, पूर्व का और वर्तमान का जायज़ा लें। अगर ऐसा नहीं किया जाए और इन माध्यमों की हम अनदेखी करें तो ये योग्यताएं बेकार हो जाएंगी और जन्तुओं में, ख़ास तौर से इंसान की अपनी हस्ती में, इंसानी समाज में, इंसानी इतिहास में अल्लाह की जो निशानियां है या जो कुछ पैग़म्बर पर अल्लाह की तरफ़ से उतरा हो उनकी तरफ़ से इंसान अन्धा और बहरा बना रहेगा और उसका दिमाग़ भी सोचे समझने की योग्यता को खो बैठेगा।

وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

और हमने दोज़ख़ के लिये जिन्नोइन्स में से बहुत से ऐसे लोग पैदा किये हैं जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे समझते नहीं और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे देखते नहीं, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे सुनते नहीं, ये लोग चौपायों की तरह हैं बल्के ये ज्यादा गुमराह हैं, ये लोग ग़फ़्लत में पड़े हैं। (7:179)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَ اَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَ لَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

आप फ़रमा दें के ऐ लोगों! अगर तुम मेरे दीन में शक करते हो, तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, लेकिन हाँ मैं उस माबूद की इबादत करता हूँ जो तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है, और मुझे हुक्म है के मैं ईमान लाने वालों में रहूँ। और ये के और सब तरीक़ों से अलग होकर अपने आपको इस दीन की तरफ़ मुतावज्जेह रखना और शिर्क करने वालों में ना होना। और ये के तुम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत मत करो, जो तुमको ना

مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ
فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَإِنْ
يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ إِلَّا
هُوَ ۚ وَإِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ
لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ ؕ وَ
اتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى
يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

कोई नफ़ा दे सके और ना कोई नुक़सान पहुंचा सके, फ़िर अगर आपने ऐसा किया तो आप भी ज़ालिमों में से होंगे। और अगर अल्लाह तुमको किसी तकलीफ़ में मुब्तला कर दे, तो फ़िर उसको दूर करने वाला अल्लाह के सिवा और कोई नहीं, और अगर वो तुम को कोई राहत बख़्शना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, वो अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों पर से जिसे चाहे अता करे और वो तो बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम वाला है। आप फ़रमा दीजिये, ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से "दीने" हक़ पहुंच चुका है, अब जो सीधे रास्ते पर चलेगा तो वो अपने फायदे के लिये चलेगा, और जो शख़्स गुमराह रहेगा तो उसका गुमराह रहना भी उसी के ऊपर पड़ेगा, और मैं तुम पर मुख़्तार नहीं हूँ। और आप उसकी पैरवी किया कीजिये जो आप पर वही किया जाए, और (उनकी तकालीफ़ पर) सब्र कीजिये जब तक अल्लाह फ़ैसला कर दे और वो बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (10:104-109)

अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन पर अल्लाह की तरफ़ से लगातार वह्यि उतरती रही के ज़हन में अपने पैग़ाम को लेकर कोई शक नहीं था और उन्होंने अपना ईमान और अक़ीदा तमाम लोगों के सामने साफ़ साफ़ और लगातार बयान किया। उन्होंने हर एक को यह बताया और जताया कि वह केवल एक अल्लाह की इबादत करते हैं जिसकी क़ुदरत को हर जानदार उस समय महसूस कर लेता है जब वह मृत्यू को गले लगाता है। पैग़म्बर पर जो पैग़ाम उतरता है और जिसका वह प्रचार व प्रसार करते हैं वह सृष्टि के बारे में और इंसानी जीवन व मरण के बारे में गम्भीरता पूर्वक विचार की दावत देता है। अल्लाह का पैग़ाम न केवल व्यक्ति की शक्ति व योग्यताओं को बढ़ाता है बल्कि वह उसे अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं और क्षमताओ को समुदाय और समाज में स्तेमाल करने के लिए भी राह दिखाता है। इसलिए उसे ईमान वालों में शामिल होकर और एक मोमिन बन कर रहना चाहिए। अल्लाह तआला भलाई और बुराई को, सुख और दुख को इस जीवन में एक दूसरे के आगे पीछे आते जाते रहने का मौक़ा देता है ताकि इंसान को दोनों हालतों में परखा जाए और हर व्यक्ति का पूरा पूरा इम्तेहान हो। यह अल्लाह की दयाशीलता के ख़िलाफ़ नहीं है कि बुराई, नाइंसाफ़ी

और दुख आदि को दुनिया के इस जीवन में बनाए रखता है क्योंकि एक वास्तविक और अनन्त जीवन तो आख़रित में ही होगा जहाँ सभी लोगों को पूरा पूरा इंसाफ़ और पूरा पूरा बदला मिलेगा।

अल्लाह पर ईमान बन्दे या बन्दी को कामयाबी या नाकामी की स्थिति में साहस देता है और कठिन स्थितियों में निराश और हताश होने से बचाता है। अगर ईमान वाले को कोई बुराई पहुंचती है तो वह सब्र (संयम) करता/करती है क्योंकि वह समझता या समझती है कि यह दुनिया ही सब कुछ नहीं है बल्कि इसके बाद एक अनन्त जीवन है जहाँ पूरा न्याय होगा। और बन्दा या बन्दी को कोई भलाई हासिल होती है तो उसे यह यक़ीन होता है कि यह अल्लाह की तरफ़ से है जिसके बनाए गए नियमों के तहत उन लोगों को बदला मिलता है जो मेहनत से और अच्छे ढंग से काम करते हैं, वह बन्दा/बन्दी उस हस्ती की शुक्रगुजार (आभारी) होता/होती है जिसने उसे कामयाबी के साधन उपलब्ध कराए। इस तरह एक अल्लाह में विश्वास रखने वाला/वाली अपने जीवन में आने वाले हर बदलाव और हर हाल में संतुलित रहता/रहती है और अपने ऊपर नियंत्रण रखता/रखती है, जैसा कि रसूल सल्ल० की एक हदीस से यह बात मालूम होती है जो कि मुस्लिम, इब्ने हंबल और इब्ने माजा ने बयान की है। एक अल्लाह पर ईमान के गहरे प्रभाव और निहितार्थ व्यक्ति के व्यक्तित्व पर ज़ाहिर होते हैं जिससे स्वार्थीपन और अदूरदर्शिता दब जाती है। यह हर इंसान की ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी आज़ाद मर्ज़ी से फैसले ले और अपने चरित्र की हिफ़ाज़त करे या उसे नष्ट कर दे और सामाजिक एकता को बनाए या बिगाड़े। अलबत्ता, जो लोग इंसान के अन्दर संतुलन पैदा करने वाले अल्लाह के पैग़ाम को पेश करते हैं उन्हें लोगों से केवल यही अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वो तार्किक और बौद्धिक रवेया ही अपनाएंगे और अक़्ल की बात को स्वीकार कर लेंगे। उन्हें संयम और सहनशीलता से काम लेना होगा और उम्मीद कभी नहीं छोड़नी होगी, और आख़िरकार अल्लाह को ही यह फैसला करना है कि क्या सही है और क्या ग़लत।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ
خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا
لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियों! क्या जुदा जुदा आक़ा अच्छे हैं, या एक अल्लाह जो सबसे ज़बरदस्त है, वो अच्छा है? जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो वो नाम ही नाम है, जो तुमको और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं, अल्लाह ने उसकी कोई सनद नहीं दी, सुन लो! के अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं है, उसकी हुक्म है के उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत मत करो, यही सीधा (और मज़बूत) दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (12:39-40)

यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के उस उपदेश का एक हिस्सा है जो उन्होंने जेल में अपने साथियों को दिया था जब उन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से जेल में डाल दिया गया था। यह बात उन्होंने अपने साथियों से एक ऐसे आदमी की हैसियत से नहीं कही थी जिसे अल्लाह ने बहुत ज्ञान दिया हो और सही फ़ैसला करने की सूझबूझ दी हो (12:22) बल्कि जेल के साथी की हैसियत से कही, और यह एक ऐसी बात है जो उन सब के बीच समान आधार को रेखांकित करती थी। यह एक कार्यशैली है जो लोगों को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने वाले हर व्यक्ति के लिए एक मिसाल है और अपनाने वाली है। इस तरह से बात शुरू करने के बाद तौहीद (खुदा के एक होने) की आस्था के तार्किक और बौद्धिक होने पर और शिर्क (अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करने) के अतार्किक और बौद्धिक हीन होने पर छोटी सी लेकिन बहुत अर्थपूर्ण कही गयी। क्या एक अक़्ल रखने वाला इंसान वास्तव में यह सोच सकता है कि अनेक और एक दूसरे के विपरीत भगवानों में विश्वास रखना एक अकेले ख़ुदा में यक़ीन रखने से ज्यादा समझदारी की बात है। अल्लाह के एक होने का अक़ीदा एक अक़्ल वाली बात है जिसमें अल्लाह के सर्वशक्तिमान होने और सभी शक्तियों का मालिक होने की आस्था भी शामिल है और सृष्टि, जीवन व सभी जीवों में मौजूद क्रमवार व्यवस्था भी इस पर गवाह है (21:22; 23:91)।

जब लोग दूसरे भगवानों की बात करते हैं तो जो नाम वो लेते हैं उनकी कोई हक़ीक़त नहीं सिवाए इसके कि ये ख़ुद उनके या उनके पूर्वजों के घड़े हुए नाम हैं। केवल अल्लाह (सर्वशक्तिमान एक ईशवर) ही सत्य है और वही है जिसके पास शक्ति, ज्ञान और यह बताने का अधिकार है कि इस मामले में सही क्या है, और आख़री फ़ैसला उसी को करना है। हज़रत यूसुफ़ ऐक ऐसे ईमान वाले बन्दे का नमूना हैं जो इस बात को कहने का कोई मौक़ा नहीं छोड़ते कि जिस चीज़ पर उनका ईमान है वही सच है, यहाँ तक कि जेल में भी वह इस बात को कहने से नहीं चूकते और उन लोगों के सामने कहने से नहीं हिचकते जो आक्रामक हो सकते थे, लेकिन यह बात उन्होंने तर्क के साथ और प्रभावी तरीक़े से कही।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

आप फ़रमा दीजिये के ये मेरा रास्ता है, मैं अपने अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूँ, इस तौर पर के मैं दलील पर क़ायम हूँ, और मेरे ताबेईन भी, और अल्लाह पाक है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। (12:108)

अल्लाह की तरफ़ से पहले आ चुके सभी पैग़ामों की तरह इस्लाम भी अल्लाह के एक होने पर ज़ोर देता है जो इस पैग़ाम का केन्द्रीय विषय और मूल बिन्दु है और जो किसी भी सोच

और सही आचरण के लिए आवश्यक आधार है। अल्लाह तआला का बोध (अल्लाह को पहचानने की चेतना) इंसान को अपनी विभिन्न क्षमताओं से प्राप्त हो सकता है। इंसान की पहचान शक्ति, अक़्ल से अंदाज़ा लगाना या इंसान का अन्तःज्ञान और अध्यात्मिक मार्गदर्शन की योग्यता उसे अल्लाह तआला का बोध करा सकती है। अल्लाह के पैग़म्बर और जो लोग उन पर सच्चे मने से ईमान लाते हैं वो हर इंसान को एक व्यक्ति के रूप में और इंसानी समाज को सामूहिक रूप से इस सच्चाई का बोध प्राप्त करने की तरफ़ बुलाते हैं, और इसके लिए अपनी सभी प्रतिभाओं को काम में लाते हैं ताकि इंसानी व्यक्तित्व का कोई भी हिस्सा या सृष्टि की सच्चाई का कोई भी तत्व अनदेखा न रहे।

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ
اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ
قَوْمٍ هَادٍ ۧ﴿۷﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ
اُنْثٰى وَ مَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَ مَا تَزْدَادُ ؕ
وَ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾
سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَ مَنْ
جَهَرَ بِهٖ وَ مَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَ
سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ
مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ
حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ اِذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَ مَا
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾

और ये काफ़िर कहते हैं, इस रसूल पर इसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई (सो ऐ नबी) के आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं और हर एक क़ौम के लिये रहनुमा हुआ करता है। अल्लाह ही जानता है के किस औरत के पेट में क्या है, और पेट के सुकड़ने और बढ़ने को भी ख़ूब जानता है और हर चीज़ का उसके हाँ एक अन्दाज़ा मुक़र्रर है। वही ज़ाहिरो पोशीदा चीज़ों को जानता है, अज़मत वाला और आली मर्तबा वाला है। बराबर है के तुम में से जो चुपके से बात करे और जो पुकार कर रहे, और रात को कहीं छुप जाये और जो दिन में चले फ़िरे। हर शख़्स के लिये फ़रिश्ते हैं जो बदलते रहते हैं कुछ उसके आगे और कुछ पीछे के वो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं वाक़ई अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वो ख़ुद अपनी हालत को ना बदले, और जब अल्लाह किसी क़ौम पर मुसीबत डालना चाहे तो उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा कोई उनका मददगार नहीं रहता। (13:7-11)

यह सृष्टि और यह जीवन सृजन (पैदा होने) की ऐसी निशानियों और एक ऐसी संरचना क्रम से भरा हुआ है जो एक सर्वशक्तिमान ईशवर की तरफ़ इशारा करती हैं। अब अगर कुछ लोग यह चुनौती दें कि वो अल्लाह के संदेश को तभी स्वीकार करेंगे जब उसके सुबूत में कुछ चमत्कार उन्हें दिखाए जाएं तो यह सुन कर संदेश्टा को दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि उनका

काम दूसरे सभी पैग़म्बरों की तरह लोगों को केवल अल्लाह के पैग़ाम की तरफ़ बुलाना और उन्हें चेताना है। उनके मार्गदर्शन को स्वीकार करना या उसे रद कर देना सुनने वालों की अपनी ज़िम्मेदारी है और यह उनके ही ऊपर है कि वो अपनी आज़ाद मर्ज़ी से अपने लिए क्या पसन्द करते हैं।

फिर ये आयतें अल्लाह के ज्ञान की तरफ़ इशारा करती हैं। गर्भाश्य में भ्रूण का बनना और पलना और फिर उसका जन्म ऐसे चरण हैं जिनमें भ्रूण के विभिन्न अंग और उनकी शक्तियां अपना काम करती हैं और उस बच्चे के भावी व्यक्तित्व का विकास होता है जो सृजन की एक लम्बी प्रक्रिया से गुज़र कर दुनिया में आता और अपनी गतिविधियां अंजाम देता है। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया का और इन सारे चरणों का पेशगी (अग्रिम) ज्ञान केवल अल्लाह को ही होता है जो अपने हर जीव जन्तु के लिए नियम और व्यवस्था बनाता है, ऐसे नियम और ऐसी व्यवस्था जो पूरी तरह सटीक हिसाब किताब के साथ आपस में एक दूसरे से जुड़े समन्वित होते हैं। वह उन तमाम परिस्थितियों और मामलों से वाक़िफ़ (अवगत) है जो इंसान सहित किसी भी जीव के ज्ञान में नहीं आ सकते, और वह उन तमाम बातों से भी वाक़िफ़ है जो इंसान छुपाकर या ज़ाहिर में करते हैं। हर इंसान के साथ फ़रिशतों के रूप में निगरानी करने वाले लगे हुए हैं जो अल्लाह के हुक्म से इंसान की हिफ़ाज़त करते हैं। इसके अलावा कुछ संसारिक साध ान होते हैं जिन्हें इंसान ख़ुद अपनी सहायता और सहारे के लिए स्तेमाल करता है और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उनकी मदद लेता है, इस बात से अलग कि अल्लाह की मंशा और शिक्षा क्या है। लेकिन अल्लाह की दया और पा की कोई हद नहीं है अलबत्ता यह इंसान की अपनी ज़िम्मेदारी है कि वह उसके अहसानों (उपकारों) से फ़ायदा उठाए और उसका ध ान्यवाद करे। इंसान अगर स्वयं जान बूझ कर अपने विनाश का रास्ता चुने तो अल्लाह की तरफ़ से नियुक्त निगरानी करने वाले फ़रिशते उसे ऐसा करने से रोकते नहीं हैं।

क़ुरआन इंसानों की की आँखें खोलता है कि वो इंसान के अन्दर आने वाले बदलावों के सरल लेकिन महत्वपूर्ण क़ानून को देखें, वह बदलाव जो हर व्यक्ति के अन्दर शरीरिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक व नैतिक रूप से आता है और सामूहिक रूप से इंसानी समाजों में आता हैः अल्लाह किसी समुदाय के हालात को नहीं बदलता जब तक वे ख़ुद अपने अन्दर बदलाव न लाएं (13:11, और देखें 8:53)। अच्छे या बुरे हालात का दारोमदार केवल अल्लाह के फ़ैसले पर ही नहीं है बल्कि यह उन कामों का नतीजा होता है जो इंसान ख़ुद करते हैं और अपने भौतिक व नैतिक परिस्थितियों में जो बदलाव वो ख़ुद लाते हैं। मुहम्मद असद के शब्दों में यह ष्इल्लत व मालूलष (कारण व नतीजा) के क़ानून (अल्लाह की सुन्नत) का अभिदर्शन है जो व्यक्तियों और समूहों दोनों के ऊपर लागू होता है और सभ्यताओं के उत्थान व पतन को लोगों की नैतिक गुणों पर निर्भर करता है (आयत 3:11 की व्याख्या में नोट नम्बर

26)। अगर लोग अपनी भौतिक व नैतिक स्थिति को जान बूझ कर स्वयं ही बुराई की तरफ़ ले जाते हैं, जो कि इंसान की अक़्ल और सूझबूझ के विपरीत है, तो वो अपने घातक कामों का नतीजा झेलेंगे और उन्हें ख़ुद अपने हाथों अपनी तबाही से कोई नहीं बचा सकता कि यह सामाजिक बदलाव के लिए अल्लाह के बनाए हुए नियम हैं, जो उतने ही स्थिर और निरन्तर हैं जितने वो नियम जो रात को दिन में और दिन को रात में बदलते हैं (3:26-27)

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلِ
اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ
لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا ؕ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ۙ اَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ اَمْ
جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾

फ़रमा दीजिये! के आसमानों और ज़मीन का रब कौन है, आप कह दीजिये के अल्लाह है, आप कहिये के क्या फ़िर तुमने अल्लाह को छोड़ कर उनको कारसाज़ बनाया जो ख़ुद अपने नफ़ा व नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते (फ़िर ये भी) पूछा के क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हैं या अंधेरा और उजाला बराबर हैं, या क्या उन लोगों ने अल्लाह का शरीक बनाया ऐसों को जिन्होंने अल्लाह की सी कोई मख़लूक़ात पैदा की है फ़िर उनको एक जैसा मालूम हुआ पैदा करना, कह दो अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही यक्ता है ग़ालिब है। (13:16)

यह आयत भी अल्लाह के एक होने पर ज़ोर देती है और उसकी सृजन शक्ति की तरफ़ ध्यान दिलाती हे। इसमें यह जताया गया है कि लोग अल्लाह के साथ जिन दूसरे भगवानों को शरीक करते हैं उन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया, इसलिए गम्भीरता के साथ सोचने व ग़ौर करने वाले किसी व्यक्ति को इसमें कोई शक नहीं होना चाहिए कि केवल अल्लाह ही पैदा करने की शक्ति रखता है। मुहम्मद असद के शब्दों में "यह पैदा करना ऐसा है कि किसी ऐसी चीज़ को अस्तित्व में लाना जो पूरी तरह या आंशिक रूप से पहले से मौजूद ही न हो"। यह केवल अल्लाह ही है कि जब किसी काम का इरादा करता है तो कहता है कि "हो जा तो वह हो जाती है" (12:117, तथा 3:47,59; 16:40; 19:35; 36:82; 40:68)।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ
بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ
الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَ حُسْنُ مَاٰبٍ ﴿۲۹﴾

जो ईमान ले आए हैं और जिन के दिल अल्लाह की याद से सुकून पाते हैं, सुन लो के अल्लाह की याद से दिलों को सुकून मिलता है। जो ईमान लाये और नेक अमल किये उनके लिये ख़ुशहाली और अच्छा ठिकाना है। (13:28-29)

अल्लाह की तख़लीक़ (रचना) में उसकी निशानियां केवल ज़ाहिर रूप से ही हर तरफ़ बिखरी हुई नहीं हैं बल्कि इंसान के अपने वजूद में भी मौजूद हैं जैसे कि इंसान का दिमाग़ और दिल और उनके बढ़ने की प्रक्रिया भी अल्लाह की क़ुदरत की एक निशानी है। समृद्धि (धनी होना) असिल में शान्ति और संतोष की हालत का और शरीरिक, बौद्धिक और नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का नाम है। एक अल्लाह पर ईमान व्यक्ति को जीवन के उतार चढ़ाव का सामना करने में उसके अन्दर से संतुलन और स्थिरता का भाव दिलाता है और समाज में समानता व सामूहिकता का माध्यम बनता है। जीवन में इस संघर्ष से गुज़रने के बाद व्यक्ति को आख़रित के अनन्त जीवन में और .ज्यादा आनन्द और पूरा इतमिनान प्राप्त होगा और राहत व आराम के हसीन घर में उसकी सभी आकांक्षाएं पूरी होंगी। जैसा कि पिछली आयत (13:11) में बयान हुआ, इंसान के अन्दर कोई भी बदलाव चाहे वह अच्छा हो या बुरा, उसके अन्दर से ही आता है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾
وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا
يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْوَاتٌ
غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ
يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ
وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

और अल्लाह (तो ख़ूब) जानता है जो तुम छुप कर करते हो और जो एलानिया करते हो। और ये जिनको अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वो कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते, बल्के वो खुद मख़्लूक़ हैं। वो मुर्दा हैं ज़िन्दा नहीं, और नहीं जानते के मुर्दे कब उठाये जायेंगे। तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है तो जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते, उनके दिल उसका इन्कार कर रहे हैं, और वो तकब्बुर करते हैं। ज़रूरी बात है के अल्लाह जो कुछ ये करते हैं, ख़्वाह ज़ाहिर या पोशीदा सब जानता है, बेशक अल्लाह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (16:19-23)

अल्लाह ही असिल मालिक है और खुली व छुपी हर चीज़ की जानकारे रखने वाला है। हर चीज़ और हर जान उसी ने पैदा की है और ये सभी चीज़ें उसका गुणगान करती हैं। अगर इंसान ख़ुद को सितारों के आगे झुकाते हैं, या प्रति के अन्य दर्शनों और शक्ति के आगे नत मस्तक होते हैं या किसी महान इंसान को चाहे वह पैग़म्बर हो या बुज़ुर्ग हस्ती हो, को अपना पूजनीय बनाते हैं तो वह ख़ुद को मिली हुई अक़ल और रूहानी ख़ूबी और अपने विशेष गुणों को ख़ुद ही ख़त्म कर देते हैं, और अपने अन्दर के इंसान को वह मार डालते हैं, फिर वो एक ज़िन्दा लाश से .ज्यादा कुछ नहीं होते। वो अपने वजूद को केवल पाश्विक स्तर तक ही सीमित कर लेते हैं और अपने दृष्टिकोण को केवल इस जीवन तक ही सीमित करके अपनी ऊर्जा को नष्ट कर देते हैं। जो लोग अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर ईमान नहीं लाना चाहते उनमें

अधिकतर ऐसे हैं जो ख़ुद को बड़ा समझने के कारण ऐसा नहीं करते और ख़ुद को किसी के सामने जवाबदेह नहीं मानना चाहते। हर कोई अपने दिल व दिमाग़ में जो कुछ छुपाता है और जो कुछ वह लोगों पर ज़ाहिर करता है, और वह वास्तविक कारण भी जो सत्य को समझने के बावजूद उसका इंकार करने के पीछे छुपा होता है, सब कुछ पूरी तरह अल्लाह की जानकारी में है। जो लोग स्वार्थपूर्ति और घमण्ड की वजह से अल्लाह की हिदायत का इंकार करते हैं, वो अल्लाह की रहमत और मदद से महरूम रहेंगे क्योंकि अल्लाह घमण्डी और अहंकारी लोगों को पसन्द नहीं करता। ऐसे लोग जब इस बात को समझ लेंगे कि इस जीवन में उनकी सभी इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं और वो कभी आत्मनिर्भर नहीं हो सकते, और यह कि आख़िरत के जीवन में इससे कहीं अधिक है तो उस समय वो अपने नुक़सान और घाटे को देख लेंगे।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝

और अगर अल्लाह लोगों को उनके आमाल के सबब पकड़ लेता तो रूये ज़मीन पर किसी एक चलने फ़िरने वाले को भी ना छोड़ता, लेकिन अल्लाह तआला एक मोईय्यन मुद्दत तक उनको ढील दे रहा है, तो जब उनकी वो मेआद आ पहुंचेगी अल्लाह अपने बन्दों को देख लेगा। (35:45)

अल्लाह की योजना यह नहीं है कि इस दुनिया में ही वह अपना फ़ैसला सुना दे और उसके मुताबिक़ बदला भी देदे और यह इसलिए ताकि सभी इंसानों को उनकी परीक्षा के लिए और ख़ुद को दुरूस्त करने व आगे बढ़ाने का मुनासिब मौक़ा मिले। इस जीवन के सम्बंध में और अल्लाह के इंसाफ़ के बारे में यह अनिवार्य सिद्धांत पूरे क़ुरआन में जगह जगह बयान हुआ है (6:2,60; 11:13; 14:10; 18:58; 20:129; 29:53; 39:42; 40:67; 42:14; 7:14)। अगर लोगों को उनकी हर ग़लती पर तुरन्त सज़ा दे दी जाए और अल्लाह की तरफ़ से अनदेखी करने, मआफ़ करने और लोगों को सुधरने व तौबा करने का कोई मौक़ा न मिले तो दुनिया का जीवन थम कर रह जाएगा और इंसानों के विकास या दुनिया के विकास का कोई मौक़ा ही न रहेगा। इसलिए अल्लाह लोगों को अपने अन्दर अच्छे या बुरे बदलाव लाने का पूरा मौक़ा देता है। जब इस दुनिया की अवधि समाप्त हो जाएगी जो कि अल्लाह ने तय कर रखी है तब हर इंसान को फ़ैसले और बदले के लिए लाया जाएगा। इस अवधि को बढ़ाने या छोटा कर देने की कोई कोशिश भी बेकार होगी। क़ुरआन में आख़िरत के अक़ीदे के हवाले से हर काम के लिए व्यक्ति की जवाबदेही पर बार बार ज़ोर दिया गया है, क्योंकि इस दुनिया में हर ग़लत काम के कुछ बुरे नतीजे होते हैं और अच्छे कामों का भी कुछ न कुछ बदला इस दुनया में इंसान को मिलता

है जबकि पूरा बदला और हक़ीक़ी बदला आख़िरत में ही मिलेगा (16:97; 20:123-124)।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَ لَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَ لَا تُخَافِتْ بِهَا وَ ابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝۱۱۰ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝۱۱۱

आप फ़रमा दीजिये के चाहे अल्लाह कह कर पुकारा या रहमान कह कर जिस नाम से भी पुकारोगे, सो उसके बहुत अच्छे अच्छे नाम हैं और अपनी नमाज़ें ना तो बहुत ज़ोर से पढ़िये और ना बिल्कुल चुपके से, और उन दोनों के दरमियान एक तरीक़ा इख़्तियार कीजिये। और कह दीजिये के तमाम ख़ूबियां अल्लाह ही के लिये हैं जो ना औलाद रखता है और ना कोई उसका सल्तनत में शरीक है और ना कोई उसका मददगार है, कमज़ोरी की वजह से, और उस की बड़ाईयां बयान किया कीजिये।

(17:110-111)

अगरचे अल्लाह का रूप व स्वरूप इंसान की कल्पना में नहीं आ सकता लेकिन उसके नाम या गुण (जो आयत 7:1,80; 20:8; 59:24 में पूरी तरह आए हैं और पूरे क़ुरआन में जगह जगह स्तेमाल हुए हैं) अल्लाह की शान को समझने और मख़लूक़ात (पैदा की हुई चीज़ों) से उसके सम्बंध को समझने में हमारी मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, इंसान को इन नामों से अपने अन्दर यह गुण पैदा करने की प्रेरणा भी मिलती है जिससे उनका नैतिक स्तर बुलन्द होता है, लेकिन इस बात को हमैशा ध्यान में रहना चाहिए कि पैदा करने वाले के गुण और पैदा होने वाले प्राणियों के गुण समान नहीं हो सकते। क़ुरआन और सुन्नत में अल्लाह के गुणों को बयान करने वाले 99 नाम बयान हुए हैं लेकिन उसे चाहे कितने ही नामों से पुकारा जाए बहरहाल उसकी हस्ती अकेली ही है (59:22-24)। वह न केवल रहमान है बल्कि रहीम भी है यानि बहुत रहम करने वाला भी है। अल्लाह के ये दो विशेष नाम क़ुरआन की तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) शुरू करते समय ख़ास तौर से पढ़े जाते हैं और हर नमाज़ में भी बयान किए जाते हैं। यह उसकी शान है कि उसने अपनी हस्ती पर रहमत को लाज़मी कर लिया है; 6:12,54)

وَ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝۱۹ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝۲۰ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝۲۱ لَوْ

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और जो अल्लाह के नज़दीक हैं वो उसकी इबादत से आरनहीं करते और ना थकते हैं। रात और दिन तसबीह करते रहते हैं, किसी वक़्त नहीं छोड़ते। क्या उन्होंने ज़मीन की चीज़ों को माबूद बना रखा है जो किसी को

كَانَ فِيهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ
مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ
رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا
فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ
وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا
يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ
يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ
ارْتَضٰى وَ هُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ
مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ
اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ
كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع

ज़िन्दा करते हैं। अगर आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई और माबूद होते, तो दोनों ख़राब हो जाते, ये लोग जो बातें अल्लाह के बारे में कहते हैं, तो अल्लाह जो अर्श का मालिक है उनसे पाक है। जो काम वो करता है उससे कोई पुरसिश नहीं कर सकता, और औरों से पुरसिश होगी। क्या लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रखे हैं, कह दीजिये के तुम अपनी दलील पेश करो, ये किताब है मेरे साथ वालों की, और मुझ से पहले लोगों की किताबें मौजूद हैं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हक़ को तो वो उससे मुंह फ़ेरते हैं। और आपसे पहले हमने कोई रसूल नहीं भेजा जिसको हमने ये वही ना की हो, के मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो पस मेरी ही इबादत करो। और वो कहते हैं के अल्लाह औलाद रखता है, वो पाक है, बल्के वो (अल्लाह के) इज़्ज़त वाले बन्दे हैं। वो उससे आगे बढ़ कर बात नहीं करते, और उसी के हुक्म पर अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले सब हालात जानता है और वो किसी की सिफ़ारिश नहीं करते बजुज़ अल्लाह की मर्ज़ी के वो सब अल्लाह की हैबत से डरते हैं। और उनमें से जो कहता है के मैं अल्लाह के सिवा माबूद हूँ, तो हम उसको दोज़ख़ की सज़ा देंगे हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (21:19-29)

उपरोक्त आयतों में अल्लाह पर ईमान रखने के सम्बंध में कुछ ख़ास बुनियादी सिद्धांत बयान हुए हैं। शुरू (21:19-22) में हमारे सामने यह तर्क आता है कि विभिन्न या अनेक भगवानों में विश्वास रखना ख़ुद अपने आप में एक विरोधाभासी बात है कि अगर यह सारे भगवान अपनी शक्तियों और अपनी मर्ज़ी में एक दूसरे के बराबर हैं तो फिर उनमें से चलेगी किसकी और अगर उनकी शक्तियां सीमित हैं और अगर उनके बीच अधिकारों का विभाजन है तो उनमें आपसी सहयोग और सामंजस्य कौन स्थापित करेगा। दोनों ही स्थितियों में समस्याएं जन्म लेती हें क्योंकि बराबर की शक्तियां रखने वाले बहुत से भगवान या ख़ुदा अपनी अपनी इच्छाएं और फ़ैसले लागू करने में एक दूसरे से झगड़ेंगे और कायनात में उत्पात मचेगा,

जबकि सीमित अधिकारों वाला कोई भगवान या ख़ुदा वास्तव में ख़ुदा हो ही नहीं सकता। अलग अलग ख़ुदाओं के नैतिक स्तर भी अलग अलग होंगे क्योंकि उनके गुण और उनके व्यवहार अलग अलग होंगे।

फिर अल्लाह तआला के मुकम्मल और दुरूस्त इंसाफ़ पर यक़ीन का मामला आता है जो मोमिन को अपना पूरा वजूद अल्लाह की मर्ज़ी और मार्गदर्शन के हवाले करने की प्रेरणा देता है और मोमिन ख़ुद को दुनिया का केन्द्र बिन्दु समझने और सही व ग़लत और भलाई या बुराई का फ़ैसला ख़ुद करने का मालिक समझने से बचा रहता है। इंसान इस दुनिया में दूसरों के सामने जवाबदेह है और आख़िरत में वास्तविक फ़ैसले के दिन केवल अल्लाह के सामने जवाबदेह होगा, जबकि अल्लाह के ऊपर कोई जवाबदेही नहीं है क्योंकि उसकी तरफ़ से जो कुछ है वह उसकी रचना है (21:23)। इसी तरह कोई भी इंसान जो अपने आप को किसी भी जवाबदेही से ऊपर समझे वह वास्तव में लोगों पर अपनी ख़ुदाई जताता है। इस लिहाज़ से देखें तो एक अल्लाह पर ईमान मानव अधिकार, मानव समानता और हर व्यक्ति के कामों की जवाबदेही के संदर्भ में कितना अधिक आकर्षक और प्रभाव पूर्ण नज़रिया है। इसके बाद क़ुरआन यह बताता है कि कोई भी दावा ठोस जानकारी पर आधारित और तार्किक होना चाहिए (21:24)। जहाँ तक किसी उपयुक्त तर्क की बात है तो क़ुरआन में इस पर बार बार ज़ोर दिया गया है (उपरोक्त आयतों के अलावा देखें 2:111; 10:68; 27:64; 28:75; 37:156-157: 40:56)।

आयत 21:25 में यह बात बहुत प्रभावी अंदाज़ से कही गयी है कि अल्लाह के तमाम पिछले पैग़ामों का मूल तत्व एक ही है यानि ष्मेरे अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है, इसलिए मेरी ही बन्दगी करोष(और देखें 25:7-73,117; 7:59,65,73,85; 11:50,6184; 16:36; 21:92; 23:23,32; 27:45; 29:16,36)। इस्लाम का अर्थ है आत्मसमर्पण, जो केवल अल्लाह के लिए ही होना चाहिए, अल्लाह के सभी पैग़म्बरों ने इस्लाम के व्यापक अर्थ में इस्लाम की ही शिक्षा दी है (2:112,131-133,136; 3:20,52,64-83, 84; 4:125; 5:44,111; 21:108; 22:34; 27:44; 28:53; 29:46; 31:22)

अल्लाह के सभी पैग़ामों के इस बुनियादी और साफ़ उसूल के मुताबिक़ कि वह अकेला है और सारी इबादतें केवल उसी के लिए हैं, और वह तमाम हस्तियां जिन्हें अल्लाह ने बुलन्द किया है जैसे फरिशते या पैग़म्बर या दूसरे लोग वो ख़ुद भी केवल उसके बन्दे हैं जो यह जानते हैं कि पूरी सच्ची लगन से किस तरह उसकी बन्दगी की जाए, और यही बात अल्लाह से उनके क़रीब होने और उनके बुलन्द होने की वजह भी है (21:26-29)। किसी की ख़ातिर भी किसी को सिफ़ारिश का कोई मौक़ा नहीं है सिवाए इसके कि यह सिफ़ारिश करने वाले और जिसके लिए सिफ़ारिश करनी है अल्लाह के यहाँ मक़बूल (स्वीकार्य) हों। लिहाज़ा इन हस्तियों में से

कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह ख़ुदा या ख़ुदा का शरीक है, क्योंकि उसे अपनी असिल हैसियत मालूम है और यह बात पता है कि जो कोई भी अल्लाह के सामने सिफ़ारिश के मामले में ग़लत बयानी करेगा चाहे कोई भी हो अल्लाह के इंसाफ़ के मुताबिक़ उस की सज़ा का पात्र बनेगा क्योंकि अल्लाह कभी किसी की तरफ़दारी नहीं करता। इस मामले में हज़रत ईसा एक खुला उदाहरण हैं जिनके बारे में मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि वह अल्लाह के पैग़म्बर हैं, जबकि दूसरे लोग उन्हें अल्लाह का बेटा मानते हैं (और देखें 4:171-172; 5:75,110-111,116-119)।

इस तरह उपरोक्त आयतें एक अल्लाह पर ईमान के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण और क़ीमती प्वाइंट बयान करती हैं, जिनसे मोमिन के विचार और भावनाएं बनती हैं। एक अल्लाह पर ईमान को उसके इंसाफ़ पर ईमान से अलग नहीं किया जा सकता जिसमें किसी के लिए किसी पक्षपात की कोई जगह नहीं है, और न इसे मानव अधिकारों और समानता व जवाबदेही से अलग किया जा सकता है, और इस पैग़ाम के एक होने को मानने से भी अलग नहीं किया जा सकता जिसने एक के बाद एक आने वाले पैग़ामों से इन सिद्धांतो को स्थापित किया है। सृष्टि की रचना में क्रम और व्यवस्था, और पैदा करने वाले का एक होना न केवल इस्लाम का पैग़ाम है जिसका प्रचार हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनके साथियों ने किया बल्कि पिछले तमाम पैग़म्बरों ने भी इसी की शिक्षा दी। यह वह पैग़ाम है जो इंसान के अन्दर उसके शरीरिक, मानसिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक पहलुओं से संतुलन स्थापित करता है, और हर इंसानी जोड़े के बीच और तमाम इंसानों में और उनके चारो तरफ़ फैली हुई पूरी दुनिया में समन्वय व सामंजस्य स्थापित करता है।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ
وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ
قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ
مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ يُجِيْرُ وَ لَا يُجَارُ
عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾ سَيَقُوْلُوْنَ
لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ
بِالْحَقِّ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ

आप कह दीजिये, ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है वो सब किसका है, अगर तुम जानते हो। तो फ़ौरन कहेंगे अल्लाह का है, आप कह दीजिये के तुम सोचते क्यों नहीं! आप पूछें, सात आसमानों का मालिक कौन है? और अर्शे अज़ीम का मालिक कौन है? तो वो फ़ौरन कहेंगे अल्लाह का है, आप कह दीजिये के तुम सोचते क्यों नहीं! आप पूछिये, वो कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है, और वो पनाह देता है, और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। तो वो फ़ौरन कहेंगे ऐसी बादशाहत तो अल्लाह की है, आप कह दीजिये, फ़िर तुम पर जादू

مِنْ وَّلَدٍ وَّ مَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَ لَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ﴿۹۱﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۹۲﴾

कहाँ से पड़ जाता है। हक़ीक़त ये है के हमने उनके पास हक़ पहुंचा दिया है, और ये बेशक झूटे हैं। अल्लाह ने ना तो किसी को बेटा बनाया है, और ना उसके साथ कोई माबूद है, अगर ऐसा होता तो हर माबूद अपनी अपनी मख़लूक़ात को लेकर चलता, और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता, ये लोग जो अल्लाह के बारे में बयान करते हैं, अल्लाह उनसे पाक है। वो ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला है, वो उनके शरीक बनाने से बाला तर है।

(23:84-92)

यह आयतें इस ऐतिहासिक सच्चाई की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं कि इस्लाम के आगमन के समये अरब लोग, या उनमें से कुछ लोग सच्चे ईमान वालों की तरह अल्लाह के वजूद पर ईमान रखते थे और यह मानते थे कि वही दुनिया का मालिक है और सबसे महान है। लेकिन उन्होंने अपनी सोच और भावना को नज़रअंदाज़ किया और केवल एक अल्लाह पर ईमान रखने के बजाए दूसरे बहुत से ख़ुदाओं को माना। उपरोक्त आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह को छोड़ कर कुछ और खुदा भी होते तो ज़मीन व आसमान तलपट हो जाते (21:22)। अगर कई ख़ुदा होते तो वो निश्चित रूप से एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी होते और अपनी ताक़त व पैदा करने की क्षमता के आधार पर एक दूसरे से लड़ते और हर एक अपना ज़ोर चलाने का प्रयास करता। ऐसी स्थिति में ज़मीन व आसमान और उनकी यह क्रमिक व्यवस्था कैसे बरक़रार रहती?

सृष्टि और जीव जन्तुओं की क्रम व्यवस्था एक ख़ुदा और उसकी क़ुदरत की गवाही देती है। कोई व्यक्ति अगर एक क्षण के लिए भी सृष्टि की इस विविधता और उसके विभिन्न व अनेक तत्वों में क्रम व सुव्यवस्था पर ग़ौर करे तो एक से अधिक ख़ुदाओं का विचार उसे धोखा ही महसूस होगा कि अगर ऐसा होता तो इस कायनात का विनाश हो जाता। ये आयतें दोबारा इस बात को जताती हैं कि अल्लाह ने कभी किसी को संतान नहीं बनाया, चाहे फ़रिश्ते हों या ईसा मसीह। अल्लाह इस तरह के मानवीय सम्बंधों से ऊपर है। वह एक सच्चा ख़ुदा है जिसकी तुलना उसकी किसी जनित रचना से नहीं की जा सकती । वही तो है जो वह सब कुछ जानता है जो लोगों की जानकारी में है और जो लोगों की जानकारी में नहीं है।

اَوَ لَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا

क्या उन्होंने अपने दिलों में ग़ौर नहीं किया के अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ दोनों में है,

بِالْحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝ اَوَ
لَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اَثَارُوا الْاَرْضَ
وَ عَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ
اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
كَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

उनको हिकमत से और एक वक़्त मोईय्यत तक के लिये पैदा किया है, और बहुत से लोग अपने रब से मुलाक़ात का इन्कार करते हैं। क्या उन लोगों ने ज़मीन में फ़िर कर नहीं देखा के जो लोग उनसे पहले थे, उनका अंजाम क्या हुआ, वो ज़ोर और क़ुव्वत में उनसे कहीं.ज्यादा थे, उन्होंने ज़मीन को जोता, और उसको उनसे .ज्यादा आबाद किया और उनके पास उनके रसूल निशानियां लेकर आये थे, तो अल्लाह ऐसा ना था के उन पर ज़ुल्म करता, बलके वो अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। फ़िर जो बुरे थे उनका अंजाम भी बुरा हुआ, इसलिये के उन्होंने अल्लाह की आयात को झुटलाया, और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे। अल्लाह ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, और वही उसको दोबारा पैदा करेगा, फ़िर तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (30:8-11)

कायनात के बारे में ग़ौर व फ़िक्र और उसकी सूझबूझ प्राप्त करने से इंसान की रचना और संरचना को समझने में मदद मिलेगी, और इंसानी इतिहास का ज्ञान व्यक्ति को इंसान की तक़दीर (भाग्य) और इंसान के अंजाम से वाक़िफ़ कराएगा। व्यक्तियों, समाजों, सभ्यताओं और राजनीतिक शक्तियों के उत्थान और पतन का एक सिलसिला चला आ रहा है। सामाजिक और राजनीतिक विकास और बदलावों का भी एक ऐसा ही क़ानून है जैसा कि सृष्टि व जीवन के क्रम में मौजूद है (3:26-27)।

जिस किसी के पास कोई सत्ता या शक्ति है तो वह हमैशा के लिए नहीं है। उसे यह चीज़ दुनिया में अल्लाह के क़ानून के अन्तर्गत मिली हुई है (3:26; 7:128-129; 21:105; 22:40-41; 24:55; 47:38)। हर एक को इस दुनिया में अपनी शक्ति और सत्ता का सही या ग़लत स्तेमाल करने का नतीजा देखना होगा क्योंकि अल्लाह का जो क़ानून इंसानी समाजों पर चलता है वह यह है कि जो लोग बुरे काम करते हैं उनका अंजाम भी बुरा है (30:10)। और यह कि जब लोग अपनी समझ और चेतना को स्तेमाल करने से बचते हैं और अल्लाह की हिदायत को नज़रअंदाज़ करते हैं तो वो ख़ुद अपनी तबाही का रास्ता चुनते हैं। उन्हें अपने कामों का बदला आख़िरत में मिलेगा जब अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ात को फिर से पैदा करेगा और हर एक को उसके किए का पूरा पूरा और सही सही बदला देगा, और जब सब लोग

यह देख लेंगे कि अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वो ही अपने आप पर ज़ुल्त करते थे (30:9)।

तो तुम अल्लाह की तसबीह किया करो, शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। और आसमानों और ज़मीन में उसी की तारीफ़ की जाती है, और पिछले वक़्त और जब दोपहर हो। वो ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से (निकालता है), और ज़िन्दा करता है ज़मीन को उसके मरने के बाद, और इसी तरह तुम भी ज़िन्दा किये जाओगे। और उसी के निशानात (और तसर्रूफ़ात) में से है के उसने तुम्हें मिटटी से पैदा किया, फ़िर अब तुम इन्सान होकर जा बजा फ़ैल रहे हो। और उसी के निशानात में से है के उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से औरतें पैदा कीं (ताके उसकी तरफ़ मायल होकर) आराम हासिल करो और तुम में बाहमी मोहब्बत और रहमत पैदा की, बेशक इसमें निशानियां हैं ग़ौर करने वालों के लिये। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का जुदा होना, बेशक इसमें निशानियां हैं जानने वालों के लिये। और उसी की निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसके फ़ज़्ल का तलाश करना, बेशक इसमें निशानियां हैं सुनने वालों के लिये। और उसकी (क़ुदरत की) निशानियों में से ये है के वो तुम को बिजली दिखाता है ख़ौफ़ उम्मीद दिलाने को, और आसमान से पानी बरसाता है, फ़िर उसके ज़रिये से ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है, उसके मरने के बाद, अक़्ल वालों के लिये इसमें निशानियां हैं। और उसकी (क़ुदरत की) निशानियों में से ये है के आसमानों ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं, फ़िर जब वो तुमको आवाज़ देकर ज़मीन में से बुलायेगा तो तुम निकल आओगे। जो कुछ भी ज़मीनो आसमान में है सब उसी का है, सब उसके

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ
تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَ كَذٰلِكَ
تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
تُرَابٍ ثُمَّ اِذَاۤ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَ جَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَ
اَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ
ابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ
يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ يُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ
وَ الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ
مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَ لَهٗ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ

ज़ेरे हुक्म हैं। और वही ख़लक़त को पहली बार पैदा करता है, फ़िर उसे दोबारा पैदा करेगा, और उसको बहुत आसान है, और आसमानों और ज़मीन में उसी की शान बुलंद है, और वो बहुत ज़बरदस्त हिकमत वाला है। वो तुम्हारे लिये तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फ़रमाता है (के भला) जिन लौंडी ग़ुलामों के तुम मालिक हो वो उस माल में जो हमने तुम को अता किया है तुम्हारे शरीक हैं? और क्या तुम उनको अपने बराबर का मालिक समझते हो, और क्या तुम उनसे उस तरह डरता हो? जिस तरह अपनों से डरते हो? इस तरह हम अक़्ल वालों के लिये अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं। बल्के ज़ालिम बे सोचे समझे अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, तो जिसको अल्लाह गुमराह कर दे, उसको कौन हिदायत दे सकता है और उनका कोई मददगार नहीं होगा। तो तुम पूरी यकसूई के साथ दीने ख़ुदा के रस्ते पर चले चलो, और ख़ुदा की फितरत को जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है इख़्तियार किये रहो, ख़ुदा की बनाई हुई फ़ितरत में तग़ईय्युरो तबद्दुल नहीं हो सकता, यही सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। अल्लाह की तरफ़ रूजू होकर, और उससे रहो, नमाज़ की पाबंदी करो, और शिर्क करने वालों में से ना होना। उनमें जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर लिया, और मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़े हो गए, हर फ़िर्क़ा उससे ख़ुश है जो उनके पास है। (3:17-32)

قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
یُعِیْدُهٗ وَ هُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَ لَهُ الْمَثَلُ
الْاَعْلٰی فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ
اَیْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ
فَاَنْتُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِیْفَتِكُمْ
اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ
یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا
اَهْوَآءَهُمْ بِغَیْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ یَّهْدِیْ مَنْ
اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۹﴾
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ حَنِیْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ
الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا ؕ لَا تَبْدِیْلَ
لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ۙ وَ لٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ مُنِیْبِیْنَ اِلَیْهِ
وَ اتَّقُوْهُ وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ لَا تَكُوْنُوْا مِنَ
الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۳۱﴾ مِنَ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ
كَانُوْا شِیَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَیْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾

एक ऐसा इंसान जिसके पास सोचने समझने की क्षमता हो वह अपने दिन रात की घटनाओँ पर ग़ौर कर सकता है। सुबह को नींद से उठने से लेकर दोपहर तक और फिर रात को सोने के लिए आँखें बन्द कर लेने तक उसके लिए सोचने और ग़ौर करने के लिए बहुत कुछ हे। रोज़ाना पांच वक़्त की लाज़मी इबादत का सिलसिला जो सुबह से लेकर रात तक पूरे दिन पर छाया हुआ है ईमान वाले को समय के ख़ास पलों को ध्यान में रखने में मदद देता हे, और अपन रब को याद रखने का एक माध्यम है वह महान रब जो सृष्टि और खुद इंसान के अपने

अन्दर होने वाली प्रगतियों व बदलावों से परे हे। ये आयतें इंसान की दिन भर की गतविधियों यानि जीविका के साधन जुटाने और नींद लेकर सुकून प्राप्त करने का ज़िक्र करते हुए जीवन के पूरे परिषश्य पर ध्यान केन्द्रित कराती हैं, ख़ास तौर से इंसानी जीवन और आम तौर से सभी जीव जन्तुओं के जीवन का सिलसिला जो एक सीमित अवधि के जारी है और जो जानदार व बेजान चीज़ों के बीच इन्टरेक्शन से जारी है।

जहाँ तक इंसानी जीवन का सवाल है तो वह मिट्टी से वजूद में आया है लेकिन दो विपरीत प्लगों की प्रजनन क्रिया और उनके बीच आपसी आकर्षण से आगे बढ़ता है जो अल्लाह ने ही पैदा किया है और प्रेम व दया का मिश्रण है। दामपत्य सम्बंध के नतीजे में और ज़मीन पर फैल जाने के वजह से इंसानी नस्ल की भाषाएं और रंग व रूप आदि अलग अलग हो गए लेकिन इंसानों का मूल स्वरूप और उनकी योग्यताएं व प्रतिभाएं एक समान ही रही हैं। हर भाषा, संस्ति, जातीय विशेषताएं और रंग व रूप लगातार बदलते रहते हें जिनकी बदौलत नए और अलग अलग वर्ग वजूद में आते रहते हें, लेकिन यह इंसानी नस्ल और उसका वजूद पूरी सृष्टि का केवल एक अंश है, आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसानों के पैदा करने से बड़ा (काम) है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (40:57)। लिहाज़ा आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और सृष्टि की व्यवस्था में अल्लाह की निशानियां और चमत्कार ऊपर की आयतों में उजागर किए गए हैं और ख़ास तौर से पानी के बरसने और बिजली के चमकने व जीवन पर उनके प्रभावों का हवाला दिया गया है (30:17-19,24)। सृष्टि और जीवन की इन सच्चाईयों पर ग़ौर करने से इन आयतों का यह पैग़ाम सामने आता है कि मृत्यू के बाद जीवन देना अल्लाह की क़ुदरत में है और इंसान के लिए इसको मानना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि ऐसा करना पहली बार पैदा करने की अपेक्षा आसान बात है। यह केवल अल्लाह की ही हस्ती है जो यह सब करने की ताक़त रखती है और इस व्यवस्था में उसने जो कुछ पैदा किया है उसे बनाए रखने की शक्ति भी उसके पास है। उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा के साथ उसके पैदा किए हुए कुछ प्राणियों को आख़िर कैसे शरीक किया जा सकता है जब कि कोई भी व्यक्ति अपने आधीन किसी किसी व्यक्ति को अपने बराबर के अधिकार देकर अपने साथ शरीक नहीं करता। एक अल्लाह पर ईमान और उसके दीन को अपनाना इंसानी स्वभाव के अनूकूल है और उसको बरतना इंसान के बस में है। अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ना जो कि इंसानी फ़ितरत और सृष्टि की व्यवस्था के साथ पूरी तरह समन्वयित है, टकराव और बिखराव का कारण बनता है क्योंकि फिर हर वर्ग और समूह स्वार्थ और अहंकार पर आधारित अपनी विवादित इच्छाओँ और विपरीत नज़रियों पर जमेगा और कोई भी समूह अल्लाह की रहमत और सब के साथ समान व्यवहार के गुण के अनुसार रवैया नहीं रखेगा बल्कि इसके बजाए गुटबंदी होगी और अपने अपने हितों पर ज़ोर होगा।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى
فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝
هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِىْ مَا ذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝

अल्लाह ने आसमानों को बग़ैर सतून के बनाया, जैसा के तुम देखते हो, और ज़मीन पर पहाड़ बना कर रख दिये, ताके ज़मीन तुम को लेकर डावांडोल ना हो, और इसमें हर क़िस्म के जानवर फ़ैला दिये, और हमने आसमान से पानी बरसाया, फ़िर इस ज़मीन में हर क़िस्म की नफ़ीस चीज़ें उगाईं। ये तो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें हैं, तो मुझे दिखाओ के अल्लाह के सिवा जो हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है, बल्के ज़ालिम खुली गुमराही में मुबतला हैं। (31:10-11)

ये आयतें पाठक का ध्यान रचना से रचनाकार की तरफ़ कराते हुए उस विशाल अंतरिक्ष में चिंतन करने का आग्रह करती हैं जिसमें बेगिनती सितारे और ग्रह व उपग्रह हैं जो सब के सब अल्लाह के नियम से बंधे हुए हें, यहाँ तक कि कोई दिखाई देने वाला सहारा भी मौजूद नहीं है, ज़मीन अपनी धुरी पर तेज़ी से घूम रही है और फिर भी उसका संतुलन आश्चर्य जनक रूप से बना हुआ है और जीवन के अनेक और तरह तरह के दर्शन इस पर मौजूद हैं, पानी बरसने की प्रक्रिया और उसके नतीजे में वनस्पितयों का उगना और तरह तरह के पेड़ पौधों का पनपना। ये सब की सब अल्लाह की रचना है, उसके अलावा कौन से भगवान या ख़ुदा हैं जो ये सब कर सकते है? सृष्टि की रचना के साथ साथ उसकी क्रमिक और समन्वयपूर्ण व्यवस्था बनी रहना भी अल्लाह की शान है और जीवन को अस्तित्व देने के साथ साथ उसकी पैदावार को जारी रखना भी अल्लाह का कारनामा है। सृष्टि की व्यवस्था और उसकी गतिशीलता, स्वचालित रूप से एक दूसरे के साथ सबका हरकता करना, और जीवन की निरन्तरता, स्वचालित रूप से पैदावार का सिलसिला चलना यह सब कुछ इस सृष्टि के जनक के एक होने और सर्वशक्तिमान होने की तरफ़ इशारा करते हैं: क्यू तुम्हें (अल्लाह) रहमान की बनावट में कोई कमी दिखाई देती है, ज़रा आँख उठा कर देखो तो भला तुम को (आसमान में) कोई दरार दिखाई देती है? (67:3)।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ
وَ مَا فِى الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ
ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ
يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا
كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ

क्या तुमने नहीं देखा के जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है, और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातनी नेमतें पूरी कर दी हैं, और बाज़ अल्लाह के बारे में बहस करते हैं बग़ैर वाक़फ़ीयत और दलील के और बग़ैर किसी रौशन किताब के। और जब उनसे कहा जाता है के तुम

اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۲۱﴾

पैरवी करो इस किताब की जो अल्लाह ने नाज़िल की है तो कहते हैं हम तो उसी की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, अगरचे शैतान उनके बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी। (31:20-21)

अल्लाह तआला ने इंसान को उसके चारों ओर सक्रिय प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण पाने के लिए शरीरिक, बौद्धिक, मानसिक व अध्यात्मिक शक्तियां दी हैं चाहे यह प्राकृतिक शक्तियां कितनी ही ज़ोरदार और जटिल हों। अल्लाह की पा और महरबानी हर समय हमारे साथ है, जहाँ भी हम हों, अल्लाह हर वक़्त हमारे साथ होता है और हमारे भीतर व बाहर सब जगह मौजूद है। कभी हम अल्लाह की मदद और महरबानी को महसूस भी कर लेते हैं और उसे समझ लेते हैं और कभी हम नहीं समझ पाते और नहीं महसूस कर पाते। लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो ख़ुद अपने ज्ञान से बेख़र हैं और रहनुमाई के लिए दूसरों की मदद नहीं लेते, वह ख़ुद को अल्लाह के नूर से वंचित रखते हें। वो अल्लाह के इंकारी हैं, चाहे ये लोग पहले रहे हों या आज पाए जाते हों, लेकिन सृष्टि की रचना व उसके नियम और व्यवस्था की, और उसमें जीवन के होने और जीवन के विकास की इससे ज्यादा दिल लगती बात नहीं बता सकते कि वह विकास जो हर जीव जन्तु में जारी है और एक दिन थम जाएगा और उनका जीवन आख़िरकार समाप्त हो जाएगा। ये लोग सृष्टि के मूल कारक और मूल उद्देश्य के बारे में अनजाने और भ्रमपूर्ण व सन्देहपूर्ण विचार व्यक्त करते हें। जब कि अपनी रचना के बारे में अल्लाह का ज्ञान पूरी तरह दुरुस्त और अक़ल में आने वाला हे। और अल्लाह की क़ुदरत और उसकी शक्तियां असीमित हैं, मैं ने उनको न तो आसमान और ज़मीन के पैदा करने के समय बुलाया था और न स्वयं उनके पैदा करने के समय (118:5)। नास्तिक लोग अल्लाह पर ईमान के मुक़ाबले ये विचार व्यक्ति करते हैं कि अल्लाह नहीं है। लेकिन इस दावे के मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक तत्वों को उससे अलग नहीं करते। हालांकि जिन लोगों ने पूर्व में हठधर्मी के साथ सत्य का इंकार किया वो केवल अपने पूर्वजों की परम्पराओं को पकड़े हुए थे इसके बग़ैर कि इन पुराने प्रचलनों पर नए सिरे से कोई विचार करते और उनका जायज़ा लेते। वो इस विचार पर बिना सोचे समझे जमे रहे कि ऐसा करना अपने पूर्वजों के तरीक़ों से हटना होगा, हालांकि वो अन्धे बन कर जिन बुराइयों की नक़ल करते आ रहे हैं उनका नुक़सान स्वयं अपने आप को पहुंचा रहे हैं, जो उनके सामने इस दुनिया में भी आता है और आख़िरत में भी आएगा।

مَا خَلْقُكُمْ وَ لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِىْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۹﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۰﴾

(अल्लाह को तो) तुम सब का पैदा करना और क़यामत के दिन उठाना ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का (पैदा करना) बेशक ख़ुदा सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा के अल्लाह ही रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसी ने सूरज और चांद को काम में लगा दिया, हर एक एक मुक़र्ररा मेआद तक तक चल रहा है, और ये के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बखूबी वाक़िफ़ है। ये इस लिये के अल्लाह बरहक़ है, और जिनको ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वो सब बातिल हैं, और ये के अल्लाह ही बुलंद और बड़ाई वाला है। (31:28-30)

अल्लाह की असीम क़ुदरत के सामने तमाम इंसानों का पैदा होना और मर कर दोबारा उठाया जाना सिर्फ़ एक प्राणि को पैदा करने जैसा है। अलबत्ता बहुत से लोगों को एक साथ उठाए जाने का मतलब यह नहीं है कि हर व्यक्ति की व्यक्तिगत जवाबदेही और फ़ैसले को कम करके देखा जाए।

अल्लाह की क़ुदरत की एक मिसाल यह है कि वह दिन को रात में दाख़िल करता है और रात को दिन में दाख़िल करता है। दिन की समय सारणी अलग अलग स्थानों पर उनके देशान्तर (स्वदहपजनकम) के लिहाज़ से अलग अलग होती है। रात व दिन का अन्तराल अलग अलग स्थानों पर ज़मीन पर उन के अक्षांश (स्ंजपजनकम) और सूरज के साथ बनने वाले कोण के लिहाज़ से अलग अलग होता हे। सूरज और चांद दोनों अल्लाह के बनाए हुए नियम पर चलते हैं और अपने निर्धारित समय पर निकलते और छुपते हैंः न तो सूरज से ही हो सकता है कि चांद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आ सकती है, सब अपनी अपनी कक्षा में तैर रहे हैं (36:40)।

सृष्टि में यह हैरत अंगेज़ विविधता, जटिलता और दर्जाबन्दी सामूहिक रूप से एक मुकम्मल व्यवस्था से जुड़ी हुई और समन्वयित है और यह व्यवस्था एक दूसरे से सम्ब) नियमों व क्रम के माध्यम से जारी है जो एक सत्य और कभी फ़ना न होने वाली हस्ती यानि अल्लाह तआला के अस्तित्व पर गवाही देती है, जिसके साथ किसी को शरीक करना या उसके बराबर ठहराना केवल एक झूट और धोखा है। वह अकेला ही आला (सर्वोच) और अज़ीम (महानतम) रब है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَ اخْشَوْا يَوْمًا
لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَ لَا مَوْلُوْدٌ
هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَ لَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ
عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ يَعْلَمُ
مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّا ذَا
تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ
اَرْضٍ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

ऐ इन्सानों! तुम अपने रब से डरो और उस रोज़ का ख़ौफ़ करो जिसमें बाप अपने बेटे के कुछ काम ना आयेगा, और ना बेटा अपने बाप के काम आएगा, यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम को दुनिया की ज़िन्दगानी धोके में ना डाले और शैतान तुम को अल्लाह से धोके में रखे। बेशक अल्लाह ही को क़यामत का इल्म है, और वही मेंह बरसाता है, और वही जानता है जो कुछ माओं के पेट में है, और कोई नहीं जानता के वो कल क्या करेगा, और कोई नहीं जानता के वो कि सरज़मीन में मरेगा यक़ीनी तौर पर अल्लाह सब कुछ जानता है (और) बाख़बर है। (31:33-34)

उपर की आयतों में से पहली आयत में ज़ोर देकर यह बताया गया है कि आख़िरत में अल्लाह व्यक्तियों के साथ न्याय किस तरह करेगें। उस दिन कोई व्यक्ति किसी के कुछ काम न आएगा, चाहे वो इस दुनिया में एक दूसरे के कितने ही क़रीब रहे हों और उनमें कितनी ही मुहब्बत रही हो। यहाँ तक कि माता पिता भी अपनी औलाद के लिए या औलाद माता पिता के लिए कुछ नहीं कर सकेगी। हर एक का फ़ैसला व्यक्तिगत रूप से होगा और जो कुछ उसने इस दुनिया में किया होगा उसी के आधार पर होगा।

इस दुनिया का जीवन और इसकी चकाचौंध शैतान की प्रेरणा और हमारी इंसानी कमज़ोरियों व अदूरदर्शिता की वजह से हमें धोखे में डाल सकती है, हिसाब किताब के दिन को और आख़िरत के जीवन से हमारा ध्यान हटा सकती है, लेकिन आने वाले समय के बारे में अल्लाह का वायदा निश्चित रूप से पूरा हो कर रहेगा। इस दुनिया में किसी का अन्तिम दिन आज या कल किसी भी समय अचानक आ सकता है लेकिन कब आएगा कोई कभी कह नहीं सकता।

आख़री आयत में अल्लाह की क़ुदरत की कुछ निशानियां बयान की गयी है। यह वही जानता है कि इस दुनिया का खात्मा कब होगा, और वही है जो सृष्टि में संचालित अपने नियमों के माध्यम से ऐसे कारण पैदा करता है कि जिनसे ज़मीन पर पानी बरसता है और सब जीव जन्तुओं को जीवन की ऊर्जा मिलती है। अल्लाह जानता है कि मां के गर्भाशय में क्या पल रहा है, केवल इतना ही नहीं कि भ्रूण कैसा है और उसका प्लग क्या है, बल्कि यह भी कि उसकी जैविक और अनुवांशिक विशेषताएं क्या होंगी। वह पलने वाले भ्रूण में छुपी अक़ली और मनोवैज्ञानिक व अध्यात्मिक शक्तियों को जानता है जो उसके अन्दर डाली गयी हैं, और यह

कि गर्भाश्य में जो कुछ पल रहा है वह दुनिया में आएगा भी या नहीं या यह कि वह स्वस्थ सालिम होगा और एक स्वस्थ जीवन जिएगा या नहीं, और उस मासूम वजूद में आगे चल कर कितना और कैसा विकास होगा। इंसानी जीवन में बहुत से आन्तरिक और बाहरी तत्वों का दख़ल होता है जो एक एक दूसरे से इन्ट्रेक्शन करते हें, लेकिन इस इन्ट्रेक्शन से आख़िरकार क्या कुछ और कैसा इंसान बनेगा इसकी कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इसमें किसी भी क्षण अप्रत्याशित रूप से कोई भी भौतिक या अध्यात्मिक विकास हो सकता है या इसके विपरीत नुक़सान हो सकता है। विभिन्न प्रकार की घटनाएं, बिना किसी भविष्यवाणी के इंसान के जीवन में जाने अनजाने कारणों से आ जाती हैं और किसी भी वजह से उसकी मौत हो सकती है। इंसान को किसी भी सफ़र में कहीं पर भी मौत आ सकती है। यह केवल अल्लाह ही है जो सब कुछ जानता और हर एक बात से बाख़बर है चाहे वह बीते समय की हो, वर्तमान की हो या आने वाले समय की हो, और किसी भी इंसान को ज़ाहिर में जो कुछ नज़र आता है उससे उसको धोखा नहीं खाना चाहिए क्योंकि उसकी गहराई का इंसान को पता नहीं होता और तुम लोगों को (बहुत ही) कम ज्ञान दिया गया है (17:85)।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ
اَجْرَمْنَا وَ لَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ
وَ هُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۶﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ
اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا
كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا وَّ لٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۹﴾
قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ
سَاعَةً وَّ لَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۰﴾

आप पूछें के तुम को आसमानों और ज़मीन से कौन रिज़्क़ देता है, कह दीजिये के अल्लाह, और बेशक हम या तुम ज़रूर सीधे रास्ते पर हैं, या सरीह गुमराही में हैं। आप फ़रमा दीजिये के ना तो तुम से हमारे गुनाहों के बारे में पूछा जायेगा, और ना तुम्हारे आमाल की हमसे पूछ होगी। आप कह दीजिये के हमारा रब हम सब को जमा करेगा, फ़िर हमारे दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करेगा, और वो ख़ूब फ़ैसला करने वाला और जानने वाला है। आप कह दीजिये, तुम मुझे वो तो दिखा दो जिनको तुमने अल्लाह का शरीक बना कर उसके साथ मिला दिया है, हरगिज़ नहीं बल्के वो ही अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत वाला है। ऐ नबी! हमने आपको तमाम लोगों के लिये रसूल बना कर भेजा है, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और ये लोग कहते हैं के ये वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो। आप फ़रमा दीजिये, के तुम से एक मख़्सूस दिन का वादा है जिससे तुम ना एक घड़ी पीछे रहोगे, ना आगे बढ़ोगे। (34:24-30)

यह इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे से सम्बंधित एक और क़ुरआनी बयान है। यानि यह कि अल्लाह एक है कोई उसका शरीक या उस जैसा नहीं है, उसके अलावा कोई मालिक और पालनहार नहीं है, और यह कि हर व्यक्ति ख़ुद अपनी जगह ज़िम्मेदार और जवाबदेह है, और अल्लाह का फ़ैसला निश्चित और क़तई है, जिसे टाला नहीं जा सकता और उसका समय आगे पीछे नहीं किया जा सकता।

यह देखा जा सकता है कि इन आयतों में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनको क़ुरआन किस तरह तथ्यात्मक रूप से और निष्पक्ष ढंग से पेश करता है। इस तरह की वार्ता जैसे अल्लाह पर ईमान रखने वालों और अल्लाह के साथ दूसरों को ख़ुदाई में शरीक करने वालों के बीच चर्चा हो रही हो। तर्क की यथार्ता क बनाए रखने के लिए शुरू में ऐसा कुछ नहीं कहा गया कि कौन सा पक्ष सत्य पर है और कौन असत्य पर। इतने महत्वपूर्ण विषयों पर तर्कपूर्ण वार्ता करने के लिए कितनी ज़बरदस्त शिक्षा इन आयतों में मिलती है।

आयत 28 में इस्लाम के पैग़ाम की वैश्विकता को जताया गया है। यह किसी विशेष परिवार, वंश, या समुदाय के लिए नहीं है बल्कि पूरी इंसानियत के लिए है, यह अल्लाह की हिदायत पर चलने वालों को दुनिया और आख़िरत में अच्छे अंजाम की ख़ुशखबरी सुनाता है, जबकि उन लोगों को चेताता है जो सत्य व सच्चाई और सीधे रास्ते का इंकार करते हैं या उससे विचलित होते हैं। हर एक को उसके अपने फ़ैसले और कर्मों के नतीजे भुगतने होंगे, किसी हद तक इस जीवन में भी, और पूरी तरह उनका फ़ैसला और बदला आने वाले जीवन में सामने आएगा जो निश्चित रूप से अपने समय पर आएगा जो समय अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित कर दिया है और कोई भी उसे एक क्षण के लिए भी आगे या पीछे नहीं कर सकता है। इस जीवन में हर एक के लिए मौक़ा है कि वह सही काम करे यानि अच्छे कर्म करे, बुराई और बुरे कर्मों से बचे, और इस तरह पूरे इंसानी जीवन में अच्छे अंजाम की ख़ुशख़बरी दो चरणें में पूरी होगीः एक तो मौजूदा अस्थायी जीवन में और दूसरा आने वाले स्थायी जीवन में।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ
اللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَ مَا
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾ وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَ اِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى
حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّ لَوْ كَانَ ذَا
قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

लोगों! तुम (सब) अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह बेनियाज़ ख़ूबियों वाला है। अगर वो चाहे तो तुम को नेस्तो नाबूद कर दे, और एक नई मख़्लूक़ ला खड़ी कर दे। और ये अल्लाह के लिये कोई मुश्किल काम नहीं है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ ना उठाये, और अगर बोझ में दबा हुआ अपना बोझ उठाने के लिये बुलायेगा तो कोई उसमें से कुछ भी ना उठायेगा, अगरचे वो क़रीबी रिश्तेदार ही हो। (ऐ रसूल) आप तो

بِالْغَيْبِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَ مَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا
يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾ وَ مَا
يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾ وَ لَا
الظُّلُمٰتُ وَ لَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾ وَ لَا الظِّلُّ وَ لَا
الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَ مَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَ لَا
الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ مَآ
اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ
اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ
نَذِيْرًا ؕ وَ اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا
نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾ وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَ بِالزُّبُرِ وَ بِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾
ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ
نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا
اَلْوَانُهَا ؕ وَ مِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ
حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَ غَرَابِيْبُ
سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَ مِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ
الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا
يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾

सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा सकते हैं जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, और नमाज़ की पाबंदी करते हैं, और जो पाक होता है वो अपने ही लिये पाक होता है और (सबको) अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। और अंधा और आँखों वाला बराबर नहीं हैं। और ना तारीकी और रौशनी (बराबर) हैं। और ना साया और धूप ही। और ना ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हैं, बेशक अल्लाह जिसको चाहता है सुना देता है, और जो क़ब्रों में हैं आप उनको नहीं सुना सकते। आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं। हमने इसको हक़ के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। और कोई उम्मत नहीं मगर उस में डराने वाला (ज़रूर) गुज़र चुका है। और अगर ये आपकी तकज़ीब करते हैं तो जो लोग उनसे पहले थे, वो भी तकज़ीब कर चुके हैं, उनके पास उनके रसूल निशानियां और सहीफ़े और रौशन किताबें लेकर आये थे। फ़िर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया, सो (देख लो) मेरा अज़ाब कैसा रहाँ क्या तुमने नहीं देखा के अल्लाह ने आसमान से मेंह बरसाया, फ़िर हमने उससे रंग रंग के मेवे निकाले, और पहाड़ों में से सफ़ेद और सुर्ख रंग के क़तआत हैं के उनके मुख्तलिफ़ रंग हैं और बहुत ज्यादा सियाह। और इन्सान, जानवरों और चौपायों में भी मुख्तलिफ़ रंगों के हैं, इसी तरह अल्लाह से इसके बन्दों में से वही डरते हैं जो अहले इल्म हैं, बिला शुबह अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बख़्शने वाला है। (35:15-28)

अल्लाह पर ईमान इंसान की ख़ुद अपनी ज़रूरत है क्योंकि हर व्यक्ति को घमण्ड और अहंकार में फंसने से रोकने के लिए और दूसरों को तुच्छ और कमतर समझने से बचने के लिए अल्लाह पर ईमान लाना ज़रूरी है। अल्लाह पर ईमान इंसान के दिल व दिमाग़ की गहराइयों में समानता और संतुलन को पिरोता हे। लेकिन अल्लाह को इंसान की ज़रूरत नहीं है, अलबत्ता वह इंसान सहित अपने सभी जीवों को सहारा और मदद देता है, और अपनी महरबानी से बग़ैर

किसी शर्त केः तुम्हारे रब की पा से हम उनको (जो आख़रित में भलाई मांगते हैं लेकिन इस जीवन में भलाई से दूर रहते हैं) और उन सब को; जो केवल इसी जीवन की तुरन्त प्राप्त होने वाली ख़ुशिया तलब करते हैं) मदद देते हैं और तुम्हारे रब की कृपा किसी से रुकी हुई नहीं है (35:15-18)। अल्लाह अपनी मख़लूक़ के साथ महरबानी और रहमत से पेश आता है, हालांकि अल्लाह अगर चाहे तो ऐसे किसी भी इंसान या इंसानी समाज को महरूम कर सकता है जो अल्लाह की हिदायत का इंकार करे और स्वयं को सुधारे नहीं। इस दुनिया में तो लोगों को परखा जा रहा है क्यूंकि उन्हें जो चाहे करने की आज़ादी दी गयी है। कोई व्यक्ति या समाज सदाचार या दुराचार जो भी करेगा उसके नतीजे इस दुनिया में भी सामने आ सकते हैं लेकिन पूरा पूरा इंसाफ़ अमर जीवन में मिलेगा जो इस बीतते हुए जीवन के बाद निश्चित रूप से मिलने वाला है। अल्लाह के अंतिम निर्णय और स्थायी इंसाफ़ में जो कि दया पर आधारित होगा, हर एक अपने कामों के लिए जवाबदेह होगा और किसी भी तरह अपनी ज़िम्मेदारी से बच नहीं सकेगा और न अपना बोझ किसी अन्य के कांधों पर रख सकेगा।

अल्लाह ने इस दुनिया में इंसानों के लिए जो पैग़ाम उतारा है उसमें अच्छाई और बुराई, रोशनी और अंधेरा, और जीवन व मृत्यू एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। प्रति में और ख़ुद इंसानों के बीच रंग व रूप में विविधता पाई जाती है। लेकिन ज्ञान रखने वाला आदमी इस दिखाई देने वाली विविधता की गहराई में जा कर यह समझ सकता है कि प्रति और इंसानों के बीच यह विविधता अल्लाह की मंशा और उसके नियमों के अन्तर्गत किस तरह से एक सामंजस्य और समन्वय पर आधारित व्यवस्था का अंग है। वह ज्ञान कितना ऊंचा है जो इंसान को पैदा करने वाले के बारे में चिंतन मनन पर उभारे और उसके लिए रास्ता दिखाए।

पत्थरों, धातुओं, पेड़ पौधों और जीव जन्तुओं के विभिन्न तत्वों के बीच समन्वय कितना दिलचस्प है। सूरज की गर्मी ज़मीन पर पानी को भांप बना कर उड़ाती है, और हवाएं व पहाड़ बादलों को बनाते और उनसे पानी बरसाने का काम करते हैं जिससे ज़मीन के उन भूखण्डों में जीवन को तरी मिलती है जहाँ पानी के साधन नहीं है। इस तरह एक दूसरे के समन्यव से काम करना और एक दूसरे की कमी को पूरा करना, ज़ाहिर में अन्तर व भेद दिखाई देने के बावजूद यह दर्शाता है कि इस सृष्टि में विभिन्न तत्व और सक्रिय शक्तियां कितनी संगठित और एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। और यह कि अल्लाह की व्यवस्था जैविक और भौतिक रूप से कितनी सुन्दर है।

जो लोग वास्तविक ज्ञान की जिज्ञासा रखते हैं वो प्रति के दर्शनों को ज़ाहिरी रूप से देखने तक स्वयं को सीमित नहीं रखते बल्कि इससे आगे बढ़ कर उनकी सामूहिक व्यवस्था पर ग़ौर करते हैं और इस तरह उन्हें व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है और सृष्टि व उसके अलग अलग तत्वों के बीच आपसी सम्बंध का गहन बोध प्राप्त होता है, और वो अल्लाह की पूरी क़ुदरत

को समझने के क़रीब पहुंच जाते हैं ।

ऐसे ठोस और गहरे ज्ञान की रोशनी में अध्यात्मिक इकलौतापन, अन्तर व भेद और वर्गीकरण भौतिक और जैविक दायरों से कहीं अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य में दिखाई देते हैं। इसके बावजूद एक साधारण क्रम और आम निमय भी अपनी जगह मौजूद हैं। जो लोग जानते और यक़ीन रखते हैं वो इस विविधता में छिपी सच्चाई को पा लेते हैं। ये लोग हैं जो वास्तविक ज्ञान रखते हैं और अटकलों पर नहीं चलते और इस बात को समझने की योग्यता रखते हैं कि सृष्टि का जनक कितनी महान और युक्तिपूर्ण हस्ती है, और ये लोग दिल व दिमाग़ की गहराइयों से उसकी क़ुदरत, उसकी बादशाही और रहमत को महसूस कर लेते हैं।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

और जो आख़िरत की खेती चाहता है तो हम उसके लिये उसकी खेती में इज़ाफ़ा करेंगे और जो दुनिया की खेती चाहता है तो हम उसको उसमें से कुछ देंगे, और उसके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। (42:20)

जो लोग केवल इस दुनिया के भौतिक फ़ायदे और राहतें हासिल करने के लिए मेहनत और दौड़ धूप करते रहते हैं तो इस दुनिया में अल्लाह की मंशा और नियमों के चलते उन्हें उनकी जिज्ञासा और मेहनत का बदला पाने में सफ़लता मिलती है चाहे उनकी आस्था और कर्म कैसे ही हों। लेकिन ऐसा व्यक्ति दुनिया के इस जीवन में केवल भौतिक और नैतिक लिहाज़ से अच्छे लगने वाले कामों के बदले के रूप में अच्छे इंसानी सम्बंधों की बरकतें और नेअमतें हासिल करने से महरूम रहेगा और आख़िरत के जीवन में इससे कहीं अधिक नुक़सान देखेगा जो इस अस्थाई जीवन के बाद निश्चित रूप से शुरू होगा। ये बरकतें और नेअमतें तो उन लोगों को ही मिलेंगी जो आख़िरत के लिए काम करते हैं और अपनी असिल मंज़िल को पाने के लिए अध यात्मिक और नैतिक रूप से इस दुनिया में अपना जीवन बिताते हैं। (और देखें 11:15-16; 17:18-21), और इस तरह दोनों जगतों में इसका बहतरीन बदला पाते हैं (2:201; 3:148; 7:156; 10:64; 16:22; 28:77; 29:27)

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّ مَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا

तुम अपने रब का फ़रमान मान लो क़ब्ल इसके के वो दिन आये जिसके लिये अल्लाह की तरफ़ से हटना ना होगा, उस रोज़ तुम्हारे लिये कोई जाये पनाह ना होगी और ना ही तुम्हारे बारे में कोई रोक टोक करेगा। फ़िर अगर ये मुंह फ़ेर लें तो हमने आपको उनका निगेहबान बना कर नहीं भेजा, आपका काम सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचा

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿۴۸﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

देना है और जब हम इनसान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वो उस पर ख़ुश होता है, और अगर उनको उनके आमाल के सबब जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं कोई तकलीफ़ पहुंचती है, बिला शुबह इनसान बड़ा नाशुक्रा है। आसमानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह के लिये है, वो जो चाहता है पैदा कर देता है, जिसे चाहता है बेटियां अता करता है, और जिसे चाहता है बेटे अता करता है। या उनके बेटे और बेटियां दोनों इनायत फ़रमाता है, और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है, बेशक वो ख़ूब जानने वाला बड़ी क़ुदरत वाला है।

(42:47-50)

फ़ैसले का दिन निश्चित रूप से आएगा और अपनी जवाबदेही से या अल्लाह के फ़ैसले से कोई बच नहीं सकेगा, न कहीं पनाह ले सकेगा, और दुनिया में जो कुछ उसने किया होगा उससे इंकार करने का कोई मौक़ा उसे नहीं मिलेगा। अल्लाह तआला का पैग़ाम लोगों को भविष्य के बारे ख़बरदार करता है, लेकिन पैग़म्बर का काम केवल ख़बरदार करना और अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा देना है, दिल व दिमाग़ को झंझोड़ना और सत्य व सच्चाई की तरफ़ आकर्षित करना है, उनका काम किसी पर हिदायत को थोपना नहीं है, न किसी को मजबूर करना है क्योंकि हर व्यक्ति को अक़्ल और सूझबूझ और इरादे व पसन्द की आज़ादी दी गयी है।

ये आयतें हमें यह भी याद दिलाती हैं कि इंसान प्रायः कम नज़र और अदूरदर्शी होता है, और अपने मूड में आता रहता है, और वक्ती मज़ा, क्रोध और नाशुक्री की तरफ़ अग्रसर रहता है। लेकिन गहरे चिंतन और ज्ञान की बदौलत इंसान अपनी कमज़ोरियों पर क़ाबू पा सकता है। अल्लाह की रचना और उसमे सक्रिय क़ानून व व्यवस्था का सच्चे मन से अवलोकन करने और चिंतन मनन से काम लेने से इंसान का दिल और दिमाग़ अल्लाह की क़ुदरत व हिकमत को जान सकता है। इंसानी नस्ल के प्रजनन से इस दुनिया में हैरत अंगेज़ तरीक़े से इंसानी नस्ल का सिलसिला जारी रहता है जिससे परिवार और समाज पर गहरे प्रभाव पड़ते हें। पुरुषों और स्त्रियों का अनुपात परिवार और समाज दोनों में अलग अलग नतीजों का कारण बनता है। जिस जोड़े के पास कोई बच्चा नहीं होता उसे गहरे आपसी सम्बंधों का मौक़ा मिला होता है और समय की नेअमत उसे मिली होती हे, और जो कुछ उनके पास नहीं है उसकी कमी को वो इस तरह पूरा कर सकते हैं कि परिवार या समाज के बच्चों या किसी बच्चे को प्रेमपूर्वक पालन पोषण करें। अल्लाह पर ईमान बन्दे के जीवन की तंगियों से पैदा होने वाली दुशवारियों

से निकाल कर अपनी असीमित आनन्द की तरफ़ और सामूहिकता की बरकतों की तरफ़ ले जाता है।

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ
اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَ كَذٰلِكَ مَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى
اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ
اَوَ لَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ
عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾

बल्के वो कहते हैं के हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया है, और हम उन्ही के क़दम ब क़दम चल रहे हैं। और इसी तरह हमने आपसे पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने कहा के हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़ा पर पाया है, और हम क़दम-ब-क़दम उनके पीछे चलते हैं। रसूल ने कहा, मैं तुम्हारे पास ऐसा दीन लाया हूँ जो तुम्हारे बाप के दीन से बेहतर रास्ते पर ले जायेगा, तो उन्होंने कहा के हम तो उसको मानने वाले नहीं हैं जो तुम को देकर भेजा गया है। तो हमने उनसे बदला लिया, सो देख लो, झुटलाने वालों का अंजाम क्या हुआ।

(43:22-25)

पिछली कई आयतों में इंसानों का ध्यान अल्लाह की बनाई सृष्टि या इंसान सहित समस्त जनतुओं और उनमें सक्रिय अल्लाह के नियमों, क्रम व्यवस्था, समन्वय और सामंजस्य पर दिलाने के बाद यहाँ क़ुरआन उन लोगों से तकरार करता है जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाने की की दावत को घमण्ड के साथ रद कर देते हें। क्या ये मख़लूक़ बिना किसी चीज़ के पैदा हो गयीं, या बग़ैर किसी के पैदा किए पैदा हो गयीं, या बिना किसी उद्देश्य के पैदा हो गयीं? क्या ये सब किसी घटना के नतीजे में नमूदार हो गयीं, क्या ये ख़ुद ब ख़ुद बन गयीं? एक अल्लाह का इंकार करने वाले लोग सृष्टि की रचना के बारे में एक युक्तिपूर्ण और सर्वशक्तिमान रचनाकार के वजूद को मानने के नज़रिए के मुक़ाबले कोई दूसरा ऐसा नज़रिया पेश नहीं कर सकते जो ख़ुद उन के अपने या दूसरों के लिए समझ में आने वाला और स्वीकार्य हो। वो लोग अल्लाह के पैग़म्बरों से यही हुज्जत करते रहे कि वो उसी की पैरवी करते हैं जो ख़ुद उनके बाप दादा मानते और करते आए हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी जो कुछ होता आया है। ये लोग सामाजिक जीवन में और अक़ीदे के मामले में जूं की तूं स्थिति को बनाए रखने के पक्षधर हैं और किसी बदलाव के ख़िलाफ़ हैं, क्योंकि वो एक मौज व मस्ती वाले जीवन के मज़े लूट रहे हैं और इस दुनिया के आनन्द के आदी हो गए हैं। हालांकि यह अदूरदर्शिता, स्वार्थपूर्ति और भौतिकतावाद की तरफ़ लगे हुए दिमाग़ ख़ुद अपनी तबाही का सामान बनते हैं। ये स्वार्थी और मेटीरियलिस्ट स्वयं को जीवन के उतार व चढ़ाव का सामना करने के लिए तैयार नहीं पाते और

उसकी विपरीत स्थितियों के साथ ख़ुद को ढालने के योग्य नहीं होते और बदलती हुई स्थितियों में संयम व धीरज और अपनी प्रगति की क्षमता को बनाए रखने के गुण नहीं रखते, और इस तरह वो लम्बे समय तक जीवित रहने में असफ़ल हैं।

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ
الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾ اَلشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۬ۙ﴿۵﴾ وَّ النَّجْمُ وَ الشَّجَرُ
يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَ وَضَعَ
الْمِيْزَانَ ۙ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَ
اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَ لَا تُخْسِرُوا
الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَ الْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ﴿۱۰﴾
فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّ النَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۙ﴿۱۱﴾
وَ الْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَ الرَّيْحَانُ ۚ﴿۱۲﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾

रहमान ने। क़ुरआन की तालीम दी। उसी ने इन्सान को पैदा किया। उसी ने उसको बोलना सिखाया। सूरज और चांद (एक मुक़र्ररा) हिसाब से (चल रहे हैं)। सब्ज़े और दरख़्त सज्दे करते हैं। और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराज़ू क़ायम की। ताके तुम तोलने में कमी बेशी ना किया करो। और इन्साफ़ के साथ ठीक तोला करो और तोल में कमी ना किया करो। और उसी ने ख़ल्क़त के लिये ज़मीन बिछाई। इसमें मेवे और ग़िलाफ़ वाला खजूरें। और भूस के साथ अनाज और खुशबूदार फ़ूल हैं। तो ऐ जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेमत को झुटलाओगे। (55:1-13)

इस सूरत के विषय और शैली से इस विचार का समर्थन होता है कि यह सूरत मक्का के युग में उतरी है लेकिन कुछ क्लासिकल व्याख्याकारों का विचार यह भी है कि यह मदनी युग सूरत है। इस सूरत के विषयों में और इसके अंदाज़ में एक अल्लाह पर ईमान का एक शानदार क़ुरआनी नैरेटिव देखा जा सकता हे। उस अल्लाह पर ईमान का जिसका अपनी मख़लूक़ के साथ सम्बंध दया व पा पर आधारित है, यह अल्लाह की वह ख़ास गुण है जिसके इज़हार के साथ यह सूरत शूरू होती है और वही इस सूरत का नाम भी है यानि अर्रहमान। ये आयतें क़ुरआन के अवतरित होने और इंसान व सृष्टि की रचना की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं। इन आयतों में एक काव्यात्मक शैली और आपसी सम्बंध है। सूरज व चांद और दूसरे सितारों की अपनी अपनी कक्षाओं में परिक्रमा और अंतरिक्ष की मौजूदगी और तरह तरह के पेड़ व पौधों जैसे अनाज, फल, खजूरें, फूलों वग़ैरह का परवान चढ़ना लगे बंधे हिसाब किताब, निर्धारित नियमों और पूरे सामंजस्य व समन्वय पर आधारित हैं, मिसाल के तौर पर न सूरज चांद से आगे निकल सकता है, न रात दिन के अन्तराल को कम कर सकती है, क्योंकि हर एक सितारे या सय्यारे की परिक्रमा उसकी अपनी कक्षा में है (36:40)। और हम ने हर चीज़ को इस (ज़मीने) पर उगाया एक संतुलित तरीक़े से (19:150)। इस तरह का हिसाब, नियम और समन्वय इंसान

के गुणों में भीदेखा जा सकता है, चाहे वो रूहानी गुण हों, बौद्धिक हों, शरीरिक हों या भौतिक हों: हम ने इंसान को बहतरीन साख्त पर पैदा किया है (95:4)। क़ुरआन इंसान को यह बताता है कि अपने आप में, दूसरे व्यक्तियों के साथ, और सृष्टि के साथ समन्वय कैसे बना कर रखा जाए: तो तुम एक तरफ़ के होकर दीन के रस्ते पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) अल्लाह की प्रति को जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है (अपनाए रहो), अल्लाह की बनाई हुई (फ़ितरत) में बदलाव नहीं हो सकता यही सीधा दीन लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (30:30)। पूरी सृष्टि अपने विभिन्न तत्वों और दर्शनों के साथ कसे हुए नियमों से बंधी हुई है। ये नियम एक दूसरे से मिल कर इस व्यवस्था और संतुलन को बनाए हुए हैं, जो अल्लाह की क़ुदरत और हिकमत को और मख़लूक़ात के साथ उसकी रहमत व करम को ज़ाहिर करते हैं। ख़ास तौर से इंसान के मामले में तरह तरह की शक्तियों का एक संतुलन बना हुआ है जो व्यक्ति के अन्दर भी रहना चाहिए। दूसरे लोगों के साथ सम्बंधों को बनाए रखने में भी इंसान को नैतिक और सामाजिक संतुलन रखना चाहिए ताकि उचित सीमाओं में रहा जाए और उन सीमाओं को पार न किया जाए। समाज में इस तरह का संतुलन और स्थिरता क़ायम करने और बनाए रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ इंसाफ़ है। सही और ग़लत मे फ़र्क़ करते समय इफ़रात व तफ़रीत (अतिवाद) से बचना और उसी के मुताबिक़ अपने रवैये को संतुलित रखना इंसान को मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक लिहाज़ से संतुलित रखता है, ख़ुद अपने व्यक्तित्व के बारे में भी और दूसरे लोगों के साथ भी, जिस तरह यह सृष्टि और जीवन भौतिक व्यवस्था की सृष्टि से संतुलित बनी हुई है।

शुरूआती युग के मुफ़स्सिरों के मुताबिक़ सूरत अर्रहमान जिस में निम्नलिखित आयतें आई हैं, बार बार इंसानों और जिन्नों को सम्बोधित करती है: आख़िर तुम अपन रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुटलाओगे ?ऐसा लगता है कि जिन्न अपने गुणों में और अपने स्वभाव में इंसानों से अलग हैं (15:127; 55:14-15), लेकिन दोनों के पास कुछ ख़ास योग्यताएं हैं और इसीलिए क़ुरआन दोनों को मुख़ातिब करता है हालांकि यह माना जा सकता है कि इस सम्बोधन में दोनों का जवाबी ढंग उनकी अलग अलग स्थितियों के लिहाज़ से अलग अलग होगा। लेकिन मशहूर मुफ़स्सिर अलराज़ी ने यह सम्भावना व्यक्त की है कि असद ने 'सबसे ज़्यादा स्पष्ट व्याख्या' कहा है। यूसुफ़ अली ने लिखा है कि पूरी सूरत एक तारगम्य गीत है जो तौहीद (अल्लाह के एक होने की आस्था) की तरफ़ लेजाता है. हर चीज़ को हम ने जोड़े जोड़े पैदा किया है (51:49; 36:36)। इंसाफ़ दो तकरार के साथ आने वाली आयतों में सम्बोधन का यह दोहरा ढंग मर्दों व औरतों पर लागू होता है।, इस विचार को मुहम्मद अलग अलग चीज़ों को एक होने के लिए राज़ी करना है, और इफ़रात व तफ़रीत के बीच अद्ल (संयम) बनाना है। इस सूरत में जो धारणाएं और विषय पेश किए गए हैं वो एक दूसरे से जोड़ कर दिए गये हैं:

जैसे आसमान और ज़मीन, फल और अनाज, इंसानों के आहार और जानवरों का चारा, पनपने वाली चीज़ें और ख़ुशबू देने वाली चीज़ें वग़ैरह वग़ैरह। फिर इंसान और जिन्न का ज़िक्र है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝٢ هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ
وَ الْبَاطِنُ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٣ هُوَ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا
يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا
يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَ هُوَ
مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝٤ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ
اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ؕ وَ هُوَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَ اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ
وَ اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧ وَ مَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ
عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝٩

सारी मख़लूक़ात जो आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बयान करती है, और वो ज़बरदस्त हिकमत वाला है। आसमानें और ज़मीन की बादशाहत उसी के लिये है, वही ज़िन्दा करता और वही मारता है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। वही अव्वल है और वही आख़िर है और जो वही ज़ाहिर है और वही बातिन है और वही हर चीज़ को ख़ूब जानता है। वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फ़िर अर्श पर क़ायम हुआ, जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती है और जो चीज़ इससे निकलती है, और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसकी तरफ़ चढ़ती है, वो सब ख़ूब जानता है और वो तुम्हारे साथ होता है जहाँ कहीं भी तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसको ख़ूब देख रहा है। आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी की है, और तमाम उमूर अल्लाह ही की तरफ़ रूजू होते हैं। वही रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वही दिलों के राज़ ख़ूब जानता है। तुम सब अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उस माल में से ख़र्च किया करो जिस में उसने तुम को दूसरों का ख़लीफ़ा बनाया है तो जो तुम में से ईमान लायें और माल ख़र्च करें, उनके लिये बड़ा सवाब है। और तुम को क्या हुआ के अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि उसके रसूल तुम को बुला रहे हैं के अपने रब पर ईमान लाओ, और वो तुम से अहद ले चुका है अगर तुम को ईमान लाना हो। वही तो है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात उतारता है ताके तुम को अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाये, और बिला शुबह अल्लाह तुम पर शफ़्क़त करने वाला रहम करने वाला है। (57:1-9)

ये आयतें अल्लाह के उन गुणों के अलावा जो कि सब को मालूम हैं जैसे क़दीर, अलीम, हकीम, रब्बुल आलमीन... आदि कुछ दीगर गुण बयान करती हैं। वह अव्वल (प्रथम) है और आख़िर (अन्त) है। यानि, मुहम्मद असद के शब्दों में उसकी हस्ती चूंकि आदि से अन्त तक है इसलिए न तो कोई उससे पहले था और न उसके अमर वजूद के पार किसी का वजूद है। इसके अलावा तमाम मौजूदात को उसी ने वजूद बख़्शा है और उसकी हस्ती तमाम मौजूदात से ऊपर है और अपनी तख़लीक़ के हर दर्शन में उस का जलवा है। यद्यपि अल्लाह का वास्तविक रूप इंसान की कल्पना शक्ति से परे है और इन्द्रियों व अक़ल में वह नहीं समा समकता और उसे इस दुनिया में नहीं देखा जा सकता (देखें 255; 7:143) लेकिन अल्लाह के मौजूद होने के ऐसे सुबूत उपलब्ध हैं जो इंसान की समझ में आ सकते हैं और ये सूबूत चारों ओर दिखाई देते हें। जैसा कि प्रसि) व्याख्याकार अलज़मख़शरी ने लिखा हैः 'अल्लाह की मौजूदगी उसके कामों के प्रभावों से ज़ाहिर है, जब कि वह ख़ुद इंसानी इन्द्रियों की पहुंच से बाहर है।ष इन आयतों में अल्लाह के जो गुण बयान हुए हैं उन्हें समझने में अल्लाह के रसूल की एक हदीस से मदद मिलती है जो इमाम मुस्लिम ने नक़ल की हैः ऐ अल्लाह सबसे पहले आप की हस्ती है, आप से पहले कोई नहीं और सबसे आख़िर भी आप की हस्ती है बस आप के बाद कोई नहीं, आप ज़ाहिर (विदित) हैं कोई आप से ऊपर नहीं और आप गुप्त हैं और कोई आप से .ज्यादा गुप्त नहीं।

अल्लाह ने ज़मीन और आसमान को छः अवधियों में पैदा किया क्योंकि शब्द यौम जो क़ुरआन में स्तेमाल हुआ है उसका मतलब अवधि है उसे ज़मीन के चौबीस घण्टों पर आधारित दिन के रूप में नहीं समझा जा सकता क्योंकि ऐसा समझना उन स्थितियों में बिल्कुल अनुचित होगा जो ज़मीन और सूरज के सम्बंध से जुड़े दिन से बिल्कुल भिन्न हैं, ख़ास तौर से इस स्थिति में कि सौर मण्डल के वजूद से पहले ही अल्लाह ने ज़मीनों और आसमानों को पैदा किया और दिन की अवधि छः योम बताई। क़ुरआन में कहा गया है कि अल्लाह का एक दिन दुनिया में हमारे दिनों की गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल के बराबर है (22:47), या पचास हज़ार साल के बराबर भी हो सकता है (70:4)। यूसुफ़ अली लिखते हैं कि सृष्टि के कुछ विशेष ज़ाहिरी रूप अल्लाह के हुक्म से विकास प्रक्रिया के छ चरणों में पूरे हुए। लेकिन उसकी सृजन क्रिया अभी भी जारी है, और वह ख़ुद स्थिर है और स्थिर रहेगा और अपने अर्श पर ब्राजमान रहेगा हर चीज़ से बाख़बर और हर मामले में रहनुमाई देने वाला। यह ज़मीन पर जो कुछ भी है उसे अल्लाह जानता है, और जो कुछ ज़मीन के अन्दर और आसमानों में है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है उसे भी जानता है, और इस सृष्टि में जो कुछ भी होता रहता है उन तमाम बातों से वह हमैशा अवगत रहता है।

रात और दिने का लगातार एक दूसरे के पीछे आते जाते रहना और विभिन्न मौसमों में

उनका अन्तराल अलग अलग होना अल्लाह की क़ुदरत व हिकमत और जीवों के प्रति उसकी दया का प्रतीक है जो हर रोज़ हमारे देखने में आता है। इस का ज्ञान इंसान के नफ़्स की गहराइयों तक पहुंचा हुआ है जिस तरह रात के अन्धेरे में उसके ज्ञान की पहुंच है। हर मामले का अंजाम आख़िरकार उसी के दरबार में होना है, क्योंकि सब कुछ उसके बनाए हुए नियमों से ही कन्ट्रोल होता है। जब कभी भी इंसान को अक़ली या रूहानी लिहाज़ से कोई ज़ाहिरी ताक़त या दौलत प्राप्त होती है तो यह ताक़त व दौलत उसे अल्लाह बख़्शता है ताकि यह देखे कि वह उसे किस तरह बरतता और इस दुनिया में अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक ज़िम्मेदारियों को किस तरह पूरा करता है। इंसान को ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) के रूप में बसाया गया है (11:16), और अल्लाह ने उसे जो सलाहियतें और लियाक़तें दी हैं उनके द्वारा उसकी आज़माइशे यानि परख होती है। जिस को कोई ताक़त दी गयी है वह उस पर अपना पूरा अधिकार नहीं जता सकता, बल्कि उसे उस ताक़त को अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार स्तेमाल करना चाहिए। कोई भी ताक़त समाज के माध्यम से विक्सित होती है और इसलिए यह बिल्कुल स्वभाविक और उचित बात है कि व्यक्तियों की कमाई पर समाज का हक़ हो जो कि व्यक्ति समाज और अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बंध स्थापित करके ही प्राप्त करता है। विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत योग्यताओं पर समाज के हक़ को इस्लाम के विधिशास्त्रियों (फ़क़ीहों) ने अल्लाह के हक़ के रूप में माना है क्योंकि अल्लाह और आख़िरत पर ईमान स्वार्थपूर्ति और लालच से मुक्ति का वास्तविक माध्यम है। हर व्यक्ति को अल्लाह ने जो कुछ भी दिया है उसे अल्लाह की उस हिदायत के मुताबिक़ स्तेमाल करना उस पर वाजिब है जिसे भेजने का वायदा अल्लाह ने इंसानों से ले रखा है (2:38-39; 20:123-126), और जो रूहानी व अक़ली योग्यताएं इंसान को दी गयी हैं वो उसे ख़ुद अपने और दूसरों के फ़ायदे के लिए स्तेमाल करनी हैं (7:172 39:9; 91:7-10)। उसे स्वयं अपने आप से यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि वह किसी भी मामले में कोई फ़ैसले करने से पहले अपनी अक़ली और रूहानी शक्तियों को उचित रूप से स्तेमाल करेगा, ख़ास तौर से अल्लाह के पैग़ाम के बारे में जो कि अल्लाह ने इंसानों की मदद करने के लिए भेजा है जैसा कि उसने वायदा कर रखा है। उसे अल्लाह रहीम व करीम का भी शुक्रगुज़ार होना चाहिए जिसने इंसान को शक्ति व ऊर्जा दी है ताकि वह अपनी पूरी क्षमताओं के अनुसार उसे स्तेमाल करे।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا

तुम जान रखो! के दुनिया की ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा, और ज़ीनत व आराईश, और तुम्हारा आपस में फ़ख्र करना, और माल और औलाद में एक दूसरे से ज्यादा तलाब की ख्वाहिश, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे

ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝٢٠
سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۙ
اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ
فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢١ مَآ اَصَابَ مِنْ
مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا
فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٢٢ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا
فَاتَكُمْ وَ لَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝٢٣

बारिश से खेती उगती है और किसानों को भली लगती है फ़िर वो सूख जाती है तो तू उसकी ज़र्द देखता है, फ़िर वो चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में (काफ़िरों के लिये) सख़्त अज़ाब और (मोमिनों के लिये) अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और ख़ुशनूदी है, और दुनिया की ज़िन्दगी तो महज़ धोके का माल है। (ऐ बन्दों) अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ लपको! जिसका अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ का सा है, वो उन लोगों के लिये तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाये हैं, ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अता करे, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। कोई मुसीबत मुल्क पर और ख़ुद तुम पर नहीं पड़ती मगर वो एक किताब में लिखी हुई है, क़ब्ल इसके के हम उसको पदा करें, ये काम अल्लाह को आसान है। ताके तुम उसका अफ़सोस ना करो, जो तुम से फ़ौत हो गया, और उस पर ना इत्राया करो जो उसने तुम को दिया, और अल्लाह किसी इत्राने वाले शेखी खोरे को पसंद नहीं करता। (57:20-23)

जब यह दुनिया ही कुछ लोगों के लिए उनका उद्देश्य और लक्ष्य बन जाती है तो वो उसके मज़े लूटने में इतने मगन हो जाते हैं कि वो अपना संतुलन खो बैठते हें। क़ुरआन इस आयत और इस जैसी दूसरी आयतों के द्वारा इंसानों के दिल व दिमाग़ को इस जीवन की सच्चाई से बाख़बर करता है और उसे एक लम्बे समय की राहत व आनन्द की अपेक्षा अस्थाई और अनिश्चित समय के आनन्द वाली जगह समझाता है और यह सीख देता है कि इंसान का जीवन इस दुनिया के जीवन और इसके बाद मिलने वाले जीवन पर आधारित है और दोनों को मिलाकर मुकम्मल (पूरा) होता है। लोग इस जीवन में दौलत, संतान और प्रभाव व रसूख़ हासिल करने की दौड़ में लगा रहते हैं, और ऐसा करने में उचित और जायज़ सीमा से आगे निकल कर अपनी अधिकतर ऊर्जाएं व्यर्थ कर देते हैं, और लालच, जलन और प्रतिस्पर्धा में मुब्तिला होते हैं, और जीवन के उतार व चढ़ाव के साथ उनके मूड बदलते रहते हैं, कभी वो इतराने लगते हैं और कभी दुखी, व्यथित और निराश होते हैं। वो तंगनज़री (संकीर्णता) में फंस कर स्वंय अपने आप को और अपने समाज को नुक़सान पहुंचाते हैं क्योंकि हर माध्यम से

अपनी दौलत को बढ़ाने और ऐश व मस्ती में खर्च करने की धुन में गिरतार हो कर अपने क़ीमती जीवन को तबाह करते रहते हैं। वो अपनी दौलत को अपने आप को शरीरिक और अध यात्मिक रूप से नुक़सान पहुंचाने वाले कामों में खपाते हैं, जबकि उनके जैसे दूसरे बहुत से इंसान भूक से, मौसमों की शिद्दत से और बीमारियों से मर रहे होते हैं, जिनकी परवाह उन्हें नहीं होती। ऐसे लोग बचकाना हरकतों में मुब्तिला होते हैं और जीवन के वास्तविक आनन्द व राहत से वंचित रहते हैं।

इस दुनिया में ख़ुशी व आनन्द प्राप्त करना इस तरह तो एक जायज़ बात है कि एक संतुलित तरीक़े से आनन्द लिया जाए और सही ष्टिकोण के साथ उन्हें बरता जाए। इस दुनिया में अल्लाह की पा तमाम इंसानों के लिए आम है (17:18-21), और इसके लिए बारिश की मिसाल बिल्कुल फ़िट है जो ऊपर दी गयी है। जब बारिश होती है तो समझदार लोग उसके पानी को पौधों की बढ़ोतरी के लिए स्तेमाल करते हैं, और उससे पैदावार प्राप्त करते हैं। जबकि दूसरे लोग केवल बहार के नज़ारे देख कर ही ख़ुश हो जाते हैं और पत झड़ व सूखे पन दूर हो जाने का मज़ा लेते हैं जबकि न तो उन पेड़ों की कांट छांट करते हैं, न उनकी देखभाल करते हैं, न उनकी हरियाली से फ़ायदा उठाते हैं। इस तरह की कमनज़री का ऐसा ही नतीजा उन लोगों के लिए भी है जो केवल निजी इच्छाओं व आवश्यकताओं को पूरा करने में लगे रहते हैं, उनके मक़सद को पूरा नहीं करते और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं करते, जिनको करने से वो जीवन को और अधिक उपयोगी बना सकते हैं और जिनके नतीजे में इस दुनिया के आनन्द और अधिक गहरे हो सकते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि स्वयं को पहचानना, स्वयं को तरक़्क़ी देना और दूसरों से मुक़ाबला करने की इंसानी प्रवृत्ति को ग़लत समझा जाए और कुचल दिया जाए बल्कि इन प्रवृत्तियों और साहस को अच्छे उद्देश्यों के लिए काम में लाया जाए ना कि दूसरों को नुक़सान पहुंचाने के लिए और अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर इनको पूरा किया जाए। इस्लाम व्यक्ति की प्रतिभाओं को कुचलता नहीं है और ना ही सभी ईमान वालों को एक ही ढंग पर ढालना चाहता है, सभी ईमान वालों को अल्लाह की हिदायत का अनुसरण करने और दुनिया व आख़िरत में अल्लाह के इनाम हासिल करने के लिए एक दूसरे से प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा करना चाहिए "(नेअमतें चाहने वालों को) चाहिए कि इसी (जन्नत में मिलने वाली नेअमतें) को प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा करें (83:26)।" लेकिन एक जायज़ मुक़ाबले और आपस की दौड़ में कामयाब होने वाले को घमण्ड में या नाकाम होने की निराशा में नहीं पड़ना चाहिए। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान इंसान के व्यक्तित्व में संतुलन और स्थिरता बनाए रखने में मददगार होता है, चुनांचि इस तरह इंसान की ऊर्जा और सृजन शक्तियां व्यर्थ नहीं होतीं।

अल्लाह ने इंसान की फ़ितरत (प्रति) जिस तरह से बनाई हे उससे इंसान फ़ैसला करने और आज़ादी के साथ अपनी पसन्द के मुताबिक़ चुनने और चयन करने का मौक़ा हासिल करता है। लेकिन होमोसीपियन (इंसानों) को अपनी पसन्द और फ़ैसले के नतीजों को क़ुबूल करना चाहिए और ज़ाहिर की चमक दमक से धोखे में नहीं पड़ना चाहिए। सही आचार विचार से व्यक्ति और समाज में संतुलन क़ायम रहता है, और इस तरह इंसान की पूरी शरीरिक, अक़ली और मनोवैज्ञानिक व अध्यात्मिक ऊर्जा बनी रहती है और पूरी तरह विक्सित होती है। अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमे की एक हदीस इस की तरफ़ इशारा करती है: मोमिन बन्दे बन्दी का मामला भी अजीब है, उसके हर मामले में उसके लिए भलाई ही भलाई है, अगर उसको ख़ुशी और राहत व आराम मिलता है तो वह अपने रब का शुक्र अदा करता करती है और इसमें उसके लिए भलाई ही भलाई है, और अगर उसको कोई दुख व पीड़ा पहुंचती है तो वह उस पर सब्र करता है करती है और यह सब्र करना भी उसके लिए पूरी तरह भलाई और बरकत की बात है (मुस्लिम, इब्ने हंबल और इब्ने माजा)। इस बात को समझ लेना और मान लेना कि हर चीज़ की शुरूआत व स्रोत और अन्त अल्लाह ख़ुद है आदमी को और ज़्यादा संतुलित बनाता है और समाज और अधिक एकजुट, सहयोगी और ठोस होता है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ
الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ
لَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ
اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَ اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ
يُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا
عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ
اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٢٢

जो लोग अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं तुम उनको अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए ना देखोगे, ख़्वाह वो उनके बाप या बेटे या भाई या ख़ानदान ही के लोग हों ये वो लोग हैं जिनके दिलों मे अल्लाह ने ईमान तहरीर कर दिया है और अपने फ़ैज़ से उनकी मदद की है, और वो उनको बहिश्त में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही हैं हमेशा वहीं रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वो अल्लाह से राज़ी हुए, यही गिरोह है अल्लाह का, ख़बरदार अल्लाह ही का गिरोह अपनी मुराद पायेगा।

(58:22; और देखें 5:56; 35:6; 58:19)

यहाँ क़ुरआन ईमान वालों को अल्लाह की हस्ती के साथ जोड़ कर देखता है, जो उसके मक़सद को पूरा करने के लिए उसकी दी हुई हिदायत का अनुसरण करते हैं और उसके रास्ते में मेहनत व मुशक़्क़त करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों को जो ख़ुद अपने लिए ही जीते हैं और दुनिया के स्वाद लेने में ही मगन रहते हैं, शैतान का साथी क़रार देता है (58:19 और देखें 5:56; 35:6)। दोनों पक्षों के लिए क़ुरआन में अवलिया यानि समर्थक और सहायक का

शब्द स्तेमाल किया गया है (2:275; 3:68,122; 175:4 5-77,119; 6:121,127-128; 7:27,30,55,196; 10:62-63; 12:101: 16:63,100; 18:50; 25:18; 29:22 41:31; 42:31)। यह गुटबंदी जो अक़ीदे के आधार पर बनती है, एक ऐसी गुटबंदी को ज़ाहिर करती है जिसमें वफ़ादारी और सम्बंध का आधार अपना समुदाय या अपना गुट है, सिद्धांत और मूल्य नहीं हैं या यूं कहा जाए कि तौर तरीक़े एक जैसे होना है उनकी उपयोगिता और प्रासंगिकता आधार नहीं है। क़ुरआन पिछली किताबों के मानने वालों के लिए इस ज़ाहिरी और सतही पहचान की निन्दा करता है (3:104,110,114; 5:79; 7:157; 9:71,112; 16:90; 22:41; 24:21; 29:45; 31:17)। अल्लाह के नाम पर बनने वाली सामूहिकता और उसके मक़सद और मूल्यों के साथ ख़ुद को पहचानने का मतलब है हद से बढ़े हुए अतिवाद और स्वार्थवादिता को रोकना। इस तरह अल्लाह के साथ किसी का ख़ुद को वाबस्ता करना उसे हर समय यह याद दिलाता है कि वह केवल अपनी जाति या समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करता/करती बल्कि वह एक विश्वव्यापी जमाअत का हिस्सा है और वह अपने पैग़ाम को पेश करने का/की पाबन्द है जो बुनियादी तौर पर लोगों के चरित्र और संस्कारों को सुधारने का पैग़ाम है।

अल्लाह के नाम पर जिससे मोमिन बन्दा या बन्दी वाबस्ता होता/होती है और पहचाना जाती/जाती है, तमाम इंसान बराबर हैं और अल्लाह की तरफ़ से आदम की औलादों को जो प्रितिष्ठा दी गयी है उसके हक़दार हैं (17:70), चाहे उनकी नस्ल या जाति या प्लग, आस्था और आयु कुछ भी हो। यह केवल अल्लाह की हस्ती है जिसके समान कोई नहीं है (42:11; 112:4)। इसी तरह अल्लाह के नाम पर जुड़ने से केवल एक ग्रूप या यूनिवर्सल ब्लाक नहीं बनता बल्कि उसकी बदौलत इंसान तंग दायरों से बाहर निकलता है और एक ऐसी दुनिया में क़दम रखता है जिसमें आदम की सभी औलादों से उसका सम्बंध स्थापित होता है और वह इंसानियत के समान नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए खड़ा होता है जिन्हें तमाम इंसान अपनी सामान्य बुि और परम्परागत सोच से मानते और स्वीकार करते हें। अरबी के शब्द मअरूफ़ और मुनकर इस्लाम की विशेष शब्दावलियां हैं। मअरूफ़ वह बात है जो हमैशा और हर जगह अच्छी मानी जाए, और मुनकर वह है जिसे अधिकतर लोग अपनी अक़्ल और सूझ बूझ से ग़लत और रद करने योग्य मानते हैं। यहाँ तक कि जो लोग आज शैतान की टोली में शामिल हैं उन्हें भी मुस्तक़िल दुशमन नहीं माना जा सकता क्योंकि हर इंसान के अन्दर भलाई की तरफ़ आने का रूजहान मौजूद है और वह कल पलट कर भलाई की तरफ़ आ सकता है, चाहे आज उसका अक़ीदा और अमल कुछ भी हो (60:7), इसलिए दुशमनी और झगड़े को कम से कम हद में रखा जाना चाहिए (60:8-9)।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾

वही ख़ुदा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, वो पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला है, वो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है। वही ख़ुदा है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वो हक़ीक़ी बादशाह है, पाक है, सलामती देता है, अमन देता है, निगहबान है, वही ज़बरदस्त है, दुरूस्त करने वाला है, बड़ाई वाला है, अल्लाह पाक है लोगों के शिर्क से। वो अल्लाह है, पैदा करता है, ईजाद करता है, सूरतें बनाता है, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं (सब) उसकी पाकी बयान करते हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं, और वही ज़बरदस्त है (और) हिकमत वाला है। (59:22-24)

यहाँ अल्लाह के कुछ गुण एक साथ बयान किए गए हैं जो संगीत की ध्वनि में पेश किए गए हैं और एक दूसरे के साथ मिलकर अल्लाह की हस्ती को बयान करते हैं। अल्लाह के गुणों का यह संग्रह अल्लाह की तौहीद (एक होने) पर ज़ोर के साथ शुरू होता है और उन शब्दों में यह तौहीद बयान की गयी है जिन शब्दों में इस्लाम के तौहीद के अक़ीदे को बयान किया जाता है, ला इलाहा इल्ला हु (अल्लाह), अल्लाह ही इलाह (पूजनीय) है और उसके सिवा कोई इलाह नहीं है। उसकी क़ुदरते तख़लीक़ (पैदा करने की शक्ति) को तीन विशेष नामों से बयान किया गया है जिनके बीच एक बारीक सा अन्तर हैः अलख़ालिक़ अर्थात जिसने पहली बार बग़ैर किसी नमूने के पैदा किया और इतनी ख़ूबी से पैदा किया कि हर चीज़ अपनी कारकर्दगी के लिए पूरी तरह अनुकूल है और पूरी सृष्टि में जिसका जो स्थान है वहाँ वह फ़िट है और किसी भी तरह के विरोधाभास से बची हुई है। वही है जो हर चीज़ की रूप रेखा बनाता है। तख़लीक़ (पैदा करने) का मामला एक सम्पूर्ण प्रक्रिया का हिस्सा है और वो तीनों गुण इस बात को स्पष्ट करते हैं कि अल्लाह अकेला है और एक ही हस्ती है, जो अपने जीवों को रंग व रूप, विशेषताएं और ख़ूबियां देता है, और जीवों को तरह तरह से और अलग अलग पहलुओं से जीवन देता है। अल्लाह की तख़लीक़ यानि सृष्टि के बारे में आसमानी ज्ञान और इस बात को जानना कि यह किस तरह काम करती है सामूहिक रूप से इस अमल के लिए ज़रूरी है। अल्लाह यह बात जानता है कि क्या चीज़ उसकी मख़लूक़ के विचार की पहुंच से बाहर की है और यह कि उसकी कोई मख़लूक़ आंशिक रूप से क्या कुछ अपनी अक़ल या इन्द्रियों के ज़रिए जान और समझ सकती है। इन आयतों में उसके गुणों के ज़रिए से उसकी क़ुदरत को बयान किया गया है जैसेः वह मलिक अर्थात बादशाह है यानि असिल हूकूमत उसी की है, वह क़ुद्दूस है यानि वह

कोई काम ग़लत नहीं करता, अलअज़ीज़ है यानि हर चीज़ पर पूरी पकड़ रखता है, जब्बार है और मुतकब्बिर है यानी सारा ज़ोर और सारी बड़ाई उसी के लिए है। लेकिन अल्लाह की क़ुदरत व ताक़त से, उसके ज्ञान से और उसके बल पर सृष्टि चल रही हे, इन सब के बावजूद वह दयालू और महरबान है, वह सलामती देने वाला है, शान्ति देता है और निगरानी करता है। चुनांचि अल्लाह का अपनी मख़लूक़ (जीवों) के साथ सम्बंध रहम व करम का है वह सब से अज़ीम ताक़त और पकड़ रखने वाला है। इस्लाम की फ़िलासफ़ी में अल्लाह क़ादिर मुतलक़ (सेम्पूर्ण और निरंकुश शक्ति वाला) है, जिसका न्याय कठोर है और सज़ा बहुत कड़ी। इसी के साथ वह रऊफ़ और रहीम यानि मुहब्बत करने वाला और रहम करने वाला है, बहुत ही महरबान औरे ख़ताओं को मआफ़ करने वाला है। ये गुण अल्लाह में निश्चित रूप से एक साथ हैं, और इन गुणों को एक से अधिक ख़ुदाओं में अलग अलग नहीं बांटा जा सकता। यह एक ही हस्ती में समाए हुए हैं। ये इंसान के लिए एक आइडियल के रूप में कामिल व अकमल (सम्पूर्ण गुणों वाली) हस्ती की धारणा देती हैं जो इंसानों का मार्गदर्शन कर सकती है, तथापि इंसान इस बात से आगाह हैं कि अल्लाह की कामिल व अकमल ज़ात उसका कोई भी विशेष गुण और इन विशेष गुणों की कुल स्थिति उससे कहीं बुलन्द व बाला है जहाँ तक इंसान की उमंगों या आरजुओं की उड़ान हो सकती है। इसके अलावा अज़ीज़, जब्बार और मुतकब्बिर जैसी सिफ़ात केवल उस हस्ती के लिए स्तेमाल की गयी हैं जिसका कोई समतुल्य नहीं है (42:11), कोई उस जैसा नहीं है (112:4)। किसी इंसान के लिए इन गुणों को बयान करना उसके लिए निन्दनीय है, इन शब्दों के द्वारा उसका गुणगान नहीं किया जा सकता।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ
الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ
الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ
الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ كَلَّاۤ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۙ﴿۶﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ؕ﴿۷﴾ اِنَّ
اِلٰی رَبِّكَ الرُّجْعٰی ؕ﴿۸﴾

(ऐ मोहम्मद (स०अ०स०) अपने रब का नाम लेकर पढ़ो जिसने आलम को पैदा किया। जिसने इन्सान को ख़ून की फुटकी से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा करी है। जिसने क़लम (के ज़रिये) से लिखना सिखाया। इन्सान को वो बातें सिखाईं जो वो नहीं जानता था। बेशक इन्सान सरकश हो जाता है। इसलिये के अपने आपको बेनियाज़ ख़्याल करने लगता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ़ लौटना है। (96:1-8)

ये क़ुरआन की वो आयतें हैं जो सब से पहले अल्लाह के रसूल पर उतरीं। पहली दो आयतों में में वो शब्द मिलते हैं जिन से इंसानियत को अल्लाह के पैग़ाम से अवगत कराया गयाः नम्बर एक पढ़ो, ये शब्द इंसान की अक़ल की क्षमता और बोल कर स्वयं को व्यक्त करने, ज्ञान को बढ़ाने और सुरक्षित करने की अक़ली योग्यता की तरफ़ एक हवाला है, और क़लम जो इंसान

पर अल्लाह की इस पा का इज़हार है कि उसने बोले गए शब्दों को लिखने, सीखने सिखाने और शिक्षा देने का महत्वपूर्ण यंत्र दिया हे। इंसानी अक़्ल और बोलने, लिखने व पढ़ने की क्षमता इंसान को बख़्शी गयी अल्लाह की अज़ीम नेअमत है। अल्लाह तआला इंसान का आक़ा, रब और पालनहार है जिसने इंसान को ये और अन्य बहुत सी वो शक्तियां दी हीं जो ख़ुद एक सर्वशक्तिमान रचियता की तरफ़ इशारा करती हैं।

इन पहली क़ुरआनी आयतों में इंसान का ज़िक्र है। यानि वैश्विक हैसियत रखने वाला इंसानी वजूद जो नस्ल, रंग व जाति, प्लग आदि की बंदिश से आज़ाद है। ये आयतें अलइल्म का ज़िक्र भी करती हैं, जो किसी विशेष ज्ञान, किसी विशेष क्षेत्र या विषय का ज्ञान नहीं बल्कि ज्ञान है। ज्ञान के साथ क़लम का ज़िक्र यह याद दिलाता है कि यह इल्म को हासिल करने, सुरक्षित करने और उसके प्रसार का एक क़ीमती यंत्र है। ये आयतें सृष्टि और इंसान की शरीरिक, अध्यात्मिक और नैतिक प्रगति की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं और यह शिक्षा देती हैं कि इंसान को अपनी इन्द्रियों को और दिमाग़ को तथ्यों व सच्चाइयों को देखने और इंसानी फ़ितरत के नतीजों तक पहुंचने के लिए किस तरह स्तेमाल किया जाए।

माता पिता के बीच एक सादा से अमल के नतीजे में एक मिश्रित भ्रूण बनता है जिससे एक इंसान अपनी व्यक्तिगत गुणों और सामूहिक प्रतिभाओं के साथ पैदा होता है। यह चमत्कार जो हर रोज़ पूरी दुनिया में बेगिनती संख्या में होता है, ख़ालिक़ के वजूद और उसकी तख़लीक़ के मक़सद की तरह रहनुमाई करता हे, वह मक़सद जो इंसान को उसकी तमाम ताक़तों और कमज़ोरियों के साथ वजूद में लाने का हे। लोग जब ख़ालिक़ के मार्गदर्शन में चलते हैं तो व्यक्ति और समाज दोनों की इंसानी क्षमता अपने चरम पर पहुंचने की सम्भावना रखती है, और ख़ालिक़ व इंसान के बीच सीधा और क़रीबी सम्बंध स्थापित होता है। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन पर वह्यि सीधे उतरती थी वह पूरी इंसानी नस्लम के प्रतिनिधि थे जिसे उनके माध्यम से इस वह्यि के द्वारा सम्बोधित किया गया और व्यक्तियों व समाजों में ज्ञान के विभिन्न पहलुओं से होने वाली तरक़क़ी के द्वारा पैग़ाम की याद दिहानी कराई गयी।

लेकिन इंसान जब ख़ुद को ख़ालिक़ से अलग कर लेता है तो अपना व्यापक और समग्र. ष्टिकोण खो देता है, और इसके बजाए वह स्वार्थपूर्ति के दायरे में क़ैद हो कर रह जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति दूसरों के साथ अपने सम्बंधों को भूल जाता है और इस बेताल्लुक़ी के नतीजे में व्यक्ति की कारकर्दगी, प्रभावशीलता, ... पर जो प्रभाव पड़ते हैं उनसे वो ग़ाफ़िल रहता है, और इस तंगनज़री में वह केवल अपनी कोशिशों और अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को ही देख सकता है, इस बात से नज़र चुराते हुए कि उसकी अपनी कोशिशों के साथ दूसरे लोगों की कितनी कोशिशें शामिल हैं जिनके नतीजे में उसे अपनी कोशिशों का फल मिला है,

और यह कि पैदा करने वाला और सुरक्षित रखने वाला रब सृष्टि और इंसानी दुनिया के निज़ाम को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक शक्तियों और इंसानों के बीच किस तरह से एक समन्वय और सामंजस्य बनाए हुए है। इस तरह की व्यक्तिगत संकीर्ण मानसिकता और कमनज़री इंसान को वैश्विकता की बरकतों से दूर ले जाती है और इल्म की वुसअतों से ख़ुदग़र्ज़ी के तंग दायरों की तरफ़ धकेल देती है।

अल्लाह के साथ इंसान के सम्बंध से इंसान का दिल व दिमाग़ सभी प्राणियों और तमाम इंसानियत के लिए खुल जाता हे। इंसान का तंग ष्टिकोण उसे केवल अपने तक ही सोचने तक सीमित रखता हे और वह यह समझता है कि बस दुनिया में वही है, और उसे दूसरों पर हुक्म चलाने का अधिकार है और जिस बात को वह सही समझता है उसे दूसरों पर थोपने का अधि ाकार रखता है जबकि अल्लाह की तरफ़ अनिवार्य रूप से वापस पलटने और उसके इंसाफ़ का सामना करने का यक़ीन इंसान को यह याद दिलाता है कि वह ख़ुद मख़लूक़ (पैदा किया गया) हे जिसे इस दुनिया में विकास के चरणों से गुज़रते हुए आख़िरकार अपने अंजाम को पहुंच जाना है, और यह यक़ीन व ईमान उसे घमण्ड व तंगनज़री से बचाता है। अल्लाह इंसान के साथ उसकी पैदाइश और नशोनुमा के समय से लेकर ज्ञान और सभ्यता के विकास के चरणों में भी, अपनी हिदायत के माध्यम से होता है और आख़िरकार आख़रित में इंसान उसे सामने से देखेंगे। इस मुस्तक़िल सम्बंध को नज़र अंदाज़ करने के गम्भीर और तबाहकुन नतीजे निकलते हैं जैसे यह कि एक ख़ालिक़ को नज़र अंदाज़ करना तार्किक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक. ष्टि से निरंकुश और ज़ालिम शासकों को पैदा करना है जो परिवार, समाज और दुनिया में दूसरों पर अपनी निजी इच्छाएं थोपते हैं।

وَ الْعَصْرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۬ۙ وَ تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾

अस्र के वक़्त की क़सम। के इन्सान वाक़ेई बड़ा ही नुक़सान में है। मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे और आपस में हक़ की तलक़ीन और सब्र की ताकीद करते रहे। (103:1-3)

आरम्भिक युग की इस सूरत में जो कि मक्का में नाज़िल हुई थी, क़ुरआन इंसानों का ध्यान इस तरफ़ दिलाता है कि समय और उसका बीतता जाना एक ऐसी अहम बात है जिसे ध यानपूर्वक देखना चाहिए और व्यक्तियों व समाजों पर इसके जो प्रभाव पड़ते हैं उन पर ग़ौर करना चाहिए। यह समय ही है जिसके गुज़रते हुए युगों में भौतिक और इंसानी बदलाव और विकास होते रहते हें, कोई चीज़ अस्तित्व में आती है, कोई पलती बढ़ती है, कोई कमज़ोर पड़ जाती है और कोई समाप्त हो जाती है। कभी न थमने वाले और हमैशा बदलते रहने वाले समय

पर इंसानी साहित्य व कला में अलग अलग तरह से रोशनी डाली गयी है (देखें पहले ज़िक्र गयी आयतें 3:26-27,139-140)। जो समय बीत जता है वह वापस नहीं आता, और एक इंसान का जीवन समय की एक अवधि के लिए ही होता है। इंसान अपने छोटे से जीवन में कुछ वक़्त के फ़ायदों और अस्थाई आनन्द पर ही अपना ध्यान लगाए रखे, दीर्घकालिक उद्देश्यों और फ़ायदों पर ध्यान न दे तो भविष्य और उद्देश्य के लिहाज़ से वह घाटे में रहता है। अदूरदर्शिता से इंसान की ऊर्जा व्यर्थ हो जाती है और उसकी क्षमता व सहनशक्त जाती रहती है। ऐसी स्थिति में किसी कामयाबी पर इंसान घमण्ड में मुब्तिला हो जाता है जिसकी वजह से कामयाबी का सिलसिला थम सकता है और इसी तरह नाकामी की स्थिति में निराशा और लाचारी इंसान पर छा जाती है जिसकी वजह से किसी एक काम में नाकामी इंसान की आगे की कोशिशों का रास्ता रोक देती है और आगे जीवन में सम्भावित कामयाबियां भी नाकामी में बदल जाती हैं। अल्लाह पर ईमान इंसान को समय के बहतर स्तेमाल का आदी बनाता है और समय का पूरा दायरा उसके लिए खुला होता है और वह किसी सामयिक ख़ुशी या दुख की घटना का क़ैदी बन कर नहीं रह जाता है। अल्लाह के रसूल की यह हदीस यहाँ कितनी फ़िट है किः मोमिन बन्दा या बन्दी का मामला भी अजीब है, उसके हर मामले और हर हाल में उसके लिए भलाई ही भलाई है, अगर उसको ख़ुशी और राहत व आराम मिले तो वह अपने रब का शुक्र अदा करता या करती है और उसमें उसके लिए भलाई ही भलाई है, और अगर उसको कोई दुख और तकलीफ़ मिले तो वह उस पर सब्र करता करती है और यह सब्र भी उसके लिए पूरी पूरी भलाई और बरकत का सबब बनता है (मुस्लिम, इब्ने हंबल, इब्ने माजा)

लेकिन किसी व्यक्ति का दृढ़ विश्वास या ईमान केवल अपने निजी दायरे में ही सीमित रहने से बाक़ी नहीं रहता, इसके लिए सामाजिक सहारे की ज़रूरत होती है यानि उन दूसरे लोगों की ज़रूरत भी जो ख़ुद भी जीवन के उतार चढ़ाव में सच्चाई, सब्र और संयम पर जमे रहते हों। इस तरह सभी ईमान वाले विपरीत परिस्थितियों में कामयाब रहेंगे और नतीजे के लिहाज़ से कभी भी नुक़सान में नहीं रहेंगे, चाहे किसी समय वह ज़ाहिर में असफ़ल ही हुए हों। अल्लाह के पैग़म्बर के साथी (सहाबी) जब एक दूसरे से जुदा होते थे तो वो एक दूसरे को सत्य, सच्चाई और संयम व ईमान पर जमे रहने के लिए, और इस तरह व्यक्ति व समाज दोनों में शान्ति व स्थिरता को बनाए रखने के लिए क़ुरआन की ये आयतें पढ़ा करते थे और एक दूसरे को सुनाया करते थेः

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا
تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ
اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَآ

ऐ नबी! कह दो ऐ काफ़िरों! जिनको तुम पूजते हो उनको मैं नहीं पूजता। और जिसको मैं पूजता हूँ उसको तुम नहीं पूजते। और मैं उनको पूजने वाला नहीं हूँ

اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِيَ دِيْنِ ۝

जिनकी तुम पूजा करते हो। और तुम और की पूजा करने वाले नहीं हो जिसकी मैं पूजा करता हूँ। तुम अपने रास्ते पर क़ायम हो मैं अपने रास्त पर क़ायम हूँ।
(109:1-6)

ईमान व्यक्ति के अपने फ़ैसले और विश्वास पर आधारित होना चाहिए। लेकिन दुनियावी फ़ायदों को हासिल करने के जज्बे, अपने पूर्वजों के तौर तरीक़ों पर चलते रहने की इच्छा, इंसानी कमज़ोरियां और वहम व आडम्बरों के दबाव भी इंसान पर पड़ते हें जिसकी वजह से ईमान जैसे गम्भीर मामले में इंसान की निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है और इसके नतीजे में व्यक्तियों व समाजों को गम्भीर बीमारियां लग जाती हैं।

यह सूरत एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले लोगों और अल्लाह को छोड़ कर दूसरे ख़ुदाओं पर ईमान रखने वाले लोगों के बीच स्पष्ट अन्तर की एक तसवीर पेश करती है। अल्लाह को छोड़ कर दूसरे ख़ुदाओं पर यक़ीन रखने वाले लोग जान बूझ कर और हठधर्मी के साथ सत्य क छुपाने का प्रयास करते हैं और उसका इंकार करते हैं (ऐसे लोगों के लिए क़ुरआन में अरबी का शब्द का काफ़िर स्तेमाल हुआ है जो क़ुर से बना है और क़ुर का मतलब छुपाना होता है), हालांकि वो यह समझते हैं कि वो अक़ल की सीधी सच्ची बात के विपरीत आचरण कर रहे हैं (6:33; 27:14)। ये दोनों पक्ष अगर चाहें और कोशिश करें तो आपस में इंसानी सम्बंधों को बनाए रख सकते हैं, लेकिन अक़ीदे का फ़र्क़ ज़ाहिर रहेगा और बग़ैर किसी संकोच के इस को साबित किया जाएगा। उपरोक्त सूरत में अक़ीदे (आस्था) के मामले में कभी कोई समझौता न होने पर तकरार के साथ ज़ोर दिया गया है। हर पक्ष को ख़ुद अपनी सोच पर चलने, अपना फ़ैसला लेने और अपने अमल (आचरण) को तय करने की पूरी आज़ादी है। हर अक़ीदे के अपने सामाजिक और व्यक्तिगत निहितार्थ हैं और दुनिया में उनके अलग अलग नतीजे हैं, और आख़िरत में भी उनके अलग अलग नतीजे और बदले हैं और वहाँ सत्य पर आधारित जीवनशैली को ही स्वीकार किया जाएगा। एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले लोगों के लिए ज़रूरी है कि अपना. ष्टिकोण खुल कर सामने रखें, लेकिन दूसरों पर इसे थोपने की कोशिश न करें और न उन लोगों से कोई दुशमनी और झगड़ा रखें जिनकी आस्था उनसे अलग है, हालांकि वो अपना अक़ीदा सही और सच्चा होने का पूरा यक़ीन रखते हैं और उसे मज़बूती के साथ थामे रखते हैं और किसी भी भ्रम में नहीं पड़ते (68:9)। आख़िरकार सभी लोगों को फ़ैसले के लिए अल्लाह की तरफ़ ही लोट कर जाना है (2:256)।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ

ऐ नबी! कह दो वो अल्लाह एक है। वो माबूद हरहक़

يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

बेनियाज़ है। ना वो किसी का बाप है और ना वो किसी का बेटा है। और ना कोई इसका हमसर है।(112: 1-4)

चूंकि अल्लाह का स्वरूप और चित्र इंसान की कल्पना के सीमित दायरे से बाहर है इसलिए क़ुरआन में मुसलमानों को अल्लाह के गुणों के बयान से अल्लाह की पहचान कराई गयी हे। फिर भी हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसका एक वास्तविक अस्तित्व है और यह केवल कोई विचार नहीं है। वह हम से बहुत क़रीब है और हमारा निगरां व संरक्षक है और वह एक अकेला ख़ुदा है, जिसकी इबादत हमारे लिए अनिवार्य है, दूसरी वो तमाम चीज़ें जिन्हें हम सोच सकते हैं केवल उसकी पैदा की हुई जन्तु हैं और वो किसी भी तरह उसके बराबर या उस जैसी नहीं हैं। वह अमर और अजर है, उसका न कोई आदि है न अन्त, वह सर्वव्यापी है और समय व स्थान की सीमा में सीमित नहीं हे, न किसी भी स्थिति में उसके अन्दर कोई बदलाव आता है। वह हक़ है, जितने भी अस्तित्व हैं वह उन सब का मूल कारक और स्रोत है और वही पनाह देने वाला है। इसी तरह हम उसके लिए किसी का पिता या किसी का बेटा होने का विचार या धारणा नहीं रख सकते कि इस तरह की धारणा में हम अपनी कल्पना के अनुसार उसकी पैदाइश के लिए एक जैविक तंत्र को महसूस करेंगे। क़ुरआन के अंग्रेज़ी अनुवादक यूसुफ़ अली ने इस सूरत और ख़ास तौर इसकी आख़री आयत पर अपने तफ़सीरी नोट में लिखा है कि उस (अल्लाह) के गुण और प्रति बे मिसाल हैं, और मुहम्मद असद ने लिखा है कि इस हक़ीक़त का कि ख़ुदा एक है और हर लिहाज़ से बे मिसाल है, उसकी कोई शुरूआत और कोई अन्त नहीं है, क़ुरआन के इस बयान से एक तार्किक सम्बंध है कि कोई चीज़ उस जैसी नहीं जिसकी तुलना उससे की जा सके, इस तरह अल्लाह की हस्ती को बयान करने या किसी उदाहरण से उसे समझने समझाने का दरवाज़ा ही बन्द कर दिया गया है। अल्लाह की हस्ती के गुण इंसानी बूझ के दायरे से परे हैं, यहाँ तक कि उसकी कल्पना भी नही की जा सकती, इसी से यह बात भी स्पष्ट होती है कि अल्लाह का कोई चित्र बनाने की कोशिश चाहे वह कोई पुतला बना कर हो या किसी प्रतीक के रूप में हो उसे सत्य से हटना और सत्य का इंकार माना जाएगा।

यह चीज़ शिर्क (अल्लाह के साथ दूसरों को साझी बनाने) के नज़रिए को पूरी तरह रद कर देती है, शिर्क यानि ऐसी व्यवस्था जिसमें लोग बहुत से भगवानों और स्वामियों को मानते हैं, जो अपने रूप और अपने स्वभाव के लिहाज़ से खुद उनके अपने हाथों बनाई गयी चीज़ों से भिन्न नहीं हो सकते। यह चीज़ बुद्धि और तर्क के ख़िलाफ़ है, और ख़ुद देवताओं के बीच टकराव और विवाद का कारण है जबकि सृष्टि में दिखाई देने वाला समन्वय उसके जनक के एक होने को दर्शाता है। अल्लाह की तौहीद (एक होना) इंसानी मूल्यों के मुकम्मल होने से पूरी तरह अनुकूलता रखती है, इसलिए विभिन्न प्रकार के गुण विभिन्न प्रकार के देवी देवताओं में

विभाजित होने या विपरीत गुणों का प्रतिनिधित्व करने वाले देवी देवताओं की कोई कल्पना इस्लाम में नहीं है जैसे भलाइयों और बुराइयों के ख़ुदा अलग अलग हों या मआफ़ करने वाला देवता कोई और हो।

अल्लाह शाश्वत (सदा सदा तक रहने वाला) और निरंकुश (अपने आप में मुकम्मल) है, ये शब्द यूसुफ़ अली ने अस्समद के अनुवाद में स्तेमाम किए हैं। वह इसकी व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि शाश्वत और निरंकुश ही इसका अर्थ हो सकता है, तमाम दूसरे अस्तित्व अस्थाई या निर्भर हैं और वह (ख़ुदा) किसी पर निर्भर नहीं है, लेकिन तमाम लोग और चीज़ें उस पर निर्भर हैं। ऐसे देवी देवताओं का विचार जो खाते पीते हैं, झगड़ते हैं और एक दूसरे के ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं, या भक्तजनों के चढ़ावों पर आश्रित होते हैं अनर्थ और तर्कहीन है। मुहम्मद असद ने यह बिन्दु उजागर किया है कि अल्लाह का विशेष नाम अस्समद क़ुरआन में केवल एक ही बार आया है और यह केवल अल्लाह पर ही लागू होता है। यह प्रथम कारक और उसके शाश्वत होने की धारणाओं को समेटे हुए है और उसके साथ यह धारणा भी कि तमाम चीज़ें जो मौजूद हैं या जिनकी कल्पना की जा सकती है उसी की तरफ़ वापस पलटती हें कि वही उनका स्रोत है, और इसी लिए वो अपने अस्तित्व के लिए उसी पर निर्भर हैं।

पूरी सूरत हमें इस बात पर सावधान करती है कि हम अपने इंसानी तरीक़े के मुताबिक़ उसके स्वरूप की कल्पना न करें चाहे सांकेतिक रूप से या वैचारिक रूप से, एक आकार के रूप में या एक ठोस मूर्ति के रूप में।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ
النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ
الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ
فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ
النَّاسِ ﴿۶﴾

कहो के मैं लोगों के रब की पनाह मांगता हूँ। लोगों के बादशाह की। लोगों के माबूद बरहक़ की। दिल में वसवसा डालने वाले शैतान के शर से, जो ख़ुदा का नाम सुनकर पीछे हट जाता है। जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है। ख़्वाह वो जिन्नात में से हो या इन्सानों में से। (114:1-6)

इस सूरत में इंसानों को यह सिखाया गया है कि वो अल्लाह की पनाह में आएं, जो तमाम इंसानों का रब और बादशाह है। यह पनाह इंसान की अपनी कमज़ोरियों के मुक़ाबले पर है जिन्हें बुरे इंसानों और शैतानों की तरफ़ से भड़काया जाता है। क़ुरआन की कई आयतों में इंसानी शैतानों का ज़िक्र जिन्नी शैतानों के साथ किया गया है (जैसे 6:112), कुछ दूसरी जगहों पर क़ुरआन में यह इशारा भी किया गया है कि इंसानों और शैतानों के बीच गठजोड़ और एक दूसरे के साथ सहयोग का सिलसिला भी हो सकता है, जैसे 2:14; 3:175; 4:76; 6:71,121;

7:27,30; 17:27; 58:19)। इंसानों को अल्लाह से बुरी ताक़तों के मुक़ाबले सुरक्षा और पनाह की दुआ करना चाहिए और इसके लिए अल्लाह की हिदायत का अनुसरण करना चाहिए जिससे इंसान का इरादे और इच्छा को मज़बूती मिलती है और बुराई की तरफ़ लपकने की ललक कमज़ोर पड़ जाती है। शैतान इंसानी कमज़ोरियों को स्तेमाल करने की कोशिश करता है और इंसान को अन्दर व बाहर से फ़रेब में मुब्तिला करता है। यूसुफ़ अली इस सूरत की तफ़सीर में अपना हाशिया इस बात पर पूरा करते हैं कि बुराई विभिन्न प्रकार के धोखों के रूप में इंसान के अन्दर घुस आती है ताकि इंसान की इच्छा और इरादे पर क़ब्ज़ा कर ले जिसकी आज़ादी अल्लाह ने इंसान को दी है। बुराई की यह ताक़त शैतान हो सकती है, या कोई बुरा इंसान हो सकता/हो सकती है या ख़ुद इंसान की अपनी बुरी इच्छाएं हो सकती हैं जैसा कि क़ुरआन में कहा गया हैः हमने शैतान (प्रवृत्ति) के इंसानों और जिन्नों को हर पैग़म्बर का दुशमन बना दिया था, वो धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में लालच की बातें डालते रहते थे (6:112)। शैतान गुप्त ढंग से इंसानों के दिलों में उक्साहटें पैदा करते हैं और अपना जाल और अधिक बारीक व आकर्षित बनाने के लिए वहाँ से निकल आते है। बुराई की इस आन्तरिक उक्साहट पर ख़ालिक़ व मालिक की हिफ़ाज़त व निगरानी और हिदायत के बग़ैर नियंत्रण नहीं पाया जा सकता, जो कि इंसानों की कमज़ोरियों को जानता है, बुरे इंसानों और जिन्नों के छल कपट और बहकाने के तरीक़ों से अवगत हे, और यह भी जानता है कि इंसान को किस तरह बुराई की ताक़तों से बचाया जाए, कि इंसानों को अगर अपनी कमज़ोरियों और ज़िम्मेदारियों के हवाले कर दिया जाए तो बुराई की यह ताक़तें व्यक्ति और समाज और इंसानी सभ्यता को तबाह कर सकती हैं।

आख़िरत का अनन्त जीवन

وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
اَنۡدَادًا يُّحِبُّوۡنَهُمۡ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَ لَوۡ يَرَى الَّذِيۡنَ
ظَلَمُوۡۤا اِذۡ يَرَوۡنَ الۡعَذَابَ ۙ اَنَّ الۡقُوَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيۡعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذۡ
تَبَرَّاَ الَّذِيۡنَ اتُّبِعُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا وَ رَاَوُا
الۡعَذَابَ وَ تَقَطَّعَتۡ بِهِمُ الۡاَسۡبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَ
قَالَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا لَوۡ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ
مِنۡهُمۡ كَمَا تَبَرَّءُوۡا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيۡهِمُ
اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ حَسَرٰتٍ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَ مَا هُمۡ
بِخٰرِجِيۡنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को भी उस का शरीक बना लेते हैं और उसकी पूजा करते हैं, और उन से ऐसी ही मोहब्बत रखते हैं जैसा के अल्लाह से रखना ज़रूरी है, और मोमिनीन तो अल्लाह से ही क़वी मोहब्बत रखते हैं, काश ये ज़ालिम मुशरिकीन जब कोई दुनिया की मुसीबत देखते तो उस वक़्त समझ लिया करते के सारी कुव्वत सिर्फ़ अल्लाह ही को हासिल है, और ये भी मान लेते के आख़िरत में तो अल्लाह का अज़ाब उस अज़ाब से ज्यादा शदीद होगा। जब वो लोग जिनके कहने पर दूसरे चल रहे थे उन लोगों से बेज़ार होकर साफ़ निकल भागेंगे जो उनके कहने पर चल रहे थे, और सब ही अपना अज़ाब ख़ुद ही देख लेंगे और आपस में जो उनके ताल्लुक़ात थे वो भी सब टूट जाऐंगे। (2:165-167)

ऊपर की आयतों में आख़िरत के जीवन में एक ज़िम्मेदार इंसान की हैसियत से हर व्यक्ति के बारे में अल्लाह के फ़ैसले की एक ज़ोरदार तसवीर पेश की गयी है, जिसका फ़ैसला इस आधार पर होगा कि अल्लाह ने उसे इरादे और इच्छा की आज़ादी और सही व ग़लत में फ़र्क़ करने के लिए अक़्ल दी है, और ये दोनों तत्व जवाबदेही के लिए मूल रूप से ज़रूरी हैं। आख़िरत के जीवन पर ईमान का मूल तत्व यही है कि दुनिया के इस जीवन में इंसान जो कुछ करता है उसकी जवाबदेही हर व्यक्ति को करनी है। यह ईमान व्यक्तिगत जवाबदेही और अपनी ज़िम्मेदारी आप उठाने पर ज़ोर देता है, इसलिए दूसरे इंसानों या अक़ीदों व नज़रियों की

अंधाधुध पैरवी बिल्कुल बे मतलब होगी और इंसान के अक़ली व अख़लाक़ी गुणों को व्यर्थ कर देगी और अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के चिंता से मुक्त रखेगी। लेकिन आख़िरत के जीवन में हर वह व्यक्ति (मर्द या औरत) जिसका अनुसरण दुनिया में किया जाता था, दुनिया में चाहे कितने ही प्रभाव और रसूख़ वाला/वाली और शक्ति व अधिकार वाला/वाली रहा हो/रही हो पूरी तरह लाचार व बेबस होगा होगी। इस पर यह कि वह मर्द या औरत उस समय अपने अनुयायियों से ख़ुद को अलग कर लेगा/लेगी और उन लोगों के प्रति अपनी किसी भी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करने से इंकार कर देगा/कर देगी जिन्होंने दुनिया में उसको शक्तिशाली और रसूख़दार समझ कर उसकी बात मानी होगी (देखें 14:21-22; 33:67-68; 34:31-50:; 40:47-48)। इस तरह स्वयं को लाचार पा कर अनुपालन करने वाले लोग वो बातें सोचेंगे जो उस समय असम्भव होंगी, जैसे यह कि उन्हें वापस दुनिया में भेज दिया जाए ताकि वो ऐसे लोगों से उसी तरह अपने आप को दूर कर लें जैसे आज ये उनसे दूरी और बेनियाज़ी दिखा रहे हें। दोनों पक्षों की तरफ़ से ख़ुद को बचाने की इस तरह की बेफ़ायदा कोशिशें हर व्यक्ति से जवाबदेही और आत्मविश्वास की ज़रूरत का तक़ाज़ा करती हैं क्योंकि हर व्यक्ति ख़ुद अपने कामों के लिए जवाबदेह है किसी दूसरे के लिए नहीं, यहाँ तक कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों, मातापिता और बच्चों के लिए भी कोई व्यक्ति कुछ नहीं कर सकेगा (6:3; 19:95; 51:33)। पीछे चलने वाले और पीछे चलाने वालों का एक दूसरे से इस तरह अलग अलग और एक दूसरे की ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो जाने की यह तसवीर कितनी डरावनी है। और इंसानी व्यक्तित्व की कमज़ोरी व अंधी नक़्क़ाली के ख़िलाफ़ क़ुरआन की यह चेतावनी कितनी सख़्त है इस तरह अल्लाह उनके कर्म उन्हे हसरत बना कर दिखाएगा और वो नरक से नहीं निकल सकेंगे।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝

और (क़यामत के दिन) सब लोग अल्लाह के सामने पेश होंगे तो छोटे दर्जे के लोग बड़े दर्जे के लोगों में कहेंगे के दुनिया में हम तुम्हारे ताबे थे, तो क्या हमको अल्लाह के अज़ाब के किसी जुज़ से बचा सकते हो वो कहेंगे के अल्लाह हमें राह बता देता तो हम तुम को भी राह बता देते, अब चाहे हम घबरायें या सब्र करें तो दोनों बराबर हैं, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (14:21)

यहाँ क़ुरआन हर व्यक्ति को आज़ादी के साथ सोचने की ताकीद करता है और यह ज़ाहिर करता है कि किसी व्यक्ति का अंधा अनुपालन करने वाले और कराने वाले दोनों के लिए कितना घातक है, न तो पैरवी करने वाले की कोई क्षमा याचना स्वीकार की जाएगी और न उन लोगों का अंजाम अच्छा होगा जो लोगों को अपने पीछे चलने और अपना अनुपालन करने

के लिए मजबूर करते हैं (देखें पहले ज़िक्र हो चुकी आयतें 2:165-167)। कच्चे अंधभक्त इस बात को समझने में असफल रहते हैं कि हर व्यक्ति अपने मामलों के लिए ख़ुद ज़िम्मेदार है, और फ़ैसले के दिन ख़ुद अपने किए का जवाब देगा। (17:13-14; 53:38-42; 74:38), और जिन लोगों ने अपनी चुतराई, दौलत या पद व सत्ता की शक्ति को दूसरों पर अपने विचार या अक़ीदे थोपने के लिए स्तेमाल किया होगा वो ख़ुद अपना बचाव नहीं कर सकेंगे, दूसरों के लिए कुछ करने का तो सवाल ही क्या। आख़िरत में व्यक्तिगत रूप से जवाबदेही का विश्वास इस दुनिया में निजी रूप से जवाबदेह होने की भावना को गहरा करता है, और इंसान को अंधाधुंध किसी के पीछे चलने की कमज़ोरी से बचाता है चाहे यह पीछे चलना प्रेमपूर्वक हो या ज़ोर ज़बरदस्ती से।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَ لَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَ لَوْ
تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ
يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْ لَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝۳۱
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا
اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ
جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ۝۳۲ وَ قَالَ
الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ
مَكْرُ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ
نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ جَعَلْنَا
الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ
يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۳۳ وَ مَاۤ
اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوْهَا ۙ اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝۳۴
وَ قَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّ مَا

और काफ़िर लोग कहते हैं के हम तो हरगिज़ ईमान ना तो इस क़ुरआन पर लायेंगे और ना उन किताबों पर जो इससे पहले उतरी हैं, काश! तुम उन ज़ालिमों को उस वक़्त देखो, जब ये अपने रब के सामने खड़े होंगे, एक दूसरे पर बात डालते होगे, जो लोग कमज़ोर थे, बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम ना होते, तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते। बड़े लोग जवाबन कमज़ोरों से कहेंगे, क्या हमने रोका था जिस वक़्त तुम को हिदायत पहुंची थी (नहीं) बल्के तुम ख़ुद ही मुजरिम थे। और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे (नहीं) बल्के तुम्हारी रात दिन की चालों ने हमको रोक दिया था, जब तुम हमसे कहते थे, के हम अल्लाह से कुफ़्र करें और उसका शरीक ठहरायें, और जब वो अज़ाब को देखेंगे तो अपनी पशेमानी को छुपायेंगे, और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे, पस जो वो करते थे उसका बदला उनको मिल जायेगा। और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा के जो चीज़ तुमको देकर भेजा गया है हम उसको मानते ही नहीं। और ये भी कहा, के बहुत सा माल और औलाद रखते हैं, और हम को कभी अज़ाब नहीं होगा। आप कह दें! के मेरा रब जिसके लिये चाहता है रोज़ी फ़राख़ कर देता है, और

نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَ مَآ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ
اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا
مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۪ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ
جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَ هُمْ فِي الْغُرُفٰتِ
اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَ الَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَ مَآ
اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَ هُوَ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

जिसके लिये चाहता है तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हैं। और ना तुम्हारा माल और ना तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ है के तुम को हमारे क़रीब कर सकें दर्जे में, हाँ मगर जो ईमान लाये और नेक अमल करता रहे, ऐसे लोगों को उनके आमाल के सबब दोगुना बदला मिलेगा, और वो इतमिनानों सकून के साथ बाला ख़ानों में होंगे। और जो लोग हमारी आयात में हमको आजिज़ करने की कोशिश करते हैं वो अज़ाब में हाज़िर किये जायेंगे। आप फ़रमा दीजिये के मेरा रब तो अपने बन्दों में से जिसको चाहता है रोज़ी फ़राख़ कर देता है, और जिसे चाहता है उसके लिये तंग कर देता है, और जो चीज़ ख़र्च करोगे तो अल्लाह उसका बदला देगा, और वो बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (34:31-39)

यहाँ भी क़ुरआन किसी व्यक्ति के फैसलों के लिए और ख़ास तौर से ऐसे मामलों में जिन से इंसान का अंजाम जुड़ा हो, उसकी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देता है (और देखें 2:166-167; 14:21: 33:67-68; 34:31-33; 40:47-48)। सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक शक्ति रखने वाले लोगों के पीछे बे सोचे समझे चलने का कोई बहाना फ़ैसले वाले दिन नहीं चल सकेगा, क्योंकि उस दिन कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा (6:164; 17:15; 35:18; 39:7; 53:38-41(6:94; 52:21)। दुनिया में प्राप्त होने वाली ये शक्तियां कुछ लोगों को घमण्डी बना देती हैं और दुनिया के मज़े व राहतें सत्य के प्रति इंसान की चेतना और संवेदनशीलता को कम कर देती हैं। इस तरह जूं की तूं स्थिति बनाए रखने और दुनिया में प्राप्त रुत्बों और राहतों को बनाए रखने का जज्बा चाहे वह जायज़ ज़रियों और तरीक़ों से हो या ना जायज़ ज़रियों और तरीक़ों से, इंसान को घमण्डी अंदाज़ में अल्लाह की हिदायत को रद कर देने पर आमादा करता है। आख़िरत में घमण्ड और अहंकार की कोई गुंजाइश नहीं होगी, क्योंकि हर चीज़ वहाँ बे नक़ाब हो जाएगी और सत्य खुल कर सामने आ जाएगा (यह वह दिन है कि) इससे तू ग़ाफ़िल हो रहा था अब हम ने तुझ पर से परदा उठा दिया तो आज तेरी नज़र बहुत तेज़ हो गयी (50:22)। जिन लोगों ने अपना जीवन शक्ति व शान रखने वाले लोगों की अंधी पैरवी में बिताया होगा वो उस दिन पछताएंगे और ख़ास तौर से इस बात पर अफ़सोस करेंगे कि जिन लोगों का उन्होंने अनुसरण किया आज वो लोग उन से बे नियाज़ (विमूख) हैं

और उनकी गुमराही की ज़िम्मेदारी से ख़ुद को बरी कर रहे हैं क्योंकि वो लोग जिन का उन्होंने अनुसरण किया उन से दूरी बना लेंगे और अपनी शक्ति व शान के आगे झुकने का कोई आरोप अपने ऊपर लेने से इंकार कर देंगे।

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियां उस समय सही आधार पर स्तेमाल होती हैं जब उन शक्तियों के धारक लोग यह समझते हैं कि उन्हें यह शक्तियां अल्लाह ने बख़्शी हैं और उन लोगों के माध्यम से प्राप्त हुई हैं जिन्होंने इन शक्तियों की प्राप्ति में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता की है और जिनकी सेवा के लिए ये शक्तियां व अधिकार मिले हैं। ये सेवाएं व्यक्तिगत व सामाजिक अधिकारों व ज़िम्मेदारियों की ताकीद के लिए अल्लाह की तरफ़ से दिए गए निर्देशों के मुताबिक़ न्यायिक ढंग से स्तेमाल होना चाहिएं। इसी के साथ उन लोगों को जिन्हें शक्ति व अधिकार प्राप्त नहीं हैं अपने अधिकारों की मांग करने के लिए मज़बूती के साथ खड़ा होना चाहिए और न तो अपनी इंसानी प्रितष्ठा से कभी हाथ खड़े करना चाहिए और न कभी अन्याय के आगे झुकना चाहिए, और अपनी अक़्ली व नैतिक शक्तियों की रक्षा करना चाहिए। और वही तो है जिसने ज़मीन में तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया और एक दूसरे पर दर्जे बुलन्द किए ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा करे, बेशक तुम्हारा रब जल्दी ही सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान भी है (6:165)। जो लोग स्वालेह आमाल (अच्छे व दुरुस्त काम) अंजाम देते हैं और अपनी इंसानी ज़िम्मेदारियों को पूरा करके परीक्षा में सफ़ल होते हैं वही लोग अपने आप को बौद्धिक, मानसिक और अध यात्मिक लिहाज़ से आगे बढ़ाने की क्रिया में लगे होते हैं। ये लोग इस जीवन में व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से संतुलित होते हैं और आख़िरत के निश्चित जीवन में ये अल्लाह की असीमित रहमतों और कृपा के पात्र होंगे।

وَإِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ إِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

और जब वो दोज़ख में झगड़ा करेंगे, तो छोटे लोग बड़े लोगों से कहेंगे, हम तुम्हारी पैरवी करते थे तो क्या तुम हमारे अज़ाब का कुछ हिस्सा दूर कर सकते हो। बड़े लोग कहेंगे के हम सब ही दोज़ख में हैं, अल्लाह बन्दों में फ़ैसला कर चुका है। (40:47-48)

यहाँ और ज्यादा ज़ोर देकर व्यक्ति की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी और जवाबदेही का ज़िक्र किया गया है जो उसे आख़रित में करनी ही होगी, और जो लोग इस दुनिया में मगन हैं और आख़िरत के जीवन के इंकारी हैं उन लोगों की दुर्गति उस समय कैसी होगी इसकी तसवीर खींची गयी है। जो कोई भी किसी के पीछे चलता है उसे अपनी अक़ल का स्तेमाल करना चाहिए और वह

यह देखे कि वह किस रास्ते पर चल रहा है और उसका अंजाम आख़िर क्या होगा। ऐसे किसी व्यक्ति की अंधभक्ति नहीं करनी चाहिए जो अपने भक्तों की कोई भी ज़िम्मेदारी नहीं उठाएगा और न उठा सकेगा। (और देखें 2:126-127; 6:164; 14:2; 17:15; 33:67-68; 34:31-33; 35:18; 39:7; 53:38-40, 2:166-167; 14:21; 34:31-33)।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَ اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

और जब तुम अपने सारे अरकान पूरे कर लो, तो अल्लाह का ज़िक्र किया करो जैसा के तुम अपने बाप दादा का करते आए हो, बल्के उससे भी ज़्यादा और बाज़े आदमी दुआ करते है। के ऐ हमारे रब! हमको इस दुनिया में दे दीजिये, ऐसे लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और बाज़ इस तरह दुआ करते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी नेमत से इस दुनिया में भी नवाज़ दे और आख़िरत में भी अपनी मेहरबानी से अता फ़रमा और दोज़ख के अज़ाब से भी निजात दे। उन्हीं लोगों के लिए उनके नेक कामों का बड़ा हिस्सा तैयार है, और अल्लाह तो बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है।

(2:200-202)

जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं उनके दिल व दिमाग़ में इस जीवन की हैसियत आख़िरत के मुक़ाबले क्या होती है इसको ऊपर की आयत में बहुत प्रभावी ढंग से बयान किया गया है। आख़िरत के जीवन के अनन्त होने का विश्वास इस दुनिया के प्रेम में इंसाने को मगन होने से रोकता है, और वह भी केवल इसी हद तक कि इस दुनिया के ऐश व आराम आदमी को यह बात न भुला दें कि यह जीवन निश्चित रूप से ख़त्म होने वाला है और इसकी अवधि बहुत कम है, जबकि इसके बाद का जीवन अनन्त है और वह निश्चित रूप से सामने आने वाला है। एक सच्चा ईमान आदमी को हर तरह के अतिवाद से बचाकर संतुलित रखता है, क्योंकि ईमान वाले को दूसरे जीवन के इनाम इस दुनिया में उसके कामों की प्रशंसा में ही मिलेंगे (और देखें 28:77)। जब तक इंसान इस दुनिया के सम्बंध में अपना दृष्टिकोण ठीक रखेगा और कुछ समय की अपनी इच्छाओं का ग़ुलाम नहीं बनेगा और इच्छाओं पर नियंत्रण रखेगा तो तभी तक यह दुनिया उसके लिए बहतर हो सकती है।

इस दुनिया के मामलों में संतुलन बने रहने के लिए ज़रूरी है कि इंसान भविष्य के लिए योजना बनाते समय अपनी शरीरिक, बौद्धिक और मानसिक क्षमताओं को सामूहिक और

संयुक्त रूप से काम में लाए और अपने चालचलन के अंजाम पर ग़ौर करे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति दूसरों से अलग थलग हो कर रह जाए या इस दुनिया की नेअमतों से संतुलित रूप से फ़ायदा उठाने से ख़ुद को रोक ले ; देखें 7 31-32 18 7,46)। इस्लाम और उसके अनुयायि जीवन में बीच का और संतुलन का रास्ता दिखाते हें (2:143), और अतिवाद से बचते हैं।

यह इस्लाम का एक बिल्कुल उचित और संतुलित रवैया है, वह न तो इस जीवन को नकारता है और न इस जीवन में इतना अधिक मगन होने की इजाज़त देता है कि इंसान अपनी मानसिक व अध्यात्मिक योग्यताओं को ही भूल जाए जिनसे वह अपने और दूसरे इंसानों के भविष्य को बहतर बना सकता है। ये आयतें इस लिहाज़ से ख़ास तौर से अहम हैं कि इनमें हज जैसी महत्वपूर्ण इबादत के बारे में शिक्षा दी गयी है जो कि क्षमता रखने वाले मर्द और औरत को जीवन में एक बार ज़रूर करना चाहिए। इबादत के इन ख़ास कामों में भी इस जीवन के फ़ायदे और और आख़िरत के फ़ायदे समेटने में संतुलन पर ज़ोर दिया गया है (2:183-186; 5:6; 9:103; 22:27,28; 29:45)।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَ لٰكِنْ لِّیَطْمَىِٕنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۝۲۶۰

और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा, अल्लाह ने कहा क्या तुम इस पर यक़ीन नहीं रखते। कहा क्यों नहीं, लेकिन मैं अपने दिल को इतमिनान दिलाना चाहता हूं। अल्लाह ने कहा अच्छा चार परिन्दे लो फ़िर उनको अपने साथ हिला लो (और फिर टुकड़े टुकड़े कर दो) फ़िर एक एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रख दो, फ़िर उनको बुलाओ वो दौड़ते हुए तुम्हारे पास चले आयेंगे। और ये खूब जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है और बड़ी ही हिकमत वाला है। (2:260)

अरबी का शब्द जुज़ यहाँ प्रयोग हुआ है जिसका मतलब होता है हिस्सा (अंश)। चारों पक्षियों को टुकड़ों या भागों में विभाजित कर दिया गया था और हर भाग को उस जगह की एक पहाड़ी पर अलग अलग रखा गया था जहाँ हज़रत इब्राहीम बसते थे। यहाँ यह मतलब भी लिया जा सकता है कि चारों पक्षियों को अलग अलग विभाजित कर के पड़ोस की पहाड़ी पर रखा गया था या यह मतलब भी हो सकता है कि पक्षियों को काट कर अलग अलग टुकड़ों में कर दिया गया था। जो भी हो, अलग अलग टुकड़ों के अलग अलग पहाड़ियों पर रख दिया

गया और जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको पुकारा तो अल्लाह के हुक्म से उनके विभिन्न टुकड़े फिर से आपस में मिल गए और पक्षी फिर से ज्यूं की त्यूं जी उठे, इस तरह उन्हें यह दिखाया गया कि इंसानी शरीर को दोबारा कैसे बना कर खड़ा किया जा सकता है। अलबत्ता, शब्द सिर का अर्थ यह है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें प्रशिक्षण देकर सधाया होगा ताकि वह जहाँ कहीं भी हों, उस आवाज़ को सुन कर उनकी तरफ़ पलट आएं जिसका उन्हें आदी बनाया गया है। अबु मुस्लिम असफ़हानी ने इस विचार का समर्थन किया है कि पक्षियों को चार अलग अलग जगहों पर रखा गया था। वह लिखते हैं कि अगर इंसान ऐसा कर सकता है कि पक्षियों को यह सिखा दे कि जब उन्हें आवाज़ दी जाए तो वो जहाँ कहीं भी हों चले आएं, तो अल्लाह के लिए तो यह और भी आसान है, जिसकी सारी मख़लूक़ उसका आज्ञापालन करती है कि केवल कुन कह कर वह सारे इंसानों दोबारा जीवन देदे। लेकिन अधिकतर मुफ़स्सरीन की इसी पर सहमति है कि पक्षियों के अंग अलग अलग करके उन्हें अलग अलग रखा गया होगा और अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को विशेष रूप से यह चमत्कार दिखाया था, यह कोई प्राकृतिक दर्शन नहीं था।

इस आयत का दूसरा महत्वपूर्ण सबक़ यह है कि अल्लाह सत्य की खोज में लगे बन्दों के स्वभाविक सवालों का जवाब देता है यहाँ तक कि ख़ुद पैग़म्बर ही सवाल करते हैं जिनका ईमान अल्लाह पर मज़बूत होता है और ज्ञान व्यापक होता है। और यह कि सच्ची भावना से ऐसा निर्भीक सवाल अल्लाह से इस आशंका के बिना किया जा सकता है कि वह सवाल करने वाले को धुत्कार देगा या उसका ईमान अस्वीकार कर देगा।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾

अल्लाह मालिक है उन सब चीज़ों का जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और जो बातें तुम्हारे दिलों में हैं चाहे तुम उनको ज़ाहिर करो चाहे पोशीदा रखो। अल्लाह तुम से हिसाब लेगा फिर सज़ा देगा। और अल्लाह तो हर शै पर पूरी क़ुदरत रखता है। (2:284)

इस आयत में अपने हर काम के लिए हर व्यक्ति के जवाबदेह होने को जताया गया है, चाहे वो काम जानबूझ कर किए गए हों या अनजाने में किए गए हों और चाहे वो खुलेआम किए गए हों या छुप छुपा कर। अल्लाह के रसूल सल्ल० की एक हदीस के अनुसार कोई व्यक्ति अगर किसी बुरे काम का इरादा करता है लेकिन उसे पूरा नहीं करता है तो उसे इस बात का बदला मिलेगा कि उसने बुराई को इरादा त्याग दिया (बुख़ारी, मुस्लिम)।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾

जो दुनिया का मुआवज़ा चाहता है, तो अल्लाह के पास तो दुनिया और आख़िरत दोनों का मुआवज़ा मौजूद है, और अल्लाह तो बड़ा ही सुनने वाला और बड़ा ही देखने वाला है। (4:134)

क़ुरआन इस बात पर बार बार ज़ोर देता है कि अल्लाह और आख़िरत पर ईमान इंसान को इस दुनिया और उसकी नेअमतों से दूर न करे। बल्कि यह ईमान ईमान वालों को यह इजाज़त देता है कि वो इस दुनिया की बहतरीन नेअमतों और ख़ुशियों को संयम और संतुलन के साथ बरतें। यह ईमान एक तरफ़ इंसान की भौतिक आवश्यकताओं का ख़्याल करता है और दूसरी तरफ़ इंसान की बहु मूल्य बौद्धिक व अध्यात्मिक शक्तियों को महत्व देता है, इनमें से किसी भी पहलू को नज़र अंदाज़ नहीं करता। अल्लाह और आख़रित पर ईमान के ज़रिए इंसान में पैदा होने वाले इस सुंतलन से इंसान को दोनों जगतों में ऊंचे दर्जे के इनाम मिलते हैः अल्लाह ने उनको इस दुनिया में बी बदला दिया और आख़रित में भी बहुत अच्छा बदला देगा और अल्लाह सदाचारी लोगों को पसन्द करता है (3:148)।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

आप उनसे दरयाफ्त कीजिये के किसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कह दो ये सब कुछ अल्लाह ही का है, उसने अपनी ज़ात पाक पर मेहरबानी करने को लाज़िम कर लिया है, वो तुम सबको क़यामत के रोज़ जमा करेगा के उस में कोई शक नहीं जो ख़ुद ही अपने आपको नुक़सान में मुबतला कर रहे हैं तो ये ईमान नहीं लायेंगे। (6:12)

अल्लाह एक अकेला मालिक व हाकिम होने और सर्वशक्तिमान होने के बावजूद रहीम व करीम है। वह इस दुनिया में बन्दों का मार्गदर्शन करता है और आख़िरत में उन्हें अच्छे कामों का बदला देगा जो कि ख़ुद उनके ही फ़ायदे के लिए हैं। अल्लाह की हिदायत पर चलने से इंसान व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों लिहाज़ से संतुलन पर रहता है और साथ ही साथ इस दुनिया और आख़रित में दोनों जगह इसका बदला पाता है। जबकि दूसरी तरफ़ अल्लाह के मार्गदर्शन को रद कर देने से इंसानी क्षमताओं का रास्ता रुक जाता है और इंसान इस दुनिया में संतुलित जीवन जीने से वंचित हो जाता है, और आख़िरत में मिलने वाले बदले से भी महरूम हो जाता है।

وَ قَالُوْۤا اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا وَ مَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِیْنَ ﴿۲۹﴾ وَ لَوْ تَرٰۤی اِذْ وُقِفُوْا عَلٰی
رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَیْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰی
وَ رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ
اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوْا یٰحَسْرَتَنَا عَلٰی مَا فَرَّطْنَا فِیْهَا ۙ وَ هُمْ
یَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰی ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا
سَآءَ مَا یَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا
لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ ؕ وَ لَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ
یَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

और ये कहते हैं के हमारी ज़िन्दगी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है, मरने के बाद हम दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे। और अगर तुम उनको उस वक़्त देखोगे जब ये अपने रब के सामने खड़े होंगे तो अल्लाह कहेगा क्या ये दोबारा ज़िन्दा होना बरहक़ नहीं है, तो कहेंगे, अपने रब की क़सम ये क़तई है, अल्लाह कहेगा, तो फ़िर अब मज़ा चखो उस अज़ाब का जो बदला है तुम्हारे कुफ़्र का। वही नुक़सान में रहे जो अल्लाह के सामने खड़े होने को झूट कहा करते थे, यहाँ तक के क़यामत उन तक अचानक पहुंच जाएगी, तो कहेंगे, हाय अफ़सोस! हमने क़यामत के बारे में बड़ी कोताही की, और वो अपने गुनाहों का बोझ अपनी पीठ पर उठा रहे हैं, देखो कितना बुरा है वो बोझ जो वो उठा रहे हैं। और दुनिया की ज़िन्दगी तो और कुछ भी नहीं है, सिवाये खेल और तमाशा के, और आख़िरत का घर ज्यादा अच्छा है उनके लिये जो अल्लाह से डरते रहते हैं, क्या इतनी सी बात तुम्हारी अक़्ल में नहीं आती। (6:29-32)

इन आयतों में से पहली आयत से यह मालूम होता है कि रसूल सल्ल० के ज़माने में अरब के लोगों में ऐसे भी लोग थे जो क़ियामत और आख़रित के जीवन पर विश्वास नहीं रखते थे। क़ुरआन ने ऐसे लोगों के बारे में ख़बर दी है और उनके नकारात्मक नज़रिए की तार्किक निन्दा की है। इस तरह अल्लाह ने ईमान वालों को यह शिक्षा दी कि किसी भी मामले में ईमानदारी से और तथ्यात्मक विचार करना चाहिए, पहले अपने बीच में चर्चा करनी चाहिए और फिर अगर दूसरे लोग भी वार्ता और वाद विवाद पर राज़ी हों तो उनके साथ भी। इंसानी अक़ल को केवल भौतिक मामलों और शरीरिक राहतों के लिए स्तेमाल करने तक सीमित रखने से इंसान केवल अपने पाश्विक (हैवानी) अस्तित्व और हैवानी कामों तक ही सुकड़ कर रह जाएगा। बौद्धिक सक्रिया के उच्च आदर्श अपनाने और सत्य को आत्मसात करने तथा सृजनात्मक शक्ति को स्तेमाल करने से यह बात साबित होती है कि इंसान के पास इन्द्रियों की शक्ति से भी ऊंची शक्ति इंसान की अध्यात्मिक और बौद्धिक योग्यताएं हैं। इंसानी योग्यताओं को समग्र और संतुलित रूप से विक्सित करना व्यक्ति और समाज दोनों की ज़िम्मेदारी हे, ताकि कल्पनात्मक शक्ति और ऊंचे विचारों की कमी इंसानी क्षमता को निष्क्रिय न कर दे और तथ्यों को ग़लत

ढंग से समझने का कारण न बने। यह जीवन चाहे कितना ही आनन्दायक हो, हसीन हो लेकिन फिर भी इसके बारे में गम्भीर चिंतन से इंसानी ज़हन उसकी तंगी, उसके नामुकम्मल होने और न्याय को पूरी तरह बरतने में उसकी नाकामी को जान लेता है। जो लोग इस गम्भीर चिंतन से बचते हैं वो अचानक ही इसके नतीजे देख लेंगे और तब उनकी समझ में आ जाएगा कि उन्होंने जो कुछ इस दुनिया में कमाया अगर उसकी तुलना उन इनामों या सज़ा से करें जो इस दुनिया में भी किसी समय आखिरकार मिलने वाला हो और आख़रित में तो निश्चित रूप से मिलेगा ही, तो उसका कुछ भी मूल्य उनकी नज़र में न होगा।

जो लोगा अल्लाह के आगे पेश होने की बात को झूट समझते हैं वो लोग उस समय अपना नुक़सान देख लेंगे जब आख़िरत की घड़ी अचानक उनके सामने आ जाएगी। बेशक वो लोग नुक़सान में रहेंगे जो अपनी शरीरिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक शक्तियें में और दुनिया के इस थोड़े दिनों के जीवन में और आख़िरत के अनन्त जीवन में संतुलन बनाए नहीं रखते। ऐसे लोग इस असंतुलन, कम नज़री और केवल चकाचौंध में खोए रहने के नतीजे भुगतते हैं इस जीवन में भी और आख़िरत में भी। जब किसी व्यक्ति को इस महान ग़लती का अहसास हो जाता है तो इतनी देर हो चुकी होती है कि दिशा बदलने का मौक़ा ही नहीं रहता, और अपने ग़लत रवैये के अंजाम से बचने का मौक़ा जाता रहता है।

وَ مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ
مُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَ اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ﴿۴۹﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ
خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ
لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى
اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ؕ
اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ
يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّ لَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ

हमने तमाम रसूलों को सिर्फ़ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला या सिर्फ़ डराने वाला ही बना कर भेजा है, फ़िर जो ईमान लाये और नेक काम किये तो उनका ना तो कोई ख़ौफ़ होगा, और ना कोई रंजो ग़म होगा। और जो हमारी आयात को झूटा कहेगा तो उनको उनकी नाफ़रमानियों के सबब अज़ाब होगा। आप फ़रमा दीजिये, मैं तुम से ये नहीं कहता हूं के मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ये कहता हूं के मैं ग़ैब की बातें जानता हूं, और ना मैं ये कहता हूं के मैं फ़रिश्ता हूं, मैं तो सिर्फ़ उसका इत्तेबा करता हूं जो मुझे वही किया जाता है, आप ये भी फ़रमा दीजिये के एक बीना है और दूसरा नाबीना है, तो क्या दोनों बराबर हैं, तो फ़िर तुम क्यों नहीं ग़ौर करते (और क्यों नहीं सोचते) और आप तो सिर्फ़ उनको डरायें जो अपने रब से इस सबब से डरते हैं के वो उस हालत में वहाँ जमा होंगे के जहाँ अल्लाह के सिवा उनका कोई

رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَ
كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا
اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ
اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ
بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ
عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ
بَعْدِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾

हमदर्द ना होगा और ना कोई सिफ़ारिश करने वाला ही होगा ताके वो अल्लाह ही से डरें। और उनको ना निकालिये जो सुबह व शाम अपने रब को ही पुकारते रहते हैं (उसी का ज़िक्र करते हैं और उसी की रज़ा के तालिब रहते हैं, उनके हिसाब से आपका कोई ताल्लुक़ नहीं है, और ना आपके हिसाब से उनका कोई ताल्लुक़ है के आप उनको निकाल दें, वरना आप ज़ुल्म करने वालों में से हो जायेंगे। और उसी तौर पर हमने बाज़ लोगों को दूसरों के ज़रिये से आज़माईश में डाल दिया है ताकि ये कहा करें के क्या हम सबमें से यही लोग हैं जिस पर अल्लाह न इतना बड़ा एहसान किया है, क्या ये बात नहीं है के अल्लाह अपने क़द्रदानों को ख़ूब जानता है। और जब ये मोमिनीन जो हमारी आयात पर पूरा यक़ीन करते हैं आपके पास आया करें तो आप ये कहा करें के तुम पर सलामती हो, तुम्हारे रब ने अपनी रहमत अपने ऊपर लाज़िम कर ली है के जो तुम में से नादानी के सबब बुरा काम कर ले फ़िर वो तौबा कर ले और अपने को दुरूस्त कर ले, तो अल्लाह की ये शान है के वो माफ़ कर देता है, और बड़ी मेहरबानी करता है। (6:48-54)

अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों को इंसानों की मर्ज़ी व पसन्द की आज़ादी को ख़त्म करने के लिए नहीं भेजा, बल्कि उन्हें समझाने और मनवाने के लिए भेजा, और यह बताने के लिए भेजा कि अगर वो अल्लाह की हिदायत पर चलेंगे तो इस दुनिया में भी और आख़रित में भी उन्हें इसका बहतरीन बदला मिलेगा, और जो लोग अपनी बुद्धिमता व अध्यात्मिक चेतना को नज़र अंदाज़ करेंगे और थोड़े दिनों के फ़ायदे के लिए ख़ुद अपने या दूसरों के विचारों पर अल्लाह की हिदायत के बग़ैर चलेंगे उन्हें उनके अंजाम से चेताने के लिए भेजा। अल्लाह के पैग़म्बरों का अपना कोई स्वार्थ नहीं होता, न वो कभी अल्लाह के ख़ज़ानों के बारें अपने ज्ञान और अधिकार का दावा करते हैं, और केवल उस पैग़ाम को लोगों तक पहुंचाते हैं जो उन पर उतरता है। इस तरह उनकी ज़िम्मेदारी उन तमाम लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने की थी जिन तक उनकी दावत पहुंच सकती थी, और उन्होंने सत्य के खोजी किसी व्यक्ति या समूह से मुंह

नहीं मोड़ा चाहे उस समूह को दूसरे लोग पसन्द न भी करते हों या उन्हें हक़ीर (तुच्छ) समझा जाता हो। अल्लाह और उसके दीन ने न्याय की जो शिक्षा दी है वह उन लोगों के पैग़ाम और अमल में नज़र आनी चाहिए जो अल्लाह का पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाते हों क्योंकि वो भी उस के लिए इसी तरह जवाबदेह होंगे जिस तरह वो लोग जिनको दावत दी गयी हो और पैग़ाम पहुंचाया गया हो।

अल्लाह के इंसाफ़ के मामले में किसी की रिआयत या तरफ़दारी की कोई गुंजाइश नहीं है। लोगों को अल्लाह की शिक्षाओं पर अमल करना है और अपने आपसी सम्बंधों में न्याय का बरताव करना है, इस बात से अलग कि वो शक्तिशाली हों या कमज़ोर और अमीर हों या ग़रीब। अल्लाह की हिदायत और इंसाफ़ को अपनाने से उनके अमल में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मज़बूती और संतुलन आएगा और इस दुनिया में भी और आख़िरत के अनन्त जीवन में भी वो प्रसन्न रहेंगे। अलबत्ता अल्लाह अपनी लगतार जारी रहने वाली पा से नवाज़ने के लिए कुछ ख़ास लोगों को निश्चित नहीं करता और न मुस्तक़िल लानत में रखने के लिए कुछ ख़ास लोगों को ही तय करता है। जो कोई भी किसी बुराई में लिप्त होता है उसके लिए इस बुराई से रुक जाने, तौबा करने और सीधा रास्ता अपनाने के लिए मौक़ा मिला हुआ है। इन आयतों में अल्लाह तआला ख़ुद यह फ़रमा रहा है कि अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत को वाजिब कर लिया है। वो ख़ुद ही अपने आपको ग़फ़ूरुर्रहीम कहता है। दूसरे स्थानों पर भी उसने अपनी यह शान बताई है कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और अज़ाब देने में बहुत कठोर है।

अल्लाह के जितनी भी गुण हैं उनसे इंसानी ज़हन को वह कुछ समझने में मदद मिलती है जो इंसान की कल्पना शक्ति से भी परे है, चाहे वह ख़ुद ख़ुदा की हस्ती हो या इस दुनिया में अपनी मख़लूक़ात से उसके सम्बंधों का मामला हो या उसके फ़ैसले व जज़ा का मामला हो और दूसरी तरफ़ उसकी रहमत व मग़फ़िरत हो।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ
مَعَهُمْ ۚ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَ
هُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝

आप फ़रमा दें के अपने गवाहों को लाओ जो इस बात पर शहादत दें के अल्लाह ने उन मज़कूरा चीज़ों को हराम कर दिया है, फ़िर अगर वो गवाही दे दें तो आप उस शहादत की समाअत ना फ़रमाना, और उनके बातिल ख़्यालात पर मत चलो जो हमारी आयात की तकज़ीब करते हैं और आख़िरत पर ईमान भी नहीं लाते, और अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। (6:150)

अल्लाह का क़ानून अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर ईमान पर आधारित है और उसके

मार्गदर्शन पर निर्भर है। कोई ईमान वाला यह दावा नहीं कर सकता कि उसे अल्लाह के क़ानून में क्या पसन्द है, क्योंकि मोमिन का यह ईमान होता है कि अल्लाह उससे बहुत ही क़रीब है और इस बात से बाख़बर है कि उसका दावा क्या होगा। वह फ़ैसले वाले दिन निश्चित रूप से अल्लाह से मिलेगा, जहाँ उसके पास कोई बहाना नहीं होगा। जबकि दूसरी तरफ़ कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो यह बाते बनाएंगे कि उन्होंने दूसरों के बहकावे में आकर अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक किया, और वो ख़ुद को अल्लाह के फ़ैसले और अज़ाब से अनभिज्ञ ज़ाहिर करेंगे। ये दोनों पक्ष एक दूसरे से कभी नहीं मिल सकते न कोई समझौता कर सकते हैं। यह अल्लाह के क़ानून की कामयाबी का अनिवार्य तत्व है कि यह ईमान के साथ साथ काम करता है, और मोमिनों का क़ानून पर चलना उसके ईमान की वजह से आसान होता है कि दुनिया में उसके हर काम पर अल्लाह की नज़र है, और यह कि आख़िरत में उसे अल्लाह के फ़ैसले और बदले का सामना करना है।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾

जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी तलाश किया करते थे और वो आख़िरत को भी नहीं मानते थे। (7:45)

मन्दबुद्धि लोग अल्लाह के पैग़ाम में हेरफेर करने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों को उससे दूर कर दें, या अपने बिगाड़ और दुराचार को सही ठहराएं। इस संक्षिप्त जीवन की क्षणिक आनन्दों तक ही खुद को सीमित रखने और आख़िरत के जीवन को नज़र अंदाज़ करने या उसका इंकार करने से आदमी के अन्दर स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता और भृष्ट आचरण पैदा होता है और वह अपने व दूसरों के व्यवहार से धोखा खाता है। इस तरह की छोटी सोच रखने वाले (मर्द या औरत) को किसी दूसरे को सही रास्ते से भटकाने में मज़ा आता है। लेकिन जो कोई भी सत्य और तथ्यों से मुंह मोड़ता है और सच्चाई में शक शुबा पैदा करता है वह ख़ुद अपनी अक़ल और नैतिकता को व्रित करके बर्बाद हो जाता है।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾

और जो हमारी आयात को और आख़िरत के होने का झुटलाया करते हैं, उनके सारे आमाल बर्बाद हो गए, और उनको वही सज़ा दी जाएगी जो वा करते थे। (7:147)

जो लोग इस अस्थाई जीवन के क्षणिक आनन्दों में मगन रहते हैं उनके कामों को क़ुरआन बार बार बे नतीजा और बे फ़ायदा बताता है (क़ुरआन में शब्द हबत स्तेमाल किया गया है

जिसका मतलब है कि आख़िरकार बेनतीजा रहना, यह शब्द क़ुरआन की 16 आयतों में स्तेमाल हुआ है)। अक़्ल से काम न लेने और ज़मीर की आवाज़ को दबाने का अनिवार्य नतीजा मानसिक और सामाजिक असंतुलन है और इससे अहंकार व भौतिकतावाद को बढ़ावा मिलता है। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान व्यक्तियों के व्यवहार को संतुलित और नियंत्रित रखता है और इसी से समाज में लोगों के आपसी सम्बंधों में संतुलन रहता है। यह अक़ीदा न होने पर इस जीवन के उतार चढ़ाव का सामना करने में इंसान की ऊर्जा व्यर्थ होती है क्योंकि वह कभी घमण्ड व अहंकार की भावना में मुब्तिला होता है और कभी हीनभावना का शिकार होता है, और उसके अन्दर आत्मसराहना की भावना बनी रहती है। जब कोई व्यक्ति इस जीवन की यात्रा के अंत तक पहुंच जाता है जो कि निश्चित रूप से होना ही है, और उस स्थिति से उसका सामना होता है जिसका वह इंकार करता रहा है/रही है तो उसका तेज़ी से बीता हुआ जीवन का बेकार हो जाना उसके सामने ज़ाहिर हो जाता है और सच्चाई बिल्कुल स्पष्ट होकर उसके सामने खुल जाती है, और ऐसी कड़ी यातनाओं का सिलसिला शुरू होता है जो हमैशा जारी रहेंगी और कभी समाप्त न होंगी।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۵﴾
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ ؕ وَ لَا
يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ
الَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ
بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ
وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ
يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا
كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا

और अल्लाह तआला सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। जो नेक काम करते हैं उनके लिये भलाई है, और इससे ज्यादा भी है, और उनके चेहरों पर ना तो स्याही छायेगी और ना ज़िल्लत, यही लोग जन्नत वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे। और जो लोग बुराई करते हैं तो बुराई का बदला उसके बराबर होगा, और उन (के चेहरों) पर ज़िल्लतो रूसवाई छा जाएगी और अल्लाह से उनको बचाने वाला कोई ना मिलेगा (उनके चेहरों पर स्याही) गोया अंधेरी रात के टुकड़े मिल गए हैं, यही दोज़ख वाले हैं, वो हमेशा उसमें रहेंगे। और जिस रोज़ हम उन सबको जमा करेंगे, फ़िर हम मुशरिक़ों से कहेंगे के तुम और तुम्हारे शरीक अपनी अपनी जगह ठहरे रहो, फ़िर हम उनमें तफ़र्रूक़ा डाल देंगे, तो उनके शरीक उनसे कहेंगे, तुम हमको तो नहीं पूजते थे। तो हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है के हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। वहाँ हर शख़्स अपने आमाल की जो उन्होंने आगे भेजे थे जांच पड़ताल करेगा और

كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

अल्लाह की तरफ़ जो उनका मालिके हक़ीक़ी है लौटा दिये जायेंगे, और जो माबूद उन्होंने तराश रखे थे, वो सब उनसे ग़ायब हो जायेंगे। (10:25-30)

यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि आख़िरत के जीवन में मिलने वाली हमैशा की जन्नत को क़ुरआन में 'सलामती का घर' (शान्ति ग्रह) कहा गया है। सलामती यानि अस्सलाम अल्लाह का एक गुण है। जन्नत दारुस्सलाम और अल्लाह तआला अस्सलाम है, इन दोनों शब्दों का मूल इस्लाम है, अर्थात वह आस्था जो इस दुनिया में व्यक्ति और समाज को संतुलन, शान्ति और संतोष देती है।

यहाँ क़ुरआन आख़रित के जीवन के कुछ नज़ारे बयान करता हे, और ये बयान बाइबिल में प्रस्तुत किए गए बयानों से ज्यादा स्पष्ट, निश्चित और तफ़सीली हैं। क़ुरआन में जन्नत को अमन का घर कहा गया है तो इसका अर्थ यह है कि वहाँ भविष्य की कोई आशंका नहीं होगी, वर्तमान पर कोई निराशा न होगी और बीत चुके पर कोई पछतावा नहीं होगा। जो लोग इस जीवन में अच्छे कर्म करते हैं वो आख़रित के जीवन में इनाम और पुरस्कार पाएंगे। दूसरी तरफ़ वो लोग जो इस जीवन में बुरे काम करते हैं वो अपने बुरे कामों का बुरा अंजाम देखेंगे, और उनके साथ कोई अन्याय नहीं होगा। ये लोग इस जीवन में कभी कभी निराश होते हैं और आख़रित के जीवन में वो निश्चित रूप से अपने बीते कल पर पछताएंगे और दुखी होंगे और अपने भविष्य के बारे में निश्चित अंजाम से भयभीत होंगे। उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, वो भी नहीं जिनको उन्होंनें अपनी इबादत में अल्लाह के साथ शरीक किया होगा, जबकि अच्छे कर्म करने वाले हर डर और आशंका से बचे होंगे और अल्लाह की पा व महरबानी से ख़ुश होंगे।

आख़िरत के जीवन में तकलीफ़ें झेलने वालों और मज़ा उठाने वालों के इस मंज़र को दिखाते हुए क़ुरआन व्यक्तिगत जवाबदेही पर ज़ोर देता हेः वहाँ हर व्यक्ति (अपने कर्मे की) जो उसने आगे भेजे होंगे जांच कर लेगा और वह अपने सच्चे मालिक की तरफ़ लोटाए जाएंगे और जो कुछ वो लांछन लगाया करते थे सब उनसे जाता रहेगा। इस प्रभावपूर्ण चित्रण और चेतावनी का मक़सद हर व्यक्ति को यह समझाना है कि वह आख़िरत के जीवन में आनन्द प्राप्त करने और वहाँ की पीड़ा और यातना से बचने के लिए इस दुनिया में कठिन परिश्रम करे।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا

जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी ज़ीनत चाहता है, तो हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं, और उनके लिये दुनिया में कोई कमी नहीं की जाती।

يُبْخَسُوْنَ ۝١٥ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦

यही हैं जिनके लिये आख़िरत में दोज़ख के सिवा कुछ नहीं है, और आख़िरत में उनके आमाल बर्बाद होंगे, और वो जो कुछ कर रहे हैं बे असर हैं। (11:15-16)

अल्लाह की न्यायिक व्यवस्था यह है कि उसने इस दुनिया को इंसान की परख की जगह बनाया हे, जो लोग इस दुनिया के भौतिक फ़ायदों को प्राप्त करने के लिए मेहनत करते हैं उन्हें उनकी मेहनत का भरपूर बदला इस दुनिया में मिलेगा चाहे उनकी आस्था जो कुछ भी हो। सूरज और चांद, हवा और पानी, दरिया और नदियां, पेड़ पौधे और पशु पक्षी और समस्त प्राकृतिक संसाधन बिना भेदभाव सभी इंसानों के लिए पैदा किए गए हैं। उनके संदर्भ में हर व्यक्ति को परखा जाएगा और आख़िरत के जीवन में उसका नतीजा उसके सामने पेश किया जाएगा। इस दुनिया के संसाधनों में मोमिनों के लिए अल्लाह की तरफ़ से कोई विशेष छूट नहीं हैं, उन्हें भी काम और मेहनत करके की इन संसाधनों से लाभान्वित होना है, कोई चमत्कारी और मुत इनाम उनके लिए नहीं रखा गया हैः हम उनको (भी जो आख़िरत के तलबगार हैं) और उन सब को (भी जो इस दुनिया में तुरन्त प्राप्त होने वाले फ़ायदों को प्राप्त करने के लिए लगे रहते हैं) तुम्हारे रब की देन से मदद देते हैं और तुम्हारे रब की देन किसी से रुकी हुई नहीं है (17:20)। अलबत्ता अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर ईमान से इस दुनिया में व्यक्ति और समाज को एक संतुलित जीवन जीने का सम्मान प्राप्त होता है और अगर ईमान वाले भी मेहनत करेंगे तो इस दुनिया के भौतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक फ़ायदे उन्हें भी दुनिया में प्राप्त होंगे, और यह व्यक्तिगत व सामाजिक स्थिरता का नतीजा होगा, नाकि कोई चमत्कारी इनाम कि जो मोमिनों को दिया जाए और दूसरों के नहीं।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝١٨ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝١٩ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝٢٠ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ

जो दुनिया चाहता है तो हम उसको दुनिया में जितना चाहेंगे और जिसके वास्ते चाहेंगे दे देंगे, फ़िर हम उस के लिये जहन्नुम तजवीज़ करेंगे वो उसमें बदहाल रांदए (दरगाह) होकर दाख़िल होगा। और जो आख़िरत की नीयत रखेगा और उसके लिये ऐसी कोशिश करेगा, जैसा के चाहिये और वो मोमिन भी हो तो उनकी ये कोशिश मक़बूल होगी। आपके रब की अता में से हम इनकी भी इम्दाद करते हैं और उनकी भी और आपके रब की ये अता (दुनियावी) किसी पर बन्द नहीं है। आप देख लें के हम एक को दूसरे पर किस तरह फ़ौक़ियत देते हैं, और अलबत्ता आख़िरत दर्जात के लिहाज़ से भी

बड़ी है और फ़ज़ीलत के एतबार से भी बहुत बड़ी है। أَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّ أَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾
(17:18-21)

इन आयतों में भी (पिछली आयतों 11:15-16 की तरह) एक बार फिर इस बात पर ज़ो दिया गया है कि अल्लाह का क़ानून यह है कि जो कोई भी काम करता है/करती है उसे उसके काम का नतीजा प्राप्त होता है, चाहे उसकी आस्था कुछ भी हो। अल्लाह का इंसाफ़ हर इंसान को बल्कि हर जीवित प्राणि को यह मौक़ा देता है कि प्रति के संसाधनोंः रोशनी, हवा, पानी वग़ैरह से फ़ायदा उठाए, और यह उसके अपने ऊपर है कि वह इन संसाधनों को अच्छे उद्देश्यों के लिए स्तेमाल करता है या ग़लत उद्देश्य के लिए। अल्लाह पर और आख़िरत के जीवन पर ईमान इस दुनिया के जीवन में व्यक्तिगत और सामाजिक स्थिरता को बढ़ाता है और उनका बहुत अधिक बदला आख़रित के जीवन में मोमिनों को मिलेगा। अलबत्ता, इस दुनिया के जीवन में कोई भी व्यक्ति अपनी कोशिशों की बदौलत एक निर्धारित सीमा तक अपने फ़ायदे समेट सकता है लेकिन इंसानी अक़्ल की क्षमता को नज़र अंदाज़ करने का प्रभाव इस जीवन पर पड़ेगा, और आख़रित के जीवन में व्यक्ति का भविष्य बर्बाद हो जाएगा। जो लोग दुनियावी भौतिक फ़ायदे प्राप्त करने से ज्यादा कुछ नहीं चाहते वो उन भौतिक फ़ायदों को तो प्राप्त कर सकते हैं और उनका दुरूपयोग करने की भी क्षमता रखते हैं लेकिन जो लोग खुले ज़हन के और दूरदर्शी हैं वो अपने आचार विचार में इस दुनिया के जीवन से भी आगे के फ़ायदे व नुक़सान का ख़्याल रखते हैं और इस दुनिया के जीवन में भी अल्लाह का फ़ज़ल (पा) प्राप्त करते हैं क्योंकि यहाँ बदला पाने के लिए भी वो काम करने की शर्तों को पूरा करते हैं। जब आचरण की बुनियाद अल्लाह पर और आख़रित के जीवन में विश्वास पर रखी जाती है तो आचरण की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जड़ें बहुत गहरी हो जाती हैं और सार्वजनिक व दीगर तमाम इंसानी गतिविधियें में आपसी समन्वय पर उसके प्रभाव बहुत व्यापक होते हैं।

तथापि, इस दुनिया के जीवन में ईमान और आचरण मेहनत व मुशक़्क़त में नज़र आना चाहिए ताकि प्रति के जनक ने जो प्राकृतिक नियम बनाए हैं उनके अनुसार इस मेहनत का अच्छा बदला मिले। अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर ईमान ईमान वालों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है, क्योंकि इस ईमान के नतीजे में वो इस दुनिया में काम करते हुए पेश आने वाले उतार चढ़ाव का सामना करने में अधिक संतुलित और मज़बूत होते हैं, क्योंकि वो राहत व आराम की स्थिति में शुक्रगुज़ार होते हैं और तंगी व कठिनाई की स्थिति में सब्र करते हैं (हदीसः इब्ने हंबले व इब्ने माजा)। इस तरह ईमान वाले दुनिया के इस जीवन में जिस स्थिति में भी हों, भलाई व अच्छाई कमाते हैं और आख़िरत के जीवन में यहाँ से कहीं अधिक बहतर बदले और पुरस्कार पाएंगे। जो लोग अपनी शरीरिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक शक्तियों को

काम में लाएंगे वो दुनिया के इस जीवन में उनसे ज़्यादा कामयाब होंगे जो केवल भौतिक लाभ पर अपना ध्यान केन्द्रित रखते हैं, क्योंकि भौतिक व अध्यात्मिक पहलू दोनों पहलुओं पर ध्यान देने वाले लोग दुनिया में सफ़लता की स्थिति में अनुकूलता बनाए रखने में अधिक स्थिरता और संतुलन पर बने रहते हैं। लेकिन इन दोनों तरह के दृष्टिकोण का अन्तर आख़िरत के जीवन में दिखाई देगा जहाँ संकीर्ण नज़र रखने वाले भौतिकतावादी लोग नुक़सान उठाने वालों में होंगे क्योंकि आख़िरत दर्जों में (दुनिया से) बहुत बरतर और बरतरी में कहीं बढ़ कर है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

जो शख़्स आख़िरत की खेती का ख़्वास्तगार हो उस को हम उस में से दे देंगे और जो दुनिया की खेती का ख़्वास्तगार हो उस को हम उसमें से देंगे और उसका आख़िरत में कुछ हिस्सा न होगा। (40:20)

अल्लाह तआला इस दुनिया के जीवन में हर एक को उसके काम का बदला देता है, लेकिन आख़िरत के जीवन में वह लोगों को उनकी नियतों और कर्मों का बदला देगा। अलबत्ता, अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर विश्वास व्यक्ति को अपनी बौद्धिक और अध्यात्मिक शक्तियों को सही ढंग से काम में लाने का कारक बनता है और व्यक्तिगत व सामाजिक स्थिरता व संतुलन लाता है (और देखें 11:15-16; 17 19-20)।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ وَ فَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝

अल्लाह जिसका रिज़्क़ चाहता है फ़राख़ कर देता है, और जिसका चाहता है तंग कर देता है, और काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश रहते हैं और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ नहीं बजुज़ मताअ क़लील के। (13:26)

अल्लाह व्यक्तिगत योग्यताओं और कौशल के रूप में और प्राकृतिक संसाधनों के रूप में लोगों को जो कुछ भी देता है उसकी मात्रा और गुणवत्ता अलग अलग होती है। लेकिन हर व्यक्ति की परीक्षा उसी चीज़ में है जो कुछ उसे दिया गया है, और अगर इंसानों की ऊर्जा सही तरीक़े से स्तेमाल में आए और आपसी सहयोग से काम लिया जाए जो कि इंसानों के बीच अपेक्षित और ज़रूरी है तो कोई इंसान या कोई क्षेत्र ऊर्जा और संसाधनों की कमी से बर्बाद नहीं होगा। इंसानों की प्रतिभाएं और ऊर्जाएं तमाम लोगों के लिए होती हैं, जिनसे ऐसा व्यक्ति भी अपनी योग्यताओं की बदौलत अपनी ज़रूरत पूरी कर सकता है और फ़ायदा उठा सकता है जो किसी मालदार घराने में पैदा न हुआ हो या वह अपनी रोज़ी कमाने की क्षमता ही न

रखता हो। और प्राकृतिक संसाधनों से महरूम या कम संसाधनों वाली जनता की आमदनी दूसरे ऐसे साधनों को विक्सित करने मे लग सकती है जो अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सेवाओं से सम्भव हों। जो व्यक्ति या राष्ट्र मालदार हैं उनकी परीक्षा इस बात में है कि वो अपनी दौलत को किस तरह बरतते हैं और ख़ुद अपनी जनता के फ़ायदे के लिए उसे कितना व किस तरह स्तेमाल करते हें, जबकि वो व्यक्ति और क़ौमें जो अपने जीवन की शुरूआत कठिन स्थितियों से करते हैं उनका इम्तेहान इस बात में है कि वो अपने अस्तित्व को बनाए रखने और विक्सित करने के लिए अपनी क्षमताओं और कौशल को किस तरह काम में लाते हें, और दूसरों के साथ कितना सहयोग करते हैं। यह संतुलन और समन्यव उसी समय स्थापित हो सकता है जब इंसानी सूझबूझ और जीवन की धारणाओं को इस बहुत ही छोटे से संसारिक जीवन की सीमा तक सीमित न रखा जाए।

अच्छी उम्मीद रखना, सक्रिय रहना, संतुलन और न्याय पर बने रहना आख़िरत के जीवन में विश्वास से ही सम्भव है। इस दृष्टि से उन व्यक्तियों और क़ौमों को जो मालदार हैं अपनी दौलत समझदारी और ज़िम्मेदारी के साथ इस्तेमाल करना चाहिए, और जो लोग ख़ुद को ऐसी स्थिति में नहीं पाते उन्हें निराश नहीं होना चाहिए और अपनी ऊर्जा व प्रतिष्ठा को खोना नहीं चाहिए, और अपनी बदहाली पर क़ाबू पाने के लिए पूरी कोशिश करना चाहिए। अगर ठीक से समझा जाए तो आख़िरत के जीवन में विश्वास इंसानी सक्रियता और कार्यकुशलता को बढ़ाता है और विक्सित करता और जीवन में स्थिरता लाता है।

وَ اِنۡ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعۡضَ الَّذِىۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ وَ عَلَيۡنَا الۡحِسَابُ ۝

और अगर हम आपको कोई अज़ाब दिखा दें जिसका वादा हम करते हैं या तुम्हारी ज़िन्दगी पूरी कर दें (और फ़िर अज़ाब भेजें) तो तुम्हारा काम तो सिर्फ़ पहुंचाना है, और हमारा काम हिसाब लेना है। (13:40)

यह आयत इस सच्चाई पर ज़ोर देती है कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक इंसान ही थे जिनकी ज़िम्मेदारी अल्लाह के बन्दों का अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाना था और लोगों पर वह कोई पहरेदार नहीं थे, और यह कि हर व्यक्ति आख़िरत के दिन सिर्फ़ अल्लाह के आगे जवाबदेह होगा। हर व्यक्ति के व्यवहार और कर्मों की जांच केवल अल्लाह तआला करेंगे क्योंकि वही हैं जो हर व्यक्ति के तमाम ज़ाहिरी और छुपे हालात को जिन से किसी भी समय वह दोचार हुआ हो, जानता है।

وَالَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا

और जिन्होंने ज़ुल्म सहने के बाद अल्लाह के लिये वतन छोड़ा तो हम उनको दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे, और

ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَ
لَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝

आख़िरत का अज्र तो बहुत ही बड़ा है, काश वो उसे जानते होते। यानी वो ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (16:41-42)

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मक्की युग में आप पर ईमान लाने वालों के साथ जो अत्याचार किया जा रहा था उसका मुक़ाबला करते हुए अपने ईमान पर जमे रहने के लिए आख़िरत के जीवन पर मोमिनों का ईमान पक्का करने के उद्देश्य से उनके इस ईमान को लगातार सींचा गया। कुछ लोगों को अपना घर बार छोड़ने पर मजबूर किया गया और जिस माहौल में वो शान्ति के साथ रह रहे थे उस माहौल को उन से छीना गया। क़ुरआन ने उन लोगों से कहा कि उनके लिए इस दुनिया में एक अच्छा ठिकाना होगा चाहे वह उनका वही ठिकाना हो जहाँ वह पहले से बसते हैं और उस ठिकाने पर उन्हें वापस लोटा दिया जाए, या कोई दूसरा स्थान हो जो उनका वतन बन जाए। इसके अलावा आख़िरत के जीवन में उन लोगों के लिए महान और निश्चित बदला होगा जिन्होंने इस दुनिया में अल्लाह के लिए कष्ट झेला होगा, उनमें से कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो प्रताड़ना और उत्पीड़न को झेलते हुए ही इस दुनिया से चले गए हों और दुनिया में उन्हें अच्छा मुक़ाम न मिल सका हो।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَ
نُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ
مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ
الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝

और हमने हर इन्सान का अमल उसके गले का हार बना कर रखा है, और क़यामत के दिन हम उसका आमाल नामा उसके वास्ते निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसको वो खुला हुआ देख लेगा। अपना आमाल नामाा ख़ुद पढ़े ले, और आज तू ख़ुद अपना आप ही मुहासिब काफ़ी है। (17:13-14)

किसी व्यक्ति का भाग्य फाल खोलने, पक्षियों की हरकतों, सितारों की चालों, शगून या किसी भी प्राणि के किसी काम पर निर्भर नहीं होता। यह हर व्यक्ति के अपने कर्मों पर आधारित होता है, ये कर्म चाहे जैसे भी हो, पूरी तरह रिकार्डे में सुरक्षित रहेंगे और फ़ैसले वाले दिन हर व्यक्ति के कर्म उसके सामने लाए जाएंगे। यह रिकार्ड पूरी तरह सही होगा और इससे बच कर कोई नहीं निकल सकेगा, और हर व्यक्ति को अपने कर्मों को ख़ुद स्वीकार करना होगा, और इस तरह वह मर्द या औरत अपना हिसाब स्वयं पेश करेगा/करेगी और अपने ख़िलाफ़ ख़ुद ही गवाही देगा/देगी।

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۴۹﴾ قُلْ كُوْنُوْا
حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿۵۰﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا
يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ
يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ
فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾
يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ
تَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾

और कहते हैं के जब हम हडिडयां और चूर चूर हो जायेंगे तो क्या अज़सरे-ना पैदा होकर उठेंगे। कह दो, तुम चाहे पत्थर हो जाओ या लोहा या और कोई चीज़ जो तुम्हारे नज़दीक बहुत ही बईद (और नामुमकिन हो) झट कहेंगे भला हमें दोबारा कौन जिलाएगा, कह दो के वही जिसने पहली बार पैदा किया था (ताज्जुब से) तुम्हारे आगे सर हिलायेंगे और कहेंगे, ऐसा कब होगा, कह दो के उम्मीद है के जल्द होगा। जिस रोज़ तुम को पुकारेगा तो तुम तामीले हुक्म करोगे उसकी तारीफ़ करते हुए और ख़्याल करोगे के तुम बहुत कम रहे थे। (17:49-52)

अल्लाह के बारे में या क़ियामत और आख़िरत के बारे में क़ुरआन के तर्क पूरी तरह स्पष्ट हैं। क़ुरआन पढ़ने वाले को ऐसा लगता है कि जैसे अलग अलग पक्ष एक दूसरे के सामने अपने तर्क रख रहे हैं, एक दूसरे को चुनौती दे रहे हैं और तर्क वितर्क का एक क्रम उसके सामने है। इन पक्षों की अदाएं जैसे सर हिलाना, भंवें सिकोड़ना वग़ैरह की भी मंज़र निगारी की गयी है। इस तरह क़ुआन ईमान वालों को दूसरों के सामने नैतिक और तथ्यात्मक रूप से तर्क रखना सिखाता है और दूसरों के उन तर्कों को सुनने की शिक्षा देता है जो वो शराफ़त से पेश करें, और यह कि उनकी किसी बात से दिल छोटा न करें।

एक पक्ष यह सवाल करता है कि क्या मरने के बाद जब हड्डिया सड़ गल जाएंगी तो क्या फिर नए सिरे से पैदा होंगे? उनके शक का जवाब यह है कि अगर वो पत्थर या लोहा भी बन जाएं या कोई और चीज़ ऐसी बन जाएं जिसका लुप्त होना या जिसमें जान पड़ना असम्भव हो तो भी अल्लाह की क़ुदरत से यह बाहर नहीं कि वह उनमें जान डाल दे और दोबारा से पैदा कर दे। कोई व्यक्ति शक में अपना सर हिलाते हुए यह कह सकता है कि यह चमत्कार कब होगा? कोई भी इंसान उसका सही समय नहीं बता सकता, वह घड़ी निश्चित रूप से आएगी लेकिन उसका ज्ञान अल्लाह को ही है और वह जब चाहेगा तब आएगी। यह अचानक ही आ जाएगी और उस समय हर व्यक्ति यह महसूस करेगा कि उसका पिछला जीवन बहुत छोटा था और जीवन बहुत जल्दी समाप्त हो गया। क़ुरआन इस तरह कहता है कि ज़मीन पर इंसान को अपना जीवन ऐसा लगेगा कि बस एक घड़ी या दो घड़ी, जबकि आख़िरत का जीवन अनन्त होगा। उस दिन अल्लाह का गुणगान व्यवहारिक रूप से यही होगा कि उसने चमत्कारी ढंग से नया जीवन शुरू कर दिया, जिससे अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर होती है, और ईमान वाले या वो

सारे इंसान जिन्हें दोबारा पैदा किया गया होगा अल्लाह की वन्दना व गुणगान अपने अस्तित्व की भाषा से कर रहे होंगे, चाहे दुनिया में उनकी आस्था जो कुछ भी रही हो (ज़मख़शरी और तिबरी की व्याख्या के मुताबिक़)। पिछले जीवन में इंसान कितना ही कम नज़र रहा हो लेकिन नए सिरे से पैदा किए जाने पर हर एक की आँखें खुल जाएंगी और अल्लाह की बे मिसाल क़ुदरत और दुनिया के इस छोटे से जीवन के बाद उसके फ़ैसले को देख कर लोगों की बुद्धि दंग रह जाएगी।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ
الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ
مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَ
نُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا
اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ
مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ
هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَ رَبَتْ وَ اَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ
بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّهٗ
يُحْيِ الْمَوْتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ۝
وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَ اَنَّ
اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝

ऐ लोगों! अगर तुम को मरने के बाद जो उठने में कोई शक है, तो हम ने पहले बार तुम को मिटटी से पैदा किया, फ़िर नुतफ़े से, फ़िर ख़ून के लोथड़े से, फ़िर बोटी से के पूरी होती है और नाक़िस भी, ताके हम तुम्हारे सामने अपनी ख़लक़ीयत ज़ाहिर कर दें, और हम जिसको चाहते हैं एक मुद्दत तक रहम में ठहराये रखते हैं फ़िर तुम को बच्चा बना कर निकालते हैं, ताके तुम जवानी को पहुंच जाओ, और बाज़ तुम में से मर जाते हैं, और बाज़ निहायत ख़राब उम्र की तरफ़ लौट जाते हैं, जिसका नतीजा ये होता है के जानने के बाद भी बे इल्म हो जाते हैं और ऐ देखने वाले तू देखता है के एक वक़्त में ज़मीन ख़ुश्क पड़ी होती है फ़िर जब हम उस पर मेंह बरसाते हैं तो वो शादाब हो जाती और उभरने लगती है और तरह तरह की बारौनक़ चीज़ें उगाती है। ये इसलिये हुआ के अल्लाह बरहक़ है, और ये के वो ज़िन्दा करता है, और ये के अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और ये भी साबित है के क़यामत आने वाली है, उसमें ज़रा भी शक नहीं, और ये भी के अल्लाह सब क़ब्र वालों को दोबारा ज़िन्दा करेगा। (22:5-7)

यहाँ क़ियामत और आख़िरत के सम्बंध में एक और तर्क दिया गया है और यह याद दिलाया गया है कि इंसान की पैदाइश के विभिन्न चरण ख़ुद यह ज़ाहिर करते हैं कि पैदा करने वाला महान रब अल्लाह उसे फिर से जीवन दे सकता है जिसे उसने पहली बार पैदा किया है। जीव वैज्ञानिक यह बात अच्छी तरह समझ सकते हैं कि इंसानी जीवन की शुरूआत और विकास का जो हाल क़ुरआन बयान करता है वह कितना सटीक है, कि वीर्य की एक बूंद किस

तरह अण्डाश्य के साथ मिल कर रक्त का थक्का बनाती है, फिर यह लोथड़ा गर्भ में विक्सित होता है और एक गांठ जैसा कठोर टुकड़ा बन जाता है जो एक सीमित अवधि तक गर्भ में पलता रहता है और समय आने पर एक इंसानी वजूद के रूप में मां के पेट से बाहर निकल आता है। फिर इस नन्हे वजूद में फलने फूलने की क्रिया शुरू होती, शिशु अवस्था से प्रौढ़ अवस्था में आने तक के चरण तय होते हैं, बालिग़ होने के बाद जवान होने और जवान होने के बाद बूढ़ा होने की स्थिति आ पहुंचती है और इंसान का जीवन उसी तरह कमज़ोरी की अवस्था में पलट जाता है जैसी कमज़ोरी उसकी शिशु अवस्था में थी। इस चित्रण के ज़रिए इस आयत में यह ग़ौर करने की प्रेरणा दी गयी है कि देखो किस तरह वास्तविक सृष्टा इंसान को पैदा करता है और विक्सित करता है, और इसी तरह जब वह चाहेगा तो मुर्दा अस्तित्व को फिर से जीवित कर देगा।

हमारे चारों ओर जीवन के नज़ारे विभिन्न रूपों और हालतों में बिखरे हुए हैं। ज़मीन सूख कर मुर्दा हो जाती है, और जब तक अल्लाह पानी नहीं बरसाता यह ऊसर बनी रहती है, पानी बरसने से उसके अन्दर जीवन लोट आता है और पेड़ पौधे उगने लगते हैं और तरह तरह के रंगों से सुसज्जित बहार (बरखा) छा जाती है, और यह सब कुछ हर पौधे की दो प्लगों के मिलन और सहक्रिया से होने वाले उपजाउपन और उत्पादन प्रक्रिया के ज़रिए होता है। इन रंग बिरंग सुन्दर नज़ारों की रचना करने वाला निश्चित रूप से एक नया जीवन और नया जगत रच सकता है। इंसान को अपने शरीरिक विकास से अपने अध्यात्मिक विकास की तरफ़ ध्यान देना चाहिए जो शरीर के साथ मिल कर एक स्वस्थ और संतुलित इंसानी जीवन बनाती है।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَ
اَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا
بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَ
يَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ لَئِنْ اَطَعْتُمْ
بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾
اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَ كُنْتُمْ تُرَابًا وَّ
عِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है, उसके नूर की मिसाल ये है, गोया के एक ताक़ है, उसमें एक चिराग़ है, और चिराग़ क़नदील में है, वो क़नदील ऐसा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ है, गोया के तारा है जो चमकता है मोती की तरह से, वो चिराग़ एक मुबारक दरख़्त ज़ैतून से रौशन किया गया है जो ना जानिबे मशरिक़ में हो, ना जानिबे मग़रिब में, उसका तेल ख़्वाह आग ना भी छुये जलने के लिये तैयार है रौशनी पर रौशनी, अल्लाह अपने नूर से जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, और अल्लाह मिसालें बयान करके लोगों को समझाता है, और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब जानने वाला है। वो क़नदील उन घरों में है जिनके बारे में ख़ुदा ने इरशाद फ़रमाया है के बुलंद

هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا
حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَ نَحْيَا وَ مَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِافْتَرٰى عَلَى
اللّٰهِ كَذِبًا وَّ مَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ
رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا
قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ
الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا
لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ
اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً
رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ
جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

किये जायें, और वो वहां ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किया जाए, और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते हैं। ऐसे लोग जिनको अल्लाह के ज़िक्र से, और नमाज़ पढ़ने से, और ज़कात देने से ना तो तिजारत ग़ाफ़िल रखती है और ना ही ख़रीदो फ़रोख़्त, वो उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखे ख़ौफ़ और घबराहट से उलट जायेगी। ताके अल्लाह उनको उनके अमल का बहुत अच्छा बदला अता फ़रमा दे, और उनको अपने फ़ज़ल से और भी ज्यादा देगा, और अल्लाह जिसे चाहता है बेशुमार रिज़्क़ देता है। और काफ़िरों के आमाल की मिसाल ऐसी है, जैसा के मैदान में रेत के प्यासा उसे पानी समझे, और जब उसके पास पहुंचे तो वहां कुछ भी ना पाये, और अल्लाह ही को अपने पास देखे तो वो उसका हिसाब पूरा पूरा कर दे, और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है। या उनके आमाल की मिसाल ये है जैसे गहरे दरया में अंधेरे जिस पर लहर चढ़ी चली आती हो, और उसके ऊपर दूसरी लहर, फ़िर बादल हों, अंधेरे जिस पर लहर चढ़ी चली आती हो, और उसके ऊपर दूसरी लहर, फ़िर बादल हों, अंधेरे हों एक के ऊपर एक, जब हाथ निकाले तो कुछ ना देख सके, और जिसको अल्लाह रौशनी ना अता करे तो उसको कहीं भी रौशनी नहीं मिलती। क्या आपने नहीं देखा के जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुदा की तसबीह करते रहते हैं, और पर फ़ैलाये जानवर भी, और सब अपनी नमाज़ और तसबीह के तरीक़ा से वाक़िफ़ हैं, और जो कुछ वो कहते हैं सब ख़ुदा को मालूम है। और आसमानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही के हाथ में है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (24:32-44)

इन आयतों का मक़सद कुछ ख़ास पैग़म्बरों का क़िस्सा बयान करना और यह बताना ही नहीं है कि उनकी क़ौमों ने उनके लाए हुए पैग़ाम को किस तरह से लिया, बल्कि इस बात को

जताना है कि उनकी क़ौम के बुरे लोगों ने अल्लाह के पैग़ाम की सच्चाई को किस तरह से रद किया और जो कुछ तकरार और कुतर्क उन्होंने किए वो लगभग ऐसे ही थे जैसे कि क़ुरआन के पैग़ाम को रद करने वाले लोग कर रहे हैं। यहाँ आख़िरत के सम्बंध में एक और महत्वपूर्ण तर्क दिया गया है। जो लोग इस जीवन के अस्थाई मज़ों को लूटने में मगन हैं और जिन्होंने आख़िरत के जीवन का इंकार किया है उन्होंने एक व्यापक. ष्टिकोण वाले किसी दूसरे व्यक्ति को स्वीकार नहीं किया। वो लोग वर्तमान की मस्तियों में पूरी तरह मगन थे और आख़िरत का इंकार करने के लिए उन्होंने अपने भविष्य की तरफ़ से आँखें बन्द कर लेने को प्राथमिकता दी। ये आयतें इस बात को उजागर करती हैं कि जीवन की भौतिक सुविधाएं आदमी की सोच व विचार को अपनी शरीरिक इच्छाओं से आगे बढ़ने से रोके रखती हैं और इंसान की अक़ल, उसकी कल्पनाएं और उसकी अध्यात्मिकता में गिरावट का कारण बनती हैं। अदूरदर्शिता और कमनज़री ने ऐसे लोगों को तबाह कर दिया है जो अपना अन्तिम समय आने पर पत्तों की तरह झड़ गए और केवल एक बीते हुए युग की कहानी बन गए।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ
اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ
الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَ مَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ
لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ
رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ قُلْ
رَّبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ خَيْرُ
الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

क्या तुम ये गुमान करते थे के हमने तुम को बेकार पैदा किया है, और ये के तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे। और पस अल्लाह जो बादशाह बरहक़ है (बेकार पैदा करने से) बालातर है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वो अर्शे अज़ीम का मालिक है। और जो अल्लाह के साथ और माबूद को पुकारता है के उस पर उसके पास कोई दलील नहीं है, तो उसका हिसाब उसके रब के हां होगा, यक़ीनन काफ़िर लोग फ़लाह ना पायेंगे। और आप दुआ करें, के ऐ मेरे रब! माफ़ फ़रमा, और रहम फ़रमा, और आप सबसे बेहतर रहम फ़रमाने वाले हैं।

(23:115-118)

यह इस बात की दलील है कि अल्लाह और उसकी हिकमत व क़ुदरत पर ईमान रखने वाला व्यक्ति कभी भी इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि यह दुनिया अल्लाह ने बे मक़सद बनाई है। हर इंसान को एक आज़ाद मर्ज़ी दी गयी है। फिर इन अलग अलग तरह के उद्देश्यों और तरह तरह के काम अंजाम देने वाले लोगों को इस बात का फ़ैसला किए बिना कैसे छोड़ा जा सकता है कि कौन सा कर्म और व्यवहार सही था और कौन सा ग़लत? अगर कोई फ़ैसला नहीं होना है तो क्या ऐसा व्यक्ति जिसे दुनिया में इंसाफ़ नहीं मिल सका हमैशा के लिए इंसाफ़ से वंचित रहेगा? दुनिया में दुख दर्द और कष्ट कोई किस लिए उठाए? क्या अच्छे और बुरे

दोनों तरह के लोगों का अंजाम बस उनकी मौत है? अल्लाह के फ़ैसले और सज़ा व इनाम में विश्वास का मतलब उसकी हिकमत, उसके इंसाफ़ और हर कमी से उसके पाक होने पर ईमान रखना है, इन बातों को अल्लाह पर ईमान से अलग नहीं किया जा सकता। अल्लाह पर ईमान से इस यक़ीन को अलग नहीं किया जा सकता है कि अल्लाह की ही तरफ़ पलट कर जाना है, जो सारे जगतों का पालनहार है, जिसका अस्तित्व सत्य है और जो वास्तविक स्वामी है। अल्लाह के अलावा किसी और को रब मानना या उसकी तरफ़ पलट कर जाने से इंकार करना ऐसे ज़बरदस्त तार्किक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याएं खड़ी करता है जिन से बचा नहीं जा सकता, और जो लोग यह सोचते हैं कि ये इंसानी कमज़ोरियां इस दुनिया में उनके जीवन को आसान बनाती हैं, इस दुनिया के जीवन में दिक़्क़तें उठाएंगे, और आख़रिकार जवाबदेही के लिए खड़े होंगे, अगर अपनी ग़फ़लत की वजह से नहीं तो कम से कम इस दोष के कारण कि आख़िरत के बारे में उन्होंने ख़ुद को और दूसरों को धोखे में रखा। "सत्य का इंकार करने वाले कभी कामयाब नहीं होंगे और कल्याण को नहीं पहुंचेंगे" जबकि ईमान वाले कामयाब होंगे और कल्याण को पहुंचेंगे। अलबत्ता अल्लाह के इंसाफ़ को उसकी दया और कृपा से अलग नहीं किया जा सकता, इंसान के तमाम दोष और ग़लतियों के बावजूद हमैशा वह उसी शान और गुण के साथ बंदों से मामला करता है क्योंकि उसके ये गुण न केवल इंसान की ज़रूरत हैं बल्कि अल्लाह के दयाशील और कृपावान होने का तक़ाज़ा भी यही है।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ
كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ
زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ
يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا
شَرْقِيَّةٍ وَّ لَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ
وَ لَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ
يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ يَضْرِبُ
اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ
يُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ
وَ الْاٰصَالِ ۝ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ
وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है, उसके नूर की मिसाल ये है, गोया के एक ताक़ है, उसमें एक चिराग़ है, और चिराग़ क़नदील में है, वो क़नदील ऐसा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ है, गोया के तारा है जो चमकता है मोती की तरह से, वो चिराग़ एक मुबारक दरख़्त ज़ैतून से रौशन किया गया है जो ना जानिबे मशरिक़ में हो, ना जानिबे मग़रिब में, उसका तेल ख़्वाह आग ना भी छुये जलने के लिये तैयार है रौशनी पर रौशनी, अल्लाह अपने नूर से जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, और अल्लाह मिसालें बयान करके लोगों को समझाता है, और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब जानने वाला है। वो क़नदील उन घरों में है जिनके बारे में ख़ुदा ने इरशाद फ़रमाया है के बुलंद किये जायें, और वो वहां ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किया जाए, और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते हैं। ऐसे लोग जिनको अल्लाह के ज़िक्र से, और नमाज़ पढ़ने से,

اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ
الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ ﴿۳۷﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ
اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ
يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ
يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ
حِسَابَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ
كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ
فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ
يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا
فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ
لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الطَّيْرُ
صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ
تَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ اِلَى اللّٰهِ
الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾

और ज़कात देने से ना तो तिजारत ग़ाफ़िल रखती है और ना ही ख़रीदो फ़रोख़्त, वो उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखे ख़ौफ़ और घबराहट से उलट जायेगी। ताके अल्लाह उनको उनके अमल का बहुत अच्छा बदला अता फ़रमा दे, और उनको अपने फ़ज़ल से और भी ज्यादा देगा, और अल्लाह जिसे चाहता है बेशुमार रिज़्क़ देता है। और काफ़िरों के आमाल की मिसाल ऐसी है, जैसा के मैदान में रेत के प्यासा उसे पानी समझे, और जब उसके पास पहुंचे तो वहां कुछ भी ना पाये, और अल्लाह ही को अपने पास देखे तो वो उसका हिसाब पूरा पूरा कर दे, और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है। या उनके आमाल की मिसाल ये है जैसे गहरे दरया में अंधेरे जिस पर लहर चढ़ी चली आती हो, और उसके ऊपर दूसरी लहर, फ़िर बादल हों, अंधेरे जिस पर लहर चढ़ी चली आती हो, और उसके ऊपर दूसरी लहर, फ़िर बादल हों, अंधेरे हों एक के ऊपर एक, जब हाथ निकाले तो कुछ ना देख सके, और जिसको अल्लाह रौशनी ना अता करे तो उसको कहीं भी रौशनी नहीं मिलती। क्या आपने नहीं देखा के जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुदा की तसबीह करते रहते हैं, और पर फ़ैलाये जानवर भी, और सब अपनी नमाज़ और तसबीह के तरीक़ा से वाक़िफ़ हैं, और जो कुछ वो कहते हैं सब ख़ुदा को मालूम है। और आसमानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही के हाथ में है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (24:35-42)

यहाँ क़ुरआन अल्लाह के दीन के लिए मिसालें पेश करता है और इस दीन में विश्वास रखने वाले लोग जो यह मानते हैं कि इस दुनिया का जीवन अपने सारे सुख और आनन्द के बावजूद बहुत छोटा है, और यह बात स्वीकार करते हैं कि आख़िरत का जीवन इस दुनिया के जीवन पर भारी है, वो उन हमैशा रहने वाले पुरस्कारों को प्राप्त करने को अपना लक्ष्य बनाते हैं। दूसरी ओर उन लोगों के लिए भी मिसालें दी गयी हैं जो अल्लाह के पैग़ाम और उसकी हिदायत का

ढिटाई से इंकार करते हैं और इस तरह अपने विचारों व अटकल बाज़ियों में अपनी ऊर्जा व्यर्थ करते हैं, जब तक कि वो पूरी तरह अंधेरों में न डूब जाएं।

इन आयतों में ताक़ का जो ज़िक्र किया गया है तो यह वह ताक़ है जो पूराने ज़माने में घरों में बने होते थे जिसके अन्दर लोग दीप जला कर रख देते थे कि यह ताक़ ज़मीन से ऊपर होता था। इस आयत में ताक़ की मिसाल देकर एक ऐसे स्थान का ज़िक्र किया गया है जिसे अल्लाह के नूर अर्थात उसके पैग़ाम की रोशनी को फैलाने के लिए चुना गया, और दीपक से अभिप्राय वह पैग़ाम है जो आसमानी है न शर्क़ी है न ग़रबी (न तो पूरबी न पश्चिमी)। इस मार्गदर्शनक दीपक के लिए ज़ैतून के तेल का ज़िक्र किया गया तो इसका चयन इस वजह से किया गया कि जिस भूभाग पर अल्लाह के पिछले पैग़म्बर अल्लाह का पैग़ाम लेकर आए थे वहाँ यही तेल स्तेमाल होता था, और यह लम्बे समय तक जलने वाले, सामान्य रूप से उपलब्ध रहने वाले और आम तौर से लोगों के लिए उपयोगी होने की वस्तु का एक नमूना है। शीशा एक पारदर्शी माध्यम है जिसमें से हो कर प्रकाश निलकता है और उससे अभिप्राय अल्लाह के पैग़म्बर हैं जिन पर पैग़ाम उतरता है और लोगों तक पहुंचता है। इंसानों के लिए अल्लाह का पैग़ाम बिल्कुल साफ़ है जो यह महसूस करते और सोचते हैं कि हिदायत (साफ़ तौर से ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है (2:256), और इसलिए यह प्रकाश ख़ुद ब ख़ुद प्रकाश दिए जा रहा है चाहे आग उस (के तेल के) न भी छुए। अल्लाह के पैग़ाम की रोशनी दीपक के तेल की बदौलत और उसके शीशे के माध्यम से, जिससे मुराद अल्लाह के पैग़म्बर हैं, और ताक़ के स्थान की अनुकूलता के कारण जिससे मुराद वह स्थान और वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने पैग़ाम के लिए चुना है, बढ़ती जाती है, उसका दायरा फैलता चला जाता है और उसका प्रभाव गहरा होता जाता है और इस तरह अल्लाह का नूर ष्नूर दर नूरष हो जाता है। लेकिन वह व्यक्ति जो इस शानदार रोशनी और उसके स्रोत को पहचानता है, उसके मूल तत्व को समझता है और उसकी उपयोगिता को जानता है वह है जो अपनी बौद्धिक, मानसिक और अध्यात्मिक शक्तियों को उचित तरीक़े से स्तेमाल करता है "और अल्लाह लोगों (के समझाने) के लिए मिसालें बयान करता है।"

जो लोग अल्लाह के नूर के सहारे जीवन बिताते हैं वो हमैशा उसे और आख़रित के जीवन को याद रखते हें, इस दुनिया की छोटी से जीवन के भौतिक आकर्षण से कभी प्रभावित नहीं होते। वो ईमानदार, सदाचारी और लोगों के लिए सुशील होते हें। वो लोग जो अदूरदर्शिता में अल्लाह की हिदायत को रद कर देते हैं और लालच और इस जीवन के भौतिक सुखों के पीछे ही लगे रहते हैं वो ऐसे प्यासे की तरह होते हैं जो सराब (मृगमरीचिका) के पीछे भागता रहता है, या उस व्यक्ति की तरह होते हैं जो अंधेरे में टामक टोइयां मार रहा होता है। कितना अन्तर है ऐसे आदमी में और उस आदमी में जो एक स्पष्ट दृष्टि रखता है और ष्प्रकाश पर प्रकाशष

में चलता है। ऐसा व्यक्ति अल्लाह की हर रचना में उसकी शान और उसकी निशानी को देखता है, क्योंकि पूरी सृष्टि और उसके विभिन्न दर्शन और उस ईमान वाले आदमी की अन्तःष्टि व कर्म में एक समन्वय होता है। इस सूझबूझ और चिंतन के द्वारा इंसान को इस नतीजे पर पहुंचना चाहिए कि आसमान और ज़मीन की बादशाही अल्लाह के लिए ही है और अल्लाह ही की तरफ़ लोट कर जाना है, हम इंसान और दूसरे तमाम जीव भी उसी का माल हैं और हम उसी की तरफ़ लोट जाएंगे।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ۝٤ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ۝٥

बिलाशुबह जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते हमने उनके आमाल उनके लिये आरास्ता कर दिये हैं, तो वो सरगर्दाँ रहते हैं। यही वो लोग हैं जिनके लिये बुरा अज़ाब है, और वो आख़िरत में सख़्त नुक़सान उठाने वाले हैं। (27:4-5)

जो लोग अल्लाह की हिदायत का इंकार करते हैं और अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगे रहते हैं वो यह सोचते हैं कि सही रास्ते पर हैं जबकि वास्तव में वो भटक रहे हैं और ठोकरें खा रहे हें क्योंकि वो अपने निजी विचारों में ही जी रहे हैं जो परस्पर विपरीत और भ्रमित करने वाले होते हैं। इस दुनिया के भौतिक लाभ पर अपना ध्यान पूरी तरह केन्द्रित रखने से जीवन में कभी भी व्यक्तिगत या सामाजिक स्थिरता नहीं आती, और अनन्त जीवन में जो कि आना ही है, यह कमनज़री आख़िरकार बहुत अधिक नुक़सान पर परिणत होगीः यह तो दुनिया की दिखावटी जीवन को ही जानते हैं और आख़रित (की तरफ़) से भूल में हैं (30:7)।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٧٠

और वो अल्लाह ही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, दुनिया और आख़िरत में, वो तारीफ़ के लायक़ है, और उसी के लिये हुकूमत है, और उसी की तरफ़ तुम सब लौट कर जाओगे। (28:70)

सारी प्रशंसाएं केवल अल्लाह ही के लिए हैं कि यह दोषरहित सृष्टि उसी ने पैदा की है और इस दुनिया व इसके बाद आख़िरत का भी वही अकेला मालिक है। सब कुछ उसके नियंत्रण में हैं और वह अकेला ही फ़ैसले के दिन का मालिक है जो हर एक को उसके कर्मों का बदला देगा (14:3,26)।

وَابْتَغِ فِيمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا
تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ
اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى
الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾
قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَ
لَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ
مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّ
اَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ
زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ
اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ
اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا
الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ
يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا
مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ
يَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ
الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ
عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ

और जो कुछ अल्लाह ने तुमको अता किया है उससे आख़िरत का घर हासिल करो, और दुनिया में से अपना हिस्सा ना भूल, और जैसे अल्लाह ने तुम से भलाई की है, वैसी ही तुम भी भलाई करो, और मुल्क में फ़साद ना करते फ़िरो, क्योंके अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं रखता। क़ारून बोला, के ये माल तो मेरे इल्म की बदौलत है, क्या वो नहीं जानता के अल्लाह ने उससे पहले बहुत सी उम्मतें जो उससे क़ुव्वत और माल में ज़्यादा थीं, हलाक कर डाली हैं और गुनाहगारों से उनके गुनाहों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा? फ़िर (एक रोज़) क़ारून अपनी क़ौम के सामने बड़ी शान से निकला, जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के तालिब थे उन्होंने कहा ऐ काश हमारे लिये भी वैसा ही होता, जैसा के क़ारून को दिया गया है, वो बड़ा ही नसीब वाला है। और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वो कहने लगे, तुम पर अफ़सोस है अल्लाह का सवाब बेहतर है उसके लिये जो ईमान लाया और नेक काम किया, और ये सिर्फ़ सब्र करने वालों ही को मिलेगा। फ़िर हमने क़ारून और उसके घर वालों को ज़मीन में धंसा दिया, फ़िर अल्लाह के सिवा उसकी कोई ऐसी जमात ना थी जो उसकी मदद करती और उसको अल्लाह के अज़ाब से बचाती। और वो कल जो उसके मर्तबे की तमन्ना करते थे, आज सुबह को कहने लगे, हाय शामत अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है, और जिसके लिये चाहता है तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान ना करता तो हमें भी धंसा देता, हाय अफ़सोस! काफ़िर लोग निजात नहीं पायेंगे। वो जो आख़िरत का घर है, हमने उसे उन लोगों के लिये तैयार कर रखा है जो मुल्क में ज़ुल्म और फ़साद का इरादा नहीं रखते और (अच्छा) अंजाम तो सिर्फ़ अल्लाह से डरने वालों के लिये है। जो कोई नेकी लेकर आएगा उसको

خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

उससे बेहतर सिला मिलेगा, और जो कोई बुराई लेकर आएगा तो जिन लोगों ने बुरे काम किये थे उनको उसी क़द्र सज़ा दी जायेगी जो वो करते थे। (28:77-84)

यह हज़रत मूसा की क़ौम के एक व्यक्ति का चित्रण है जिसने इस दुनिया का धन दौलत जमा करने को ही अपना मक़सद बना लिया था, और स्वार्थपूर्ति, लालच व घमण्ड में पड़ा हुआ था। इस आयत में यह दिखाया गया है कि उस मालदार व्यक्ति का धन दौलत देख कर दूसरे लोगों को भी लालच आता था जबकि कुछ सूझबूझ वाले लोग भी थे जो उसे यह याद दिलाने की कोशिश करते थे कि आख़िरत के जीवन की भी चिंता कर, अगरचे दुनिया के जीवन में भी अपना जायज़ और ज़रूरी हिस्सा पाना मत भूल। क़ुरआन के इस बयान की तुलना बाईबिल के बयान (ज्ञवतीरूग्टप्रू1-35) से की जा सकती है जिसमें कुछ थोड़ा सा अन्तर है। बाइबिल में कहा गया है कि कोरह (क़ारून) और उसके कुछ समर्थकों ने हज़रत मूसा व हारून से बग़ावत की। वो यह समझते थे कि अपने समुदाय में उनकी हैसियत के चलते पवित्र क़ुर्बानी स्थल पर अगरबत्ती जलाने का अधिकार उन्हें मिलना चाहिए, जबकि यह अधिकार हारून और दूसरे इबादत करने वालों को मिला हुआ था। जेविश मेडराशियम में भी जो कि सेनेगाग के रिब्बियों की मौखिक शिक्षाओं पर आधारित यहूदियों की एक पवित्र पुस्तक है, इस व्यक्ति की ज़बरदस्त दौलत का ज़िक्र किया गया है। इस बड़े धनवान का अपने बारे में यह दावा था कि उसने अपनी दौलत ख़ुद अपने कौशल और कोशिश से कमाई है। ऐसा ही दावा इस तरह के स्वार्थी और लालची लोग आम तौर से किया करते हैं, जो अल्लाह के कृपा को भूल जाते हैं और यह भुला देते हैं कि स्वयं उनके अपने अन्दर और इस पूरे माहौल में जिसका वो अंग हैं अल्लाह की नेअमतें अपना काम कर रही हैं। ये लोग अपने धन उपार्जन में दूसरों के सहयोग को भी भुला देते हैं, जिसमें विक्रेता, ख़रीदार या तरह तरह की सेवाएं अंजाम देने वाले लोगों की भी भूमिका होती है। वो अपने आप को ही अपनी दौलत की पैदावार का मूल कारक समझते हैं, और फिर अपनी दौलत पर अपना ही हक़ समझते हैं और दूसरों को ख़ुद उनके सहयोग व कामों के बदले में कुछ भी नहीं देना चाहते।

जो लोग इस दुनिया की नेअमतों को जमा करने और उनके मज़े लूटने में ही लगे रहते हैं उन्हें क़ुरआन यह याद दिलाता है कि दुनिया में उनका अस्तित्व निश्चित रूप से एक दिन समाप्त हो जाएगा, जैसा कि उनसे पहले के सभी लोग लुप्त हो चुके हैं। हालांकि इन कुकर्मियों के कुकर्मों को साबित करने के लिए किसी खोजबीन और जांच की ज़रूरत नहीं है क्योंकि एक तो उनकी बुराइयां स्वतः ही स्पष्ट हैं और ख़ास तौर से अल्लाह जानकार की जानकारी में तो हैं ही, और फिर आख़िरत में हिसाब किताब के समय वो ख़ुद ही अपने दोष स्वीकार लेंगे

(मिसाल के तौर पर देखें 4:42; 5:61; 6:130; 7:37; 36:65; 41:20-22)।

क़ुरआन समझदार लोगों को यह सलाह देता है कि इस दुनिया के वर्तमान जीवन और आगे आने वाले अनन्त जीवन के बीच एक संतुलन बना कर रखें, और अपने निजी और सामाज के अन्य लोगों के अधिकारों में भी संतुलन रखें जो व्यक्ति के लिए धन कमाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक बनते हैः और जैसी अल्लाह ने तुम से भलाई की है (वैसी ही) तुम भी (लोगों से) भलाई करो। फिर वहाँ ऐसे लोग भी थे जो क़ारून की अपार दौलत पर रीझते थे और इस बात की कामना करते थे कि उन्हें भी ऐसी ही दौलत मिल जाए, लेकिन जब उन्होंने क़ारून की तबाही देख ली तो उन्होंने भी अल्लाह का शुक्र अदा किया कि वो क़ारून जैसे नहीं हुए। आख़री आयतों में जो पैग़ाम मिलता है वह यह है कि अल्लाह और आख़रित पर ईमान व्यक्ति और समाज को स्वार्थपूर्ति, लालच, घमण्ड और भृष्टाचार से बचाता है क्योंकि यह व्यक्ति और समाज को बड़प्पन की भावना और हीन भावना से बचाता है। यह इंसान के दिल व दिमाग़ को अमीर व कबीर होने की स्थिति में शोषण और दमन की भावनाओं से और कमज़ोर होने की स्थिति में लाचारी और ईर्ष्या की भावना से बचाता है।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝

दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी को जानते हैं, और आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। (30:7)

ये उन दो तरह के लोगों के लिए ज्ञान का एक निश्चित अन्तर है जिनमें से एक तरह के लोग वो हैं जो केवल इन्द्रियों से प्राप्त होने वाली जानकारियों और अनुभव से प्राप्त होने वाले ज्ञान पर ही निर्भर रहते हैं, और दूसरी तरह के लोग वो हैं जो बौद्धिक चिंतन से काम लेते हैं, जैसा कि दर्शन शास्त्र है, तर्क शास्त्र है, कला है या धार्मिक ज्ञान है। विभिन्न प्रकार के सृजनात्मक कामों और कलाओं के संदर्भ में इन्द्रियों से परे अनुभूति और आत्मसात से ज्ञान प्राप्त होना एक जानी पहचानी बात है और यह किसी वास्तविक कलाकार के लिए एक अनिवार्य चीज़ है। यहाँ तक कि साइंस में भी सापेक्षता और शक्ति व ऊर्जा को एक पदार्थ माना गया है, और ख़ुद साइंस ने इंसानी कल्पनाओं, अन्तःष्टि और विचार व अनुमान की बदौलत तरक़्क़ी की है।

अध्यात्म इंसानी स्वभाव और इतिहास का एक अभिन्न अंग है जिसने अपने अस्तित्व को इस तरह से साबित किया है कि उसका इंकार करना सम्भव नहीं है। भौतिकता व्यक्ति और समाज की इंसानी ज़रूरतों और इच्छाओं की पूर्ति में नाकाम हो गयी है और उसकी उत्पादन क्षमता साफ़ तौर से मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बंदिशों व प्रभाव से प्रभावित है। एक अल्लाह में विश्वास और आख़िरत के जीवन पर ईमान व्यक्ति के अन्दर और सामूहिक रूप से

पूरे समाज में संतुलन व स्थिरता का कारण बनता है, जबकि स्वार्थपूर्ति और दुनिया परस्ती व्यक्ति और समाज को प्रभावित करती है और सफ़लता के घमण्ड व असफ़लता की निराशा के बीच में झुलाती रहती है। इसलिए ईमान व यक़ीन फ़ायदेमन्द भी है और तार्किक भी ।

مَا خَلْقُكُمْ وَ لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾

(अल्लाह को तो) तुम सब का पैछा करना और क़यामत के दिन उठाना ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का (पैदा करना) बेशक ख़ुदा सुनने वाला देखने वाला है।

(31:28)

यह आयत तमाम इंसानों और इंसानी पीढ़ियों और पूरे विश्व में इंसानों के बसने को अल्लाह की क़ुदरत बताती है। उसके लिए यह सब कुछ करना एक अकेले इंसान को पैदा करने से ज़्यादा कुछ मुश्किल नहीं, वही है जो इंसान को दूसरे तमाम जीवों की तरह प्रजनन की योग्यता देता है। मृत शरीर को फिर से जीवित करना उसके लिए उतना ही आसान है जितना बग़ैर किसी सूत्र और नमूने के पहली बार पैदा करना, और यह नए सिरे से पैदा होना जैसे एक इंसान का हो सकता है उसी तरह पूरी इंसानी जाति का हो सकता है। लेकिन इंसानी समुदाय के बाक़ी रहने और विक्सित होने के मामले में अल्लाह हर इंसान से व्यक्तिगत मामला करता हैः और जो कोई बुरा काम करता है तो उसका नुक़सान उसी को होता है और कोई व्यक्ति किसी के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा (6:146) और सब क़ियामत के दिन उसके सामने अकेले हाज़िर होंगे (19:95)।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۶﴾

लोगों! अल्लाह का वादा सच्चा है, तो तुम को दुनिया की ज़िन्दगी धोके में ना डाल दे, और कहीं ये शैतान फ़रेब देने वाला भी तुम को अल्लाह से धोके में ना डाल दे। क्योंके शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसको अपना दुश्मन समझो, वो अपनी पैरवी करने वालों को बुलाता है, ताके वो भी दोज़ख वालों में शामिल हों।

(35:5-6)

ये आयतें इस सच्चाई को उजागर करती हैं कि कुछ ऐसे खुले व छुपे कारण हैं जो इस दुनिया के अस्थाई आनन्द में इंसान को मगन कर देते हैं और उसे अल्लाह के बारे में सोचने और आख़िरत के बारे में चिंतन करने को भुला देते हैं। यह भ्रामक तत्व भौतिक सम्पन्नता और दुनिया की चमक दमक में निहित हैं और इंसान के अन्दर शक्ति और सत्ता, सुविधाओं और

बड़प्पन प्राप्त करने की लगन में मौजूद हैं। शैतान इंसान के विचारों और भावनाओं में घुस जाने के लिए इन तत्वों को स्तेमाल करता है। क़ुरआन में कुछ जगहों पर दो तरह के शैतानों का एक साथ ज़िक्र मिलता है इंसानी शैतान और जिन्नी शैतान। वो धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में लालच की बातें डालते रहते थे (6:112; और देखें 2:14; 17:27)। ऊपर की पहली आयत के अन्त में जो धोखा का शब्द आया है उसका मतलब है ऐसा धोखेबाज़ तत्व जो ख़ुद भी धोखे में है और धोखा देने का कारण भी है। तिबरी ने अपनी तफ़सीर में आयत 31:30 की व्याख्या में जो कुछ लिखा है उसके अनुसार इसका साधारण अर्थ शैतान है या कोई दूसरा इंसान या किसी की आत्म इच्छाएं जो उसे धोखे मे रखती हैं।

शैतान और इंसान के बीच सम्बंध के संदर्भ में क़ुरान में शैतान की उस समय की स्थिति को चित्रित किया गया है जब फ़ैसले के दिन वह पकड़ा जाएगा

मेरा तुम पर किसी तरह का ज़ोर नहीं था हाँ मैं ने तुम्हे बुलाया तो तुन ने मेरा कहा मान लिया तो आज मुझे मलामत मत करो बल्कि अपने आप को ही मलामत करो (14:26)। अलराज़ी ने अपनी तफ़सीर में इस आयत के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है कि यह इंसान का अपना रुजहान है जो शैतान को इंसान के दिल व दिमाग़ के क़रीब ले आता है और वह कचोके लगाने लगता है, और यह इंसान की मानसिक कमज़ोरी जैसे स्वार्थपूर्ति, लालच, वासना, ग़ुस्सा, घमण्ड, डर, वग़ैरह को छेड़े बिना नहीं हो सकता। शैतान की टोली जिसमें इंसानी और जिन्नी शैतान सब शामिल हैं, आग में डाले जाने के समय एक दूसरे को बुरा भला कहेंगे और एक दूसरे पर लांछन लगाएंगे (।4:22), और इंसान के लिए होशमन्दी की बात यह है कि आज ही अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करे और स्वयं को भ्रामक विचारों और गुमराह करने वाले तत्वों से दूर रखे और बचाए।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَ آثَارَهُمْ ۚ وَ كُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ﴿١٢﴾

बिला शुबह हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और हम लिख लिया करते हैं जो वो आगे भेज दिया करते हैं, और जो निशान अपने पीछे छोड़े हैं, और हमने हर चीज़ को लौहे महफ़ूज़ में लिख रखा है। (36:12)

हर इंसान ने जो कर्म आगे भेजे हैं या जो कुछ अच्छाइयां व बुराइयां वह दुनिया में छोड़ गया वो सब किताबे रोशन (खुली किताब) में लिखी हें, यह बात आख़रित के दिन होने वाली जवाबदेही के लिए कितनी तार्किक और समझ में आने वाली है। अल्लाह तो जानकार है उसको किसी रिक०र्ड की ज़रूरत नहीं है, और फ़ैसले के दिन सत्य और तथ्य जिस तरह खुल कर सामने आजाएंगे (50:22) उसके सामने कोई तर्क और सुबूत की आवश्यकता नहीं होगी,

लेकिन फैसले के दिन की स्थिति का यह चित्रण इंसानी ज़हन के अनुसार है और बहुत ही प्रभावित करने वाला है। आख़िरत के विभिन्न पहलुओं जैसे मौत के बाद उठाए जाने, फ़ैसले का दरबार लगने और बदले व सज़ा वग़ैरह के संदर्भ में क़ुरआन के जो बयान हैं उनमें यह बयान बहुत मत्वपूर्ण है (देखें सय्यद क़ुतुब कीौ बपमदबम वि ।जिमतसपमि पद जीम फनतंदए और च्वतजतंलंसौ जलसपेजपबे पद जीम फनतंद)। आख़िरत के जीवन के बारे में इस तरह के बयान इंजील की मिसालों में भी देखे जा सकते हैं ।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً
تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ
يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ
الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا
وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ
كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ
لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ
شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾
اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ
فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ
لَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ ۫ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ
رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْۤ
اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ

और वो कहते हैं के ये वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो। ये तो एक चिंघाड़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनको इस हाल में आ पकड़ेगी जब वो आपस में लड़ रहे होंगे। फ़िर ना तो वो वसीयत करने का मौक़ा होगा और ना वा अपने घरों में वापस जा सकेंगे। और जब सूर फूंका जाएगा तो वो सब क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। और कहेंगे, हाय हमारी कम्बख़्ती हमें हमारी क़ब्रों से किसने जगाया, ये वही है जिसका रहमान ने वादा किया था, और पैग़म्बरों ने सच कहा था। ये सिर्फ़ एक ज़ोर की आवाज़ होगी, जिस से सब के सब हमारे रूबरू हाज़िर किये जायेंगे। फ़िर उस रोज़ किसी पर ज़ुल्म ना होगा, और तुम को बदला उन्हीं कामों का मिलेगा, जो तुम करते थे। जन्नत वाले उस रोज़ ऐशो आराम में मसरूफ़ होंगे। वो और उनकी बीवियां सायों में तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे। वहां उनके लिये मेवे होंगे, और जो वो तलब करेंगे फ़ौरन आ मौजूद होगा। मेहरबान अल्लाह की तरफ़ से उनको सलाम कहा जायेगा। मुजरिमों! आज तुम अलग हो जाओ। ऐ आदम की औलाद! क्या मैंने तुम से अहद नहीं लिया था के तुम शैतान की पूजा ना करना, वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। और ये के मेरी इबादत किया करना, यही सीधा रास्ता है। और शैतान ने तुम में

مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَ لَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا
كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ
جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا
الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ
نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَ
تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَ لَوْ
نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ
لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مُضِيًّا وَّ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ
نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

से बहुत मख़्लूक़ को गुमराह कर दिया है, तो तुम समझते नहीं थे। यही वो दोज़ख़ है जिसकी तुम को ख़बर दी जाती थी। सो जो तुम कुफ़्र करते रहे हो, उसके बदले आज इसमें दाख़िल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मोहर लगा देंगे, और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे, और उनके पाऊँ गवाही दे देंगे जो वो करते थे। अगर हम चाहें तो उनकी आँखों को मिटा दें तो ये फ़िर रास्ते की तरफ़ दौड़ें तो कहां से देखेंगे। और अगर हम चाहें तो उनकी सूरतें बदल दें, इसी तरह से के ये जहां हैं वहीं रह जायें। और जिसको हम बड़ी उम्र देते हैं तो उसे हम ख़ल्क़त में औंधा कर देते हैं, तो क्या ये अक़्ल नहीं रखते। (36:48-68)

आख़िरत के जीवन के बारे में किसी रूखे से बयान के बजाए उसका एक मार्मिक चित्रण करने के इसी अंदाज़ में क़ुरआन फ़ैसले के दिन की घोषणा करने के लिए एक बिगुल बजाने का मंज़र पेश करता है (6:73; 18:99; 20:102; 23:101; 27:28 39:68; 50:20; 69:13; 78:17-20)। जैसा कि आयत 19:68 में इशारा दिया गया है, यह सूर (बिगुल) पहली बार दुनिया के इस जीवन को ख़त्म के करने के लिए फूंका जाएगा और दूसरा सूर (बिगुल) एक नया अनन्त :जीवन शुरू करने के लिए बजाया जाएगा। उपरोक्त आयतें यह बताती हैं कि मुर्दे अपनी क़बरों से निकल खड़े होंगे और अपने रब के सामने हाज़िर होने के लिए दौड़ पड़ेंगे, जैसा कि अल्लाह ने अपने पैग़ाम में इसका वायदा बार बार किया है, यह अंजाम की घड़ी होगी जिसका सामना करने और जिसका यक़ीन करने से उस समय भी बहुत से लोग विमुख होंगे जब वह एक ठोस सच्चाई बन कर सामने आ जाएगी। अंजाम के दिन वो लोग जिन्होंने पिछले जीवन में इस अंजाम का इंकार किया होगा वो अपनी बतौल बाज़ी से रोक दिए जाएंगे और यथार्थ स्थिति उनके मुंह बंद कर देगी, लेकिन उनके हाथ, पांव, खाल और दूसरे अंग व इन्द्रियां ख़ुद ही गवाह बन जाएंगे कि उनसे क्या क्या काम लिया गया है। जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए होंगे और आख़िरत के की बात को उन्होंने सच माना होगा और अपना आचार विचार ठीक रखा होगा उन्हें जन्नत में इनाम दिए जाएंगे और वहाँ उनके माता पिता, पति या पत्नियां और संतान में वो लोग उनके साथ होंगे जिन्होंने सत्य को अपनाया होगा और उस पर चले होंगे (और देखें 13:23; 40:8; 52:21)। क़ुरआन में जगह जगह जन्नत के राहत भरे जीवन के कई

नज़ारे बयान किए गए हैं जैसे सुहावना मौसम होगा और छायादार रोशनी होगी, घने पेड़ होंगे, आरामदायक कपड़े होंगे, मित्र और साथी होंगे, फिर यह कि शान्ति, आनन्द, हर आवश्यकता की पूर्ति, हर चीज़ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध और पूरा संतोष प्राप्त होगा (देखें 15:46-48; 37:43-44; 56:15-40; 76:12-22; 88:8-16)। इसके अलावा जन्नत वालों को हर वह चीज़ मिलेगी जिसे वो तलब करेंगे (देखें उपरोक्त आयत 36:57 और 12:102; 41:31; 43:17)। अल्लाह से उनकी निकटता और अल्लाह की रज़ामन्दी से प्राप्त होने वाली ख़ुशी तो ऐसी होगी जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता (9:72; 54:54-55; 69:21-23; 89:82-29)।

आगे आने वाले जीवन की अगर यही तस्वीर है जिसके नज़ारे क़ुरआन ने बयान किए हैं तो इंसान को चाहिए कि वह उसे समझने के लिए अपनी बौद्धिक और अध्यात्मिक क्षमताओं को काम में लाए और इससे पहले कि यह जीवन समाप्त हो जाए इस के लिए कोशिश करे। अल्लाह ने इंसान को पूरी आज़ादी के साथ अपने वर्तमान व भविष्य का फ़ैसला करने, अपने ज्ञान को बढ़ाने और चिंतन से काम लेने और उसी की रोशनी में फ़ैसले लेने और अपना रवैया सही रखने की योग्यता दी है। अल्लाह चाहता तो इंसान को चुनाव की आज़ादी दिए बग़ैर या स्वयं को सही या ग़लत दिशा में तरक़्क़ी देने व बदलने की योग्यता दिए बिना ही पैदा कर सकता था। यह अल्लाह की मंशा थी कि उसने इंसान को यह तमाम क्षमताएं और अवसर दिए जिसके साथ साथ उसे अपने आप को और अपनी दुनिया को आगे बढ़ाने, दुनिया में न्याय स्थापित करने, आपसी सहयोग की व्यवस्था बनाने और इंसानी सम्बंधों को एक दूसरे की भलाई की इच्छा के साथ बनाने की ज़िम्मेदारियां भी दी गयी हैं। हर इंसान को चाहिए कि वह अपनी शक्ति व बुद्धि को काम में लाकर अपने वर्तमान व भविष्य के बारे में गम्भीरता से सोचे और जीवन का सबसे महत्वपूर्ण फ़ैसला ले, इससे पहले कि उसकी ऊर्जाएं और योग्यताएँ कमज़ोर पड़ जाएं जो कि समय के साथ साथ कमज़ोर पड़ना ही हैं। बुढ़ापे की आयु में इंसान की शरीरिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक शक्तियां समाप्त होने लगती है और इंसान की ताक़त धीरे धीरे कम होते होते कभी कभी उसे इस स्थिति में पहुंचा देती है कि जिस स्थिति में वह बचपन में था (16:70; 21:42; 22:5; 35:37; 36:38)। इसलिए अक़लमन्दी की बात यही है कि इंसानी शक्ति व ऊर्जा का बहतर बहतर से स्तेमाल सही समय पर किया जाए ताकि इस अक़लमन्दी का फल इस दुनिया के जीवन में भी जहाँ तक मुमकिन हो, मिले और दुनिया में व्यक्ति और समाज को संतुलित और स्थिर जीवन मिले, और उसके बाद निश्चित रूप से आने वाले अनन्त जीवन में प्रसन्नता व आनन्द मिले।

أَوَ لَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَ ضَرَبَ لَنَا

क्या इन्सान ने नहीं देखा के हमने उसको एक नुतफ़े से पैदा किया, फ़िर वो खुल्लमखुल्ला झगड़ा करने लगा।

مَثَلًا وَّ نَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ
وَ هِيَ رَمِيْمٌ ﴿۷۸﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَ هُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ﴿۷۹﴾
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ
نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ اَوَ
لَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۙ وَ هُوَ
الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ
شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۸۲﴾
فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ
وَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा, और अपनी पैदाईश को भूल गया, कहता है हडिडयों को कौन ज़िन्दा करेगा जबके वो बोसीदा हो गई हों। आप फ़रमा दीजिये, उनको वो ही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया है, और वो सब क़िस्म का पैदा करना जानता है। वो ही जिसने तुम्हारे लिये हरे दरख़्त से आग पैदा की, फ़िर तुम उससे आग सुलगाते हो। क्या जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, वो इस बात पर क़ादिर नहीं के उन जैसों को पैदा कर दे, क्यों नहीं, और वो बड़ा पैदा करने वाला और बड़ा जानने वाला है। उसका मामूल ये है के जब वो किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कह देता है, "हो जा" तो वो हो जाती है। तो वो पाक ज़ात है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम सबको लौट कर जाना है। (36:77-83)

जो लोग इस बात का इंकार करते हैं कि जीवन फिर से लोटाया जाएगा और यह भूल जाते हैं कि पहली बार जीवन की शुरूआत कैसे हो गयी उनके खण्डन में यह एक और क़ुरआनी तर्क है। इंसान को सोचने, बोलने और बहस करने की क्षमता दी गयी है और उसे यह आज़ादी मिली हुई है कि वह जिस तरह चाहे इन क्षमताओं को स्तेमाल करे, यहाँ तक कि वह कामन सेंस की बातों के ख़िलाफ़ भी तकरार कर सकता है और अल्लाह व आख़िरत पर ईमान को झुटलाने में भी इन क्षमताओं को उपयोग में ला सकता है। लेकिन कोई इंसान अल्लाह की क़ुदरत पर शक कैसे कर सकता है जबकि उसने प्राणियों और पदार्थों को शून्य से अस्तित्व प्रदान किया यानि जब कुछ न था और बग़ैर किसी कारण और कारक के और बग़ैर किसी नमूने व उदाहरण के उसने पहली बार पैदा किया जो कि किसी क्रिया को दोहराने की अपेक्षा कहीं अधिक असम्भव लगता है, तो दोबार पैदा करने में क्या शक हो सकता है? (और देखें 17:15)। इसके अलावा यह कि अगर हम यह मानते हैं कि इस सृष्टि का एक जनक है तो उस सृष्टा को अपनी पैदा की हुई चीज़ों पर नियंत्रण भी होना चाहिए और उसकी शक्ति व नियंत्रण की तुलना उसके द्वारा पैदा किए गए किसी जीव की शक्ति से नहीं की जा सकती। अल्लाह की रचनाओं में जो व्यापक विविधता है उसी से यह बात तय हो जाती है कि उसकी शक्ति असीमित है और उसने अपनी शक्ति से ही अपने प्राणियों को बढ़ने व फलने फूलने और

बदलते चले जाने की क्षमता दी है। पेड़ों को उनका हरा रंग उन्हें धूप के द्वारा और क्लोरोफ़िल को सोखने से ऊर्जा पहुंचाता है, औ हरा भरा पेड़ सूख जाने पर आग जलाने का एक माध्यम बन जाता है जो कि इंसानी इतिहास की एक महान खोज है। इसके अलावा, हरेभरे पन से और उस आग से जो ख़ुद एक भौतिक ऊर्जा है, अध्यात्मिक जीवन और ऊर्जा की तरफ़ ध्यान दिलाया जाता है। इन नज़ारों और मिसालों को बयान करके क़ुरआन इस ठोस सच्चाई को बयान करता है जो अल्लाह के बारे में बार बार दोहराई गयी है कि उसकी शान तो यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो आदेश करता है कि होजा तो वह हो जाती है (और देखें 2:117; 3:47,59; 6:73; 16:40; 19:35; 40:68)। यह बयान इस नतीजे पर पूरा होता है जिसमे एक अल्लाह पर और उसके सभी गुणों पर ईमान और आख़िरत के जीवन पर विश्वास को समेट दिया गया है कि पाक है वह हस्ती जिसके हाथ में हर चीज़ की..... है और जिसकी तरफ़ पलट कर जाना है।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلۡنٰكَ خَلِيۡفَةً فِى الۡاَرۡضِ فَاحۡكُمۡ بَيۡنَ النَّاسِ بِالۡحَـقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الۡهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ‌ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَضِلُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌۢ بِمَا نَسُوۡا يَوۡمَ الۡحِسَابِ ۝ وَمَا خَلَقۡنَا السَّمَآءَ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا بَاطِلًا‌ ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا‌ ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنَ النَّارِ ۝ اَمۡ نَجۡعَلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالۡمُفۡسِدِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ‌ اَمۡ نَجۡعَلُ الۡمُتَّقِيۡنَ كَالۡفُجَّارِ ۝

ऐ दाऊद! हमने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है, तो लोगों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया करो और ख़्वाहिशों की पैरवी ना किया करो के वो तुम को अल्लाह की राह से गुमराह कर देगी, जो लोग अल्लाह के रास्ते से गुमराह हो जाते हैं, उनके लिये अज़ाबे सख़्त है, इसलिये के उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है। और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो चीज़ें उन दोनों में है बेकार नहीं बनाया, ये काफ़िरों का गुमान है सो काफ़िरों के लिये बड़ी ख़राबी है आग से। क्या हम उनको जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे उनके बराबर कर देंगे जो मुल्क में फ़साद करते हैं, या परहेज़गारों को बदकारों के बराबर कर देंगे। (38:26-28)

हज़रते दाऊद जो कि बनी इस्राईल के एक पैग़म्बर थे और बादशाह थे, उन्हें इंसाफ़ के साथ शासन करने का निर्देश दिया गया था और स्वार्थपूर्ति, शक्ति के दुरुपयोगे और पक्षपात जैसी बुराइयों की तरफ़ न जाने के लिए सावधान किया गया था। अगर अल्लाह के एक पैग़म्बर को यह निर्देश दिया गया था तो इसका मतलब यह है कि दूसरे अधिकार प्राप्त और सत्ताधारी इंसान तो इस निर्देश के और भी ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं और इन बातों की पाबन्दी करने की

उनके ऊपर और भी ज़्यादा ज़िम्मेदारी है। ऐसे लोगों को यह याद दिलाया जाता है कि वो ज़मीन पर ख़ुदा के उत्तराधिकारी हैं और इसलिए उन्हें ख़ुदा के इंसाफ़ का नमूना बनना चाहिए (और देखें 2:30; 7:129; 24:55; 57:7)। क़ियामत के दिन पर ईमान इंसान को ताक़त के ग़लत स्तेमाल से बचने के लिए अख़लाक़ी याद दिहानी कराता है (28:83), क्योंकि इंसान को जो कुछ दिया गया है उसके द्वारा उसे आज़माया जाता है और हर एक व्यक्ति अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़ अधिकारों को मांगने और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए ज़िम्मेदार और जवाबदेह है।

यह अक़ीदा व्यक्ति और समाज के लिए लाभदायक होने के साथ साथ क०मन सेंस पर भी आधारित है क्योंकि इतनी महान सृष्टि जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी इंसानों की अज़ीम आबादी बसी चली आ रही है, किसी मक़सद और मतलब के बग़ैर पैदा नहीं की जा सकती (23:115)। इंसानी जीवन केवल तमाम इंसानों की मौत के साथ समाप्त नहीं हो सकता कि चाहे अपने जीवन में किसी ने अच्छा किया हो या बुरा, चाहे उन्होंने दूसरों के प्रति अपने रूजहान की पैरवी की हो या अपने दिमाग़ से काम लिया हो और अल्लाह का तक़वा अपनाया हो, और उसकी हिदायत का अनुसरण किया हो, उनका अंजाम एक ही हो। अगर इस जीवन के बाद कोई दूसरा जीवन नहीं है तो कोई भी सदकर्मी इंसान अन्याय और महरूमी की स्थिति में जो कि इस दुनिया में आम तौर से होती ही रहती है नुक़सान में रहेगा। जबकि आख़िरत के जीवन में हर कंकर बराबर नेकी और हर कंकर बराबर बुराई (99:7-8, तथा 4:40; 21:47), या कंकर से भी छोटा या बड़ा (10:61) कर्म गिना जाएगा, और अच्छाई या बुराई के करने वाले को उसका बदला दिया जाएगा। अल्लाह का इंसाफ़ हमेशा के लिए तय हो जाएगा, और इस जीवन का असिल मक़सद पूरा हो जाएगा, जो एक तरफ़ अल्लाह की हिकमत, क़ुदरत और इंसाफ़ के मुताबिक़ होगा, और दूसरी तरफ़ इंसानों की अक़ल के मुताबिक़ भी होगा।

اَوَ لَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ
لِمَنۡ يَّشَآءُ وَ يَقۡدِرُ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۳﴾ قُلۡ يٰعِبَادِىَ الَّذِيۡنَ
اَسۡرَفُوۡا عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ لَا تَقۡنَطُوۡا مِنۡ رَّحۡمَةِ
اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِيۡعًا ؕ اِنَّهٗ
هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿۵۴﴾ وَ اَنِيۡبُوۡۤا اِلٰى رَبِّكُمۡ
وَ اَسۡلِمُوۡا لَهٗ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِيَكُمُ

क्या उनको मालूम नहीं के अल्लाह जिसको चाहता है, रिज़्क़ ज़्यादा कर देता है और वही तंगी भी देता है, उसमें मोमिनों के लिये निशानियां हैं। ऐ नबी! आप कह दीजिये, ऐ मेरे बन्दों! जो अपने ऊपर ज़ुल्म कर चुके हैं, अल्लाह की रहमत से मायूस ना होना, अल्लाह तो सब गुनाहों को माफ़ कर देगा, बिला शुबह वो बड़ा बख़्शने वाला बड़ा रहम करने वाला है। और अपने रब की तरफ़ रूजू करो, और उसकी फ़रमांबर्दारी करो, क़ब्ल इसके के तुम पर अज़ाब आये, फ़िर तुम्हारी

الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ اتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّ اَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى
عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَ اِنْ كُنْتُ
لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ
هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ تَقُوْلَ
حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ
اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ اسْتَكْبَرْتَ وَ كُنْتَ مِنَ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ
كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ
فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَ يُنَجِّي اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ
السُّوْٓءُ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾

कोई मदद ना की जायेगी। इस हसीन तरीन किताब की पैरवी करो, जो तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरी है, क़ब्ल इसके के तुम पर अज़ाब नागहों आ जाये, और तुम को ख़बर भी ना हो। के कोई समझने लगे के उस कोताही पर अफ़सोस जो मैंने अल्लाह के हक़ में की है, और मैं तो सिर्फ़ हंसता ही रहा। या ये कहने लगे, अगर मुझे अल्लाह हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में होता। या जब अज़ाब देख ले तो कहने लगे, के अगर मुझे फ़िर एक बार दुनिया में जाना हो तो मैं भी नेकों में हो जाऊँ। हाँ बेशक मेरी आयात तो तेरे पास आ चुकी थीं, फ़िर भी तुमने उनको झुटलाया, और तकब्बुर किया, और काफ़िरों में शामिल रहा। और आप क़यामत के दिन देखेंगे के जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उनके चेहरे सियाह होंगे क्या दोज़ख में ग़ुरूर करने वालों का ठिकाना नहीं है। और अल्लाह उन लोगों को निजात दे देगा जो अल्लाह से डरते थे उनको कोई तकलीफ़ ना पहुंचेगी और ना वो ग़मगीन होंगे। (39:52-61)

यह उन लोगों की भावनाओं व शब्दों को बयान करने वाला एक और दृश्य है जो आख़िरत के जीवन में नुक़सान में होंगे। क़ुरआन में यह चित्रण उन लोगों को चेताने के लिए किया गया है जो अपने ऊपर ज़्यादती करने वाले हैं और अपनी ऊर्जाओं को व्यर्थ करते हैं कि वो तौबा करें और अपनी दिशा ठीक करें और अपने जीवन का सुधार करें इससे पहले कि सुधार और पश्चाताप का मौक़ा हाथ से निकल जाए और आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो जाएं। तौबा का दरवाज़ा हर समय खुला हुआ हैः अल्लाह ने अपनी हस्ती पर दया को अनिवार्य कर लिया है कि जो कोई तुम में से नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठे फिर उसके बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो वह मआफ़ करने वाला दयाशील है (6:54)। एक सच्ची तौबा करने वाला जब गम्भीरता से ग़ौर करता है और अपने दिल व दिमाग़ को अल्लाह के नूर से रोशन करता है तो फिर उसकी भावना यह होती है कि वह अभी तक कमनज़र और भटका हुआ था (4:17; 16:119)। लेकिन यह तौबा तलाफ़ी अगर उस समय की जाए जब आदमी

यह समझ ले कि इस दुनिया में उसका जीवन पूरा हो चुका है तो उस समय यह तौबा बेमतलब होती है (4:17-18), क्योंकि व्यक्ति के जीवन में इतना समय तो होना ही चाहिए कि वह अपने अन्दर वास्तविक बदलाव को साबित कर सके, उसका रवैया और उसके उद्देश्य बदल जाएं और उसकी दिनचर्या और कार्यशैली बदल जाए। एक सच्ची तौबा का सम्बंध अल्लाह और आख़िरत पर सच्चे ईमान से है और जो सही बात पर अमल करने से ज़ाहिर होती है (2:160; 3:89; 4:146; 5:39; 6:54; 16:119; 19:60; 20:82; 24:5; 25:70-71; 28: 67)। क़ुरआन में अल्लाह के जो विशेष नाम आए हैं उनमें से एक अत्तव्वाब भी है जिसके साथ लगभग हर जगह अर्रहीम भी आया है (2:37,54,128,160; 4:16,64; 9:104,118; 24:10; 49:12; 110:3)।

क़ुरआन यह बताता है कि जो लोग इस दुनिया में जीवन भर ग़ाफ़िल रहते हैं और अपनी दिशा दुरूस्त करने और अपना चाल चलन ठीक करने का मौक़ा खो देते हैं वो उस दिन पछताएंगे, अपने ग़लत आचरण के लिए ख़ुद अपने आप को ही आरोपित करेंगे और यह वायदा करेंगे कि अगर उन्हें दोबारा वापस इसी दुनिया में भेज दिया जाए तो अपना आचरण बदलेंगे और अल्लाह की हिदायत पर चलेंगे, या फिर वो अपने किए की ज़िम्मेदारी से बचने की कोशश करेंगे और और यह कहेंगे कि अगर अल्लाह ने उनका मार्गदर्शन किया होता तो वो भी सही रस्ते पर होते। यह आत्मपीड़ा होगी जिसे वो झेलेंगे, और यह उस कड़ी यातना के अलावा होगा जिसमें वो डाले जाएंगे। उनके चेहरे दुख, पीड़ा और अपमान से काले पड़ जाएंगे, लेकिन जिन लोगों ने अपने जीवन में सही समय पर अपनी अक़ल का स्तेमाल किया होगा और अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी पूरी की होगी वो संतुष्ट और सुखी होंगे और पिछले जीवन में अपनी सोच और अपने संतुलित व्यवहार पर ख़ुश होंगे। उन्हें अपने पूर्व जीवन की किसी बात पछतावा न होगा और न सामने आने वाले फ़ैसले से वो भयभीत होंगे।

وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَ الْاَرْضُ
جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ السَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ۝ وَ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ
فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ
شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ
قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝ وَ اَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ
رَبِّهَا وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ وَ جِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ

और उन्होंने अल्लाह की क़द्र ना की, जैसे के चाहिये थी और क़यामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुठठी में होगी, और सारे आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे, वो पाक है, और बालातर है उनके शिर्क से। और फूंक मारी जायेगी सूर में जो आसमानों और ज़मीन में हैं सब बेहोश हो जायेंगे, मगर जिसको अल्लाह चाहे, फ़िर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा तो फ़ौरन सब खड़े होकर देखने लगेंगे। और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी, और आमाल नामा (खोल कर) रख दिया जायेगा, और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जायेंगे, और उनमें

وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا
عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَ
سِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ
قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ
مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَ
يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا
بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى
الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ سِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا
رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا
خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَ تَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ
مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ ۚ وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِيْلَ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

फ़ैसला इन्साफ़ के साथ होगा, और उन पर ज़ुल्म ना होगा। और हर शख़्स को उसके अमल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो ये करते रहे हैं। और काफ़िर गिरोह दूर गिरोह जहन्नम की तरफ़ हांके जायेंगे, यहां तक जब वो दोज़ख के पास आ जायेंगे, तो उसके दरवाज़े खोल दिये जायेंगे तो उसका दारोग़ा उनसे कहेगा, क्या तुम्हारे पास तुम ही में से पैग़म्बर नहीं आये थे, जो तुम को तुम्हारे रब की आयात पढ़ कर सुनाते और तुम को तुम्हारे इस दिन के पेश आने से डराया करते थे, तो कहेंगे, क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों के हक़ में अज़ाब का हुक्म तहक़ीक़ हो चुका था। कहा जायेगा के दोज़ख के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसमें रहोगे, ग़र्ज़ तकब्बुर करने वालों का ठिकाना गुरा है। और अपने रब से डराने वाले गिरोह दर गिरोह बहिश्त की तरफ़ लाये जायेंगे यहां तक के जब वो उसके पास आ जायेंगे तो उसके दरवाज़े खुले हुए होंगे, तो उसका दारोग़ा उनसे कहेगा, तुम पर सलाम हो, तुम बहुत अच्छे हो, उसमें दाख़िल हो जाओ। और वो कहेंगे, अल्लाह का शुक्र है, जिसने अपने वादे को हम से सच्चा कर दिखाया, और हमको इस ज़मीन का वारिस बना दिया, के हम बहिशत में जहां चाहें रहें तो अच्छे अमल करने वालों का बदला भी क्या ख़ूब है। और तुम फ़रिश्तों को देखोगे के अर्श के गिर्द घेरा बांधे हुए हैं, अपने रब की पाकी उसकी हम्द के साथ बयान कर रहे हैं, और उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जायेगा, और कहा जायेगा, हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिये सज़ावार है, जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

(39:67-75)

यह क़ियामत और आख़िरत में फैसले और इनाम व सज़ा की एक और क़ुरआनी तसवीर है। उस समय हर व्यक्ति अल्लाह की क़ुदरत को देख लेगा और मान लेगा, जिसे उसने दुनिया

के जीवन में नज़रअंदाज़ किया होगा और ग़ौर व चिंतन से काम न लिया होगा, और जो आख़िरत में हर एक के सामने ज़ाहिर होगी।

सूर दो बार फूंका जाएगाः एक दुनिया का जीवन समाप्त होने की घोषणा करने के लिए और दूसरा मुर्दों को उठा खड़ा करने और आख़रित का जीवन शुरू होने की घोषणा करने के लिए। सूर (बिगुल), अल्लाह का नूर, हर एक के कामों का रिकॉर्ड, पैग़म्बरों की गवाही और दूसरे तमाम गवाह जिनमें इंसान का अपनी शरीर, खाल, इन्द्रियां वग़ैरह भी शामिल हैं, यह सब मिल कर उस मंज़रनामे को बनाते हैं जो फ़ैसले के दिन होगा जिसमें लोग हरकत में होंगे, शरीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी, यह केवल जवाबदेही और इनाम व सज़ा का सैद्धांतिक बयान नहीं है। यद्यपि हर एक का हिसाब व्यक्तिगत रूप से होगा (15:47; 37:44; 56:16), घमण्ड के साथ सत्य का इंकार करने वाला हर व्यक्ति जिसमें शैतान भी शामिल है, दूसरों से ख़ुद को अलग करने की कोशिश करेगा और ख़ुद उनको ही दोषी ठहराएगा, इस तरह आख़िरत में मिलने वाली कड़ी यातना के साथ साथ यह मानसिक पीड़ा भी अपराधियों को झेलना होगी (2:166-167; 14:2-22; 34:31-33; 40:47-48) और जिसने जो भी (अच्छा या बुरा) आचरण किया होगा उसके अनुसार उसको पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

क़ुरआन बार बार इस बात की ताकीद करता है कि इस दुनिया के जीवन में जो अहंकारी और घमण्डी हैं और दूसरों पर अत्याचार करते हैं इस घमण्ड में कि उनके पास दौलत या अधिकार है, वो आख़िरत के जीवन में ज़लील होंगे और यातना में मुब्तिला होंगे। वो लोग जब अपनी सज़ा भुगतने के लिए जहन्नम की तरफ़ टोलियों में हांके जाएंगे जहन्नम के पहरेदार उन पर यह भप्तियां कसेंगे कि क्या तुम्हें इस अंजाम से डराने के लिए तुम्हारे पास अल्लाह के पैग़म्बर नहीं आए थे, तुम लोगों ने उनकी बातों पर कान क्यों न धरे? एक तरफ़ जहाँ ये लोग इस तरह की बहुत सी पीड़ाएं झेलेंगे वहीं दूसरी तरफ़ वो लोग जिन्होंने अपने दिमाग़ों का स्तेमाल किया होगा और हक़ बात को माना होगा उन्हें इज़्ज़त के साथ जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा जहाँ वो हमैशा बसेंगे, जहाँ चाहेंगे रहेंगे। यह उन लोगों का बदला होगा जो इस दुनिया में अल्लाह के निर्देशों का पालन करते हैं और अच्छे काम अंजाम देते है। वो एक नई दुनिया में आबाद हो जाएंगे (14:48), जहाँ इंसाफ़ होगा और हर इंसान की इच्छाओं की पूर्ति होगी। इंसाफ़ और इच्छाओं की पूर्ति की इस दोष रहित अनन्त जीवन में यह एक बिल्कुल स्वभाविक बात होगी कि वहाँ ऐश करने वाले लोग भी अपने रब के शुक्र गुज़ार रहेंगे और उनका जाप यह होगा कि सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जगतों का पालनहार है, हाँ वेशक वह इस दुनिया का भी रब है और आख़रित का भी रब है, तमाम पिछले जगतों का और आख़री जगत का और उन जगतों की हर चीज़ का पैदा करने वाला, उन तमाम चीज़ों का जिन तक इंसान की नज़र और कल्पना पहुंच सकती है और उन तमाम चीज़ों का भी जो इंसान या किसी भी दूसरे प्राणि की पहुंच से परे है।

وَ قَالَ الَّذِیۡۤ اٰمَنَ یٰقَوۡمِ اتَّبِعُوۡنِ اَهۡدِكُمۡ
سَبِیۡلَ الرَّشَادِ ﴿۳۸﴾ یٰقَوۡمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الۡحَیٰوةُ
الدُّنۡیَا مَتَاعٌ ۫ وَّ اِنَّ الۡاٰخِرَةَ هِیَ دَارُ
الۡقَرَارِ ﴿۳۹﴾ مَنۡ عَمِلَ سَیِّئَةً فَلَا یُجۡزٰۤی اِلَّا
مِثۡلَهَا ۚ وَ مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا مِّنۡ ذَكَرٍ اَوۡ
اُنۡثٰی وَ هُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ یَدۡخُلُوۡنَ
الۡجَنَّةَ یُرۡزَقُوۡنَ فِیۡهَا بِغَیۡرِ حِسَابٍ ﴿۴۰﴾ وَ
یٰقَوۡمِ مَا لِیۡۤ اَدۡعُوۡكُمۡ اِلَی النَّجٰوةِ وَ
تَدۡعُوۡنَنِیۡۤ اِلَی النَّارِ ﴿۴۱﴾ تَدۡعُوۡنَنِیۡ لِاَكۡفُرَ
بِاللّٰهِ وَ اُشۡرِكَ بِهٖ مَا لَیۡسَ لِیۡ بِهٖ عِلۡمٌ ۫
وَّ اَنَا اَدۡعُوۡكُمۡ اِلَی الۡعَزِیۡزِ الۡغَفَّارِ ﴿۴۲﴾ لَا
جَرَمَ اَنَّمَا تَدۡعُوۡنَنِیۡۤ اِلَیۡهِ لَیۡسَ لَهٗ
دَعۡوَةٌ فِی الدُّنۡیَا وَ لَا فِی الۡاٰخِرَةِ وَ اَنَّ
مَرَدَّنَاۤ اِلَی اللّٰهِ وَ اَنَّ الۡمُسۡرِفِیۡنَ هُمۡ
اَصۡحٰبُ النَّارِ ﴿۴۳﴾ فَسَتَذۡكُرُوۡنَ مَاۤ اَقُوۡلُ
لَكُمۡ ؕ وَ اُفَوِّضُ اَمۡرِیۡۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بَصِیۡرٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۴۴﴾

और उस मोमिन ने कहा, ऐ क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम को भलाई का रास्ता बताता हूं। ऐ मेरी क़ौम! ये दुनिया की ज़िन्दगी तो चन्द रोज़ फ़ायदा उठाने की चीज़ है, और आख़िरत ही तो ठहरने का मुक़ाम है। जो बुरा काम करता है उसको बराबर सराबर बदला मिलता है, और जो नेक काम करेगा मर्द हो या औरत, बशर्त ये के मोमिन हो ता ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे, वहां उनको बेहिसाब रिज़्क़ मिलेगा। और ऐ मेरी क़ौम! मेरा क्या है मैं तो तुम को निजात की तरफ़ बुलाता हूं, और तुम मुझे दोज़ख की तरफ़ बुलाते हो। तुम मुझे उस तरफ़ बुलाते हो के मैं अल्लाह को ना मानूं, और उस चीज़ को उसका शरीक करूं, जिसकी मेरे पास कोई दलील नहीं और मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं, जो बड़ा ज़बरदस्त और बड़ा बख़्शाने वाला है। यक़ीनी बात है, तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझे बुलाते हो, वो ना तो दुनिया में और ना ही आख़िरत में पुकारे जाने के लायक़ है, और हम सबको अल्लाह की तरफ़ लौटना है, और हद से आगे जाने वाले सब दोज़ख़ी हैं। तो जो बात मैं तुम से कहता हूं उसको तुम जल्द याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपूर्द करता हूं, बिला शुबह अल्लाह अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है। (40:38-44)

क़ुरआन के इस क़िस्से से यह बात मालूम होती है कि आदमी के अन्दर कैसे यह हिम्मत पैदा होती है कि वह किसी दमनकारी शासक के आगे निर्भीक हो कर खड़ा हो जाए जिस शासक और शासन को तमाम तरह की राजनीतिक, सैनिक और यहाँ तक कि धार्मिक शक्तियों का भी समर्थन प्राप्त हो, ऐसे कड़क शासन को वह चुनौती दे और अत्याचार से बाज़ आने की चेतावनी दे। क़ारून के समानान्तर जो कि मूसा की क़ौम में से था लेकिन उन लोगों पर अत्याचार करता था (28:72), एक ईमान वाले ने जो कि फ़िरऔन की क़ौम से था, और परिवारिक या सरकारी सम्बंध होने के कारण अपने ईमान को छुपाए हुए था उन लोगों को चेताया जो मूसा और उनके साथियों के ख़िलाफ़ कार्रवाइयां करने पर आमादा थे और अल्लाह के पैग़म्बर की हत्या करने के बारे में सोचने लगे थे कि तुम ऐसे व्यक्ति को क़त्ल करना चाहते

हो जो यह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ़ से निशानिया भी लेकर आया है और अगर वह झूटा होगा तो उसके झूट का नुक़सान उसी को होगा और अगर सच्चा होगा तो जिस यातना या आपदा का वह तुम से वायदा करता है वह तुम पर आ कर रहेगी (40:28)।

यह आदमी यह देख कर कि लोग उसकी बात की तरफ़ ध्यान लगा रहे हैं, उन्हें सीधे रस्ते का मतलब समझाने लगा जिसकी तरफ़ वह उनको बुला रहा था, और यह कि आगे आने वाले जीवन की चिंता करो क्योंकि वही आख़िरी ठिकाना है। इंसाफ़ और इनाम की एक दुनिया वहाँ आबाद होगी, जहाँ न तो लिंग के आधार पर कोई भेदभाव होगा और किसी भी बुरे कर्म की सज़ा उससे अधिक दी जाएगी जबिक किसी नेक मर्द या औरत को उसकी सही आस्था और अच्छे कामों का बदला बढ़ा चढ़ा कर दिया जाएगा। वह ईमान वाला व्यक्ति सत्ताधारी लोगों को एक समान्य बूझ वाली बात की तरफ़ ला रहा था कि इस दुनिया में भी हर तरह का सुख व आनन्द प्राप्त हो और आख़िरत में भी। लेकिन जो लोग हक़ व इंसाफ़ और सैद्धांतिक बातों को कुचलने में अपना पूरा ज़ोर लगा देते हैं वो आख़िरकार इस दुनिया में भी नुक़सान उठाते हैं और आख़िरत में भी नुक़सान उठाने वालों में होंगे (40:45)। ऊपर लिखित कुछ आयतों के बाद क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से यह विश्वास दिलाता है कि हम अपने पैग़म्बरों की और उन पर ईमान लाने वालों की दुनिया के जीवन में भी मदद करते हैं और उस दिन भी जिस दिन गवाह खड़े होंगे (यानि क़ियामत के दिन भी) (40:51)।

اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ يَوۡمَئِذٍ خَيۡرٌ مُّسۡتَقَرًّا وَّ
اَحۡسَنُ مَقِيۡلًا ﴿۲۴﴾ وَ يَوۡمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ
بِالۡغَمَامِ وَ نُزِّلَ الۡمَلٰٓئِكَةُ تَنۡزِيۡلًا ﴿۲۵﴾
اَلۡمُلۡكُ يَوۡمَئِذِ ۣالۡحَقُّ لِلرَّحۡمٰنِ ؕ وَ كَانَ
يَوۡمًا عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ عَسِيۡرًا ﴿۲۶﴾ وَ يَوۡمَ
يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيۡهِ يَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِى
اتَّخَذۡتُ مَعَ الرَّسُوۡلِ سَبِيۡلًا ﴿۲۷﴾

उस रोज़ जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा, और आराम का मुक़ाम भी ख़ूब तर होगा। और जिस रोज़ आसमान बादलों के साथ फट जाएगा, और फ़रिश्ते कसरत के साथ उतारे जायेंगे। उस रोज़ सच्ची बादशाहत अल्लाह ही की होगी, और वो दिन काफ़िरों के लिये बड़ा मुश्किल होगा। और जिस रोज़ ज़ालिम अपने हाथ काटेगा और कहेगा ऐ काश! मैंने भी रसूल के साथ रस्ता इख़्तियार किया होता। (25:24-37)

क़ुरआन में उन लोगों के तर्क बयान किए गए हैं जो अल्लाह की हिदायत का इंकार करते हैं और उन तर्कों का जवाब भी दिया गया है ताकि मुसलमानों को यह सीख मिले कि विभिन्न प्रकार के विचारों और मतों को सुनें और सुनना गवारा करें और इस तरह आस्था व उसकी अभिव्यक्ति की आज़ादी को बनाए रखें। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान को रद करने वालों

के ख़ास खास तर्क क़ुरआन में मिलते हैं और जो हमले पैग़म्बरों पर सामान्यतः और मुहम्मद सल्ल० पर ख़ास तौर से किए गए वो भी बयान किए गए हैं (3:154,181; 6:25; 8:31; 9:61; 15:6; 16:24,103; 21:5; 23:35,70; 25:5; 26:27; 34:8,46; 36:47; 37:36; 38:4; 40:24; 43:22-23; 51:39,52; 52:29-30; 54:9,25-26; 68:2,51; 69:41-42; 81:22)। नास्तिकों का हमैश से यह कहना है और अब वो इसे लासफिकल और साइंसी रूप में व्यक्त करने लगे हैं कि द्रव्य (पदार्थ) और समय अनन्त हैं और इन्हें कभी समाप्त नहीं होना है, किसी व्यक्ति का जीवन समाप्त होने से इंसानी जीवन समाप्त नहीं हो जाता बल्कि हमैशा जारी रहता है या कभी प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत समय उसे नष्ट कर देता है, इसमें किसी ख़ास ख़ुदाई फ़रमान का दख़ल नहीं है, और किसी अन्तिम निर्णय या सज़ा व इनाम की कोई गुंजाइश नहीं है। यह तर्क किसी विश्वसनीय ज्ञान के आधार पर नहीं दिया जाता बल्कि केवल एक परिकल्पना है। दूर भविष्य के बारे में संवेदी ज्ञान या अवलोकन (मदेवतल व्देमतअंजपवद) का कोई सुबूत उपलब्ध नहीं कराया जा सकता लेकिन अंदाज़ा ज़रूर लगाया जा सकता है और दिमाग़ की क्षमताओं से चिंतन मनन करके नतीजा निकाला जा सकता है। अनुभूति, इन्द्रियों से परे चिंतन, कल्पना शक्ति और अन्तःष्टि से कला के मैदान में बहुत से ऐसे नतीजे निकाले गए हैं जिन्हें स्वीकार किया जाता है। इंसान की अध्यात्मिक शक्तियों के बहुत से राज़ मालूम हो चुके हैं और रूहानी ताक़तों के प्रभाव रोज़ ब रोज़ स्पष्ट हो कर सामने आ रहे हैं। इंसान के अन्दर रूहानी और अक़ली ताक़तें एक दूसरे के साथ मिल कर काम करती हैं और इंसान की बुद्धिमता को किसी भी दूसरे प्राणि की सूझबूझ से ऊंचा करती हैं। फिर उस पर अल्लाह के पैग़ामों से उसे हिदायत की रोशनी भी मिलती रहती है।

क़ुरआन यहाँ फ़ैसले के दिन की एक प्रभावपूर्ण तसवीर पेश करता है जो इससे पहले ज़िक्र हो चुके मंज़रों से अलग रंग लिए हुए हैं। तमाम लोग अपने कर्मपत्र सामने देख कर विनम्रतापूर्वक झुक हुए होंगे। घमण्डी लोग एक बार फिर ज़लील होंगे, उन पर लानत की जाएगी और वो आग में झोंके जाएंगे। उनके तमाम अंदाज़े और गणनाएं ग़लत साबित हो जाएंगी और आख़िरत में उन्हें उसी तरह अनदेखा किया जाएगा जिस तरह उन्होंने आख़िरत की सम्भावना को अनदेखा किया था, और उन्होंने जिन बातों का मज़ाक़ बनाया होगा वही बातें उन्हें घेर लेंगी। दुनिया के इस जीवन में अहंकारियों का अहंकार कितना झूटा और खोखला है और जीवन में उनकी मौज मस्ती कितनी झूटी और छोटी है जिसके लिए वो अपना भविष्य दांव पर लगाए हुए हैं, जब वह वास्तविक न्याय करने वाली हस्ती का सामना करेंगे तो उन्हें यह सब समझ में आ जाएगम कि वह तो अज़ीज़ यानि पूरा ज़ोर रखने वाला और हकीम यानि हर काम पूरी सूझबूझ से करने वाला है।

فَاَعۡرِضۡ عَنۡ مَّنۡ تَوَلّٰىۙ عَنۡ ذِكۡرِنَا وَ
لَمۡ يُرِدۡ اِلَّا الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ۝ ذٰلِكَ
مَبۡلَغُهُمۡ مِّنَ الۡعِلۡمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ
بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ۙ وَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنِ
اهۡتَدٰى ۝ وَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِى
الۡاَرۡضِ ۙ لِيَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ اَسَآءُوۡا بِمَا
عَمِلُوۡا وَ يَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ اَحۡسَنُوۡا
بِالۡحُسۡنٰى ۝ اَلَّذِيۡنَ يَجۡتَنِبُوۡنَ كَبٰٓئِرَ
الۡاِثۡمِ وَ الۡفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
وَاسِعُ الۡمَغۡفِرَةِ ؕ هُوَ اَعۡلَمُ بِكُمۡ اِذۡ
اَنۡشَاَكُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ وَ اِذۡ اَنۡتُمۡ اَجِنَّةٌ
فِىۡ بُطُوۡنِ اُمَّهٰتِكُمۡ ۚ فَلَا تُزَكُّوۡۤا
اَنۡفُسَكُمۡ ؕ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝

तो जो हमारी याद से मुंह फ़ेरे, और सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी चाहता हो उससे आप अपना ख़्याल हटा लीजिये। उनके इल्म की यही इन्तिहा है, बेशक आपका रब उस को ख़ूब जानता है, जो उसके रास्ते से गुमराह हो गया, और उससे भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो रस्ते पर चला। और वो सब अल्लाह का है जो आसमानों और ज़मीन में है, ताके जिन लोगों ने बुरे काम किये उनको उनके काम के एवज़ बदला दे, और जिसने अच्छे काम किये उनको उनके नेक कामों का एवज़ दे। जो बड़े बड़े गुनाहों और बहयाई के कामों से बचते रहे मगर छोटे गुनाहों (को नज़रअंदाज़ कर दें) बेशक तुम्हारा रब बड़ी बख़्शिश वाला है, वो तुम को ख़ूब जानता है जब उसने तुमको मिटटी से पैदा किया, और जब तुम अपनी मांओं के पेट में बच्चे थे, तो तुम अपने आपको पाक ना जताओ, वो परहेज़गारों से ख़ूब वाक़िफ़ है। (53:29-32)

जो लोग एक अल्लाह पर और आख़िरत के जीवन पर ईमान रखते हैं और जो लोग अल्लाह से सम्बंधित किसी भी बात को मुस्तक़िल तौर से नज़रअंदाज़ करते हैं और केवल इस छोटे से जीवन के सुख और आनन्द के मुक़ाबले किसी बात की कोई परवाह नहीं करते उनके बीच कोई सहमति ढूंढने की कोशिश बेकार है क्योंकि दोनों के ष्टिकोण और भावी सम्भावनाओं में ज़बरदस्त अन्तर है जिस पर कोई समझौता नहीं हो सकता। अपनी अक़ली और रूहानी जिज्ञासा को केवल स्वार्थपूर्ति और दुनियापरस्ती तक सीमित रखने से आदमी भौतिक और ज़ाहिरी सुख से ऊपर उठ कर कुछ भी देखने या समझने के लायक़ नहीं रहता और उसकी जानकारियों व फ़िक्रमन्दियों का दायरा उसी तक सीर्प्मत होता है। इसके विपरीत अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने वाला बन्दा या बन्दी लोगों के कर्मों के नैतिक और सामाजिक पहलुओं के बारे में चिंतित होता है, इसलिए वह बुरे या बेहयाई के कामों से बचता है चाहे वह भौतिक आनन्द कितना ही मामूली और वक़्ती हो। फिर भी, जो लोग अल्लाह से डरते हैं और आख़िरत के हिसाब किताब की चिंता रखते हैं, फ़रिशते या मासूम नहीं बन जाते, क्योंकि वो इंसान ही हैं जिन से कुछ ख़ताएं हो सकती है और जान बूझ कर अपने कामों पर अड़े नहीं रहते (3:135)। अल्लाह तआला किसी भी इंसान से उनकी इंसानी क्षमता से अधिक कुछ नहीं

चाहता, उसकी हिदायत सच्चाई पर आधारित है, क्योंकि उसी ने इंसान को अलग अलग चरणों में और स्थितियों में पैदा किया है और वह इंसान की ज़रूरतों और मजबूरियों को जानता है। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने वाला यह कभी नहीं सोचता कि वह पूरी तरह मुकम्मल है या इंसानियत के दर्जे से ऊपर है। अल्लाह तआला हर व्यक्ति की नियतों और सावधानियों से पूरी तरह ख़बरदार है। कोई व्यक्ति अगर अपनी प्रशंसा या अपनी ग़लती के लिए कोई बहाना पेश करे तो यह बे मतलब बात होगी। जो अल्लाह का तक़वा रखता है उसे आत्मअवलोकन से काम लेना चाहिए, और अपनी इंसानी कमज़ोरियों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا
كَاذِبَةٌ ۝٢ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ إِذَا رُجَّتِ
الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥
فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝٦ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا
ثَلَاثَةً ۝٧ فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ
الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا
أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝٩ وَالسَّابِقُونَ
السَّابِقُونَ ۝١٠ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝١١ فِي جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ۝١٢ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝١٣ وَقَلِيلٌ
مِّنَ الْآخِرِينَ ۝١٤ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝١٥
مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝١٦ يَطُوفُ
عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝١٧ بِأَكْوَابٍ وَّ
أَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝١٨ لَّا
يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝١٩ وَفَاكِهَةٍ
مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝٢٠ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا
يَشْتَهُونَ ۝٢١ وَحُورٌ عِينٌ ۝٢٢ كَأَمْثَالِ
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝٢٣ جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝٢٤ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا

जब क़यामत वाक़े होगी। जिसका वाक़े होना झूट नहीं है। (वो बहुत से लोगों को) पस्त कर देगी (और बोहतों को) ऊँचा कर देगी। जब ज़मीन पर ख़ूब ज़लाज़ला आयेगा। और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जायेंगे। फ़िर वो परागंदा गुबार की तरह हो जायेंगे। (ऐ इन्सानों) तुम तीन क़िस्म हो जाओगे। तो दायें जानिब वाले क्या ही अच्छे हैं दायें जानिब वाले। और बायें जानिब वाले क्या ही बुरे हं बायें जानिब वाले। और जो आला दर्जे के हैं वो तो आला दर्जे के हैं। यही लोग अल्लाह के (ख़ास) क़ुर्ब वाले हैं। ये लोग नेमतों के बाग़ात में होंगे। उनमें का एक बड़ा गिरोह पहले लोगों में से होगा। और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे। वो सोने के तारों से बने हुए तख़्तों पर। तकिया लगाय आमने सामने बैठे होंगे। उनके गिर्द लिये फ़िरेंगे हमेश रहने वाले लड़के। कूज़े और आफ़ताबे और जाम और आंखों के सामने बहती हुई शराब। उस शराब से ना तो सर में दर्द होगा और ना अक़्ल में कोई फ़तूर आयेगा। और मेवे जिन को ये पसंद करेंगे। और उनके हस्बे मनशा परिन्दों का गोश्त। और उनके लिये बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी। पोशीदा रखे हुए मोती की तरह। ये उनके आमाल के बदले में मिलेगा। वहां वो ना तो बेहूदा बात सुनेंगे और ना गाली

تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَ
اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ
سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّ طَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّ ظِلٍّ
مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّ مَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّ فَاكِهَةٍ
كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّ لَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَّ
فُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ
اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا
اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ
الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّ ظِلٍّ
مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَ كَانُوْا
يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَ كَانُوْا
يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾
قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾
لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ
الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ
زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾
فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ
يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

गलोच। अलबत्ता उनका कलाम सलाल सलाम होगा। और दाहिनी जानिब वाले (तो सुब्हानअल्लाह) क्या ही अच्छे हैं दायें जानिब वाले। वो बग़ैर कांटे की बेरियों में होंगे। और तह ब तह कीलों में। और लम्बे सायों में। और बहते हुए पानी में। और बहुत सारे मेवों के बाग़ों में होंगे। जो ना कभी ख़त्म होंगे और ना उनसे कोई रोकेगा। और ऊँचे ऊँचे फ़रशों में होंगे। हमने उन औरतों को पैदा किया एक ख़ास तौर पर। यानी हमने उनको कुंवारियां बनाया। शौहरों की प्यारियां और एक उम्र वालियां। यानी दायें जानिब वालों के लिये। उनका एक बड़ा गिरोह पहले लोगों में से है। और एक बड़ा गिरोह पिछलों में से है। और बाईं जानिब वाले, और क्या ही बुरे हैं बाई जानिब वाले। वो दोज़ख की लपट और खौलते हुए पानी (के अज़ाब) में हैं। और सियाह धुएं के साये में पड़े हैं। जो ना ठंडा होगा और ना फरहत बख़्श। वो लोग उससे पहले (दुनिया में बड़े) ऐशो आराम में थे। और ये काफ़िर लोग गुनाह अज़ीम पर इसरार किया करते थे। और कहा करते, क्या हम जब मर गए, और मिटटी हो गए, और हडिडयां ही हड्डियाँ रह गए तो क्या हम को फ़िर ज़िन्दा किया जायेगा। और क्या हमारे बाप दादा को भी? कह दो, बेशक पहले और पिछले। सबको एक मुक़र्ररा दिन के वक़्त पर जमा किया जायेगा। फ़िर तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराहो! (दोज़ख में जाओगे) थूहड़ के दरख़्त से खाओगे। फ़िर उसी से तुम अपने पेट भरोगे। फ़िर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। फ़िर ये पीना भी प्यासे ऊँट की तरह। ये उनकी ज़ियाफ़त होगी रोज़ी जज़ा के दिन। (56:1-56)

उपरोक्त आयतें आख़िरत के जीवन का एक जीता जागता मंज़र पेश करती हैं जो इस दुनिया के जीवन के निश्चित ख़ात्मे के बाद निश्चित रूप से शुरू होना है। यह सच्चाई और सत्य का समय होगा जब अल्लाह के सारे वायदे पूरे हो जाएंगेः यह (वह दिन है कि) इससे तू ग़ाफ़िल हो रहा था अब हम ने तुझ पर से परदा उठा दिया तो आज तेरी नज़र बहुत तेज़ है (22:50)। यह चित्रण यह दिखाता है कि वह समय ज़मीन और पहाड़ों के हिला दिए जाने के समय से सटा हुआ होगा। लोगों को उनकी कण बराबर या कण से भी छोटी नेकी या बुराई का बदला दिया जाएगा (10:61; 34:3; 99:7-8), अतः कुछ लोग होंगे जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया होगा, कुछ लोग बीच के रस्ते पर चलने वाले होंगे जबकि कुछ लोग अल्लाह के कृपा से अच्छे कर्मों में बढ़े हुए होंगे (35:32)। आख़िरत की राहतों या तकलीफ़ों के विवरण को मौखिक रूप से नहीं समझा जा सकता, इंसानी दिमाग़ अपनी वर्तमान क्षमता में आख़िरत के जीवन को कभी भी अपनी बूझ के दायरे में नहीं ले सकता, न इसकी तुलना दुनिया के जीवन से की जा सकती है। क़ुरआन आख़िरत की ख़बरें उस भाषा और प्रतीकों में देता है जो इस दुनिया में हम अपने अनुभवों से समझ सकते हैं, क्योंकि यही भाषा है जिससे हमें सम्बोधित किया जा सकता है। लेकिन आदमी को चाहिए कि वह अपनी सोच और चिंता के स्तर को ऊंचा करे और इस दुनिया में जिन चीज़ों का आदी है उन से ऊपर उठ कर सोचे, क्योंकि आख़िरत के जीवन में इंसान और दुनिया की स्थिति मौजूदा हालत से भिन्न होगी (अन्तर के लिए देखें 4:56; 14:48; 56:60-61)।

जिन सुन्दर महिलाओं का क़ुरआन में जगह जगह और इन आयतों में भी आख़िरत की नेअमतों के रूप में उल्लेख किया गया है, उन्हें इस दुनिया में पत्नियों की जगह रख कर समझा जा सकता है, जो सब की सब जवान होंगी, और शरीरिक व आत्मिक रूप से सुन्दर होंगी जैसा कि ऊपर की आयतों 35-37 में इशारा दिया गया है। हसन अलबसरी ने जन्नत में मिलने वाली हूरों से मुराद उन औरतों से ली है जो इंसानी नस्ल की नेक औरतें होंगी। तिबरी और इब्ने कसीर ने इन आयतों की तफ़सीर में कई हदीसें नक़ल की हैं जिनके अनुसार नेक औरतें जवान बना कर उठाई जाएंगी, चाहे वो मौत के समय कितनी ही बूढ़ी हो कर मरी हों, और इसी तरह नेक मर्द भी आख़िरत के जीवन में हमैशा जवान ही रहेंगे। जन्नती जोड़े एक दूसरे से काम आनन्द तो प्राप्त करेंगे लेकिन नस्ल की पैदावारी का सिलसिला वहाँ नहीं होगा। जिन लोगों की इस दुनिया में विवाह नहीं हुआ वो भी आख़िरत में ऐसी संगतों से आनन्दित होंगे (15:47; 39:73-74), और दुनिया के इस जीवन में जो लोग परिवार और कुटुम्ब में रहने वाले होंगे उनके बीच वहाँ क़रीबी सम्बंध होंगे (13:23; 36:56; 40:8; 52:21)।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى
نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ
مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ
فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ
قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ
مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَ ارْتَبْتُمْ وَ غَرَّتْكُمُ
الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ
فِدْيَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ
النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

उस रोज़ तुम मोमिन मर्दों और औरतों को देखोगे के उनके ईमान का नूर उनके आगे और दाहिनी तरफ़ चल रहा है, आज तुम को बशारत है ऐसे बाग़ात की जिनके तले नहरें बह रही हैं उनमें हमेशा रहोगे ये बड़ी कामयाबी है। उस रोज़ मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे के हमारी तरफ़ देखो के हम भी तुम्हारे नूर से राशनी हासिल करें तो कहा जाएगा के पीछे को लौट जाओ फ़िर (वहां) नूर तलाश करो, फ़िर उनके बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा, उसकी जानिबे अन्दरूनी में रहमत है, और जानिबे बेरूनी में अज़ाब है। मुनाफ़िक़ लोग मोमिनीन को पुकारेंगे के क्या हम तुम्हारे साथ ना थे, वो कहेंगे, क्यों नहीं थे, लेकिन तुम ने ख़ुद अपने आपको गुमराही में डाला, और (हमारे लिये हवादिस के) मुंतज़िर रहे, और शक किया, और झूटी तमआ ने तुमको धोका दिया, यहां तक के अल्लाह का हुक्म आ पहुंचा, और अल्लाह के बारे में तुम को शैतान दग़ाबाज़ दग़ा देता रहा है। तो आज तुम से कोई मुआवज़ा नहीं लिया जायेगा, और ना काफ़िरों से, तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारी रफ़ीक़ है, और वो बुरी जगह है। (57:12-15)

दुनिया के इस जीवन में जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और अल्लाह के सामने अपनी जवाबदेही का यक़ीन किया, आख़िरत के जीवन में उन लोगों की प्रसन्नता और जिन लोगों ने हठधर्मी के साथ सत्य का इंकार किया उन्हें आख़रित के जीवन में पेश आने वाली मुसीबतों की एक तुलना यहाँ दी गयी है। मुसीबत में पड़ने वाले इन लोगों की पीड़ा उन लोगों को देख कर मानसिक रूप से और बढ़ेगी जो जन्नत में अल्लाह के इनाम पा रहे होंगे, और यह देख कर कुढ़ेंगे कि ये लोग वही हैं जिनका वो दुनिया के जीवन में मज़ाक़ बनाया करते थे और उन्हें बेवक़ूफ़ समझते थे (2:212; 6:10; 11:38; 21:41; 83:29-36)।

यह बात महत्वपूर्ण है कि वहाँ ईमान वाले और ढोंगी एक दूसरे को देख सकेंगे और उनमें बातचीत हो सकेगी, बल्कि उनके बीच जो दीवर होगी उसमें एक दरवाज़ा भी होगा, जबकि अच्छे कर्म करने वाले मोमिनों और इमान का इंकार करने वाले इंकारियों के बीच एक आड़

होगी और उनसे बातचीत एक तीसरे माध्यम से होगी (7:44-51)। मुनाफ़िक़ (ढोंगी) सत्य को जानते हैं और यह धोखा देते हैं कि ईमान ले आए हैं लेकिन अपने हाथों वो अपने और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर देते हैं कि दिन के शुरू में ईमान लाते हैं और शाम कों मुकर जाते हैं (3:72)। जिस दरवाज़ें से वो दूसरी तरफ़ निकल जाते हैं वह तो मौजूद है लेकिन जैसा कि दुनिया में वो हमैशा दोनों तरफ़ से फ़ायदा उठाना चाहते थे, उसका अवसर वो खो देंगे और आख़िरत में उनकी स्थिति उनकी मानसिक पीड़ा और .ज्यादा बढ़ेगी। उपरोक्त आयतों में मुनाफ़िक़ों को उन लोगों के समान या उन लोगों में शामिल बताया गया है जिनके बारे में क़ुरआन यह कहता है कि जिन के दिल में रोग है (2:10; 5:52; 8:49; 9:125; 22:53; 24:50; 33:12,32,60; 47:20,29; 74:31), और अगर इस का मतलब दूसरे लोगों के साथ शामिल होना ही है तो दूसरे लोगों में ख़ुद को धोखा देने वाले, आस्था में कमज़ोर या अटकल पर चलने वाले लोग हो सकते हें। दीवार के दरवाज़े का हवाला उन लोगों को एक मौक़ा देने के लिए हो सकता है कि जिन्होंने अपने और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर ली है कि वो इस दीवार या रुकावट को हटा दें और दुनिया के जीवन में शायद किसी उचित समय पर वो मोमिनों के साथ आ मिलें, अगर वो किसी दुनियावी लालच में और अपने आप या दूसरों के द्वारा किसी धोखे में आ गए हों, ख़ास तौर से जिन्नी शैतान या इंसानी शैतान के धोखे में आकर उन्होने ख़ुद को ईमान वालों से अलग कर लिया हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿١٣﴾

मोमिनों! तुम उन लोगों से दोस्ती ना करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है के वो आख़िरत से ऐसे नाउम्मीद हो गए के जैसे काफ़िर क़ब्र वालों से आस तोड़ बैठे हैं। (60:13)

यहाँ क़ुरान उन लोगों की एक तसवीर पेश करता है जो ढिटाई के साथ सत्य का इंकार करते हैं और अल्लाह व आख़िरत पर ईमान नहीं लाते। आख़िरत में वो किसी मदद की उम्मीद नहीं कर सकते, जिस तरह दुनिया के इस जीवन में क़ब्रों में दफ़न मुर्दों से किसी मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती। मौत और दफ़न के साथ उन लोगों का जीवन और उम्मीद का ख़ात्मा हो जाता है। ईमान वालों को ख़बरदार किया गया है कि ऐसे लोगों को अपना संरक्षक और मददगार न बनाएं कि उनका भविष्य ईमान वालों के भविष्य से बिल्कुल भिन्न है। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान इंसाफ़ और दूसरों की भलाई पर उभारता है जो कि स्वार्थपूर्ति और भौतिकतावाद के उलट है।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝١ وَ لَآ اُقْسِمُ
بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ
اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝٣ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ
نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝٤ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ
لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝٥ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيٰمَةِ ۝٦ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧ وَ خَسَفَ
الْقَمَرُ ۝٨ وَ جُمِعَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ ۝٩
يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠ كَلَّا
لَا وَزَرَ ۝١١ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِالْمُسْتَقَرُّ ۝١٢
يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَ
اَخَّرَ ۝١٣ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝١٤
وَّ لَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝١٥

मैं रोज़ क़यामत की क़सम खाता हूं। और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे। क्या इन्सान ये ख़्याल करता है के हम उसकी हडिडयां जमा ना करेंगे। हम ज़रूर करेंगे क्योंके हम इस पर क़ादिर हैं के उसकी पोर पोर दुरूस्त कर दें। बल्के आदमी ये चाहता है के आगे आगे खुद सरी करता जाये। वो पूछता है के क़यामत का दिन कब आयेगा। फ़िर जब आंखें ख़ैरा हो जायेंगी। और चांद बेनूर हो जायेगा। और सूरज और चांद जमा कर दिये जायेंगे। उस रोज़ इन्सान कहेगा के अब मैं कहा भाग जाऊँ। हरगिज़ नहीं (भाग सकते) कोई पनाहगाह नहीं है। उस रोज़ सिर्फ़ अल्लाह ही की पनाहगाह होगी। उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जतला दिया जायेगा। बल्के इन्सान ख़ुद अपने किये पर मुतला होगा। अगरचे वो उज्र पेश करे।

(75:1-15)

मलामत करने वाला नफ़्स जिसका ज़िक्र ऊपर की आयत 75:2 में हुआ है, और बुराई पर उक्साने वाला नफ़्स जिसका ज़िक्र आयत 12:53 में आया है और संतोष की भावना देने वाला नफ़्स (89:27), मनोविश्लेषण (च्लबीवंदंसलेपे) की थ्योरी में तीन तरह की मनोवृत्ति की तरफ़ इशारा दिलाते हैं: ईगो, सुपरईगो और आइडी। आइडी स्वभाविक शक्तियों का भण्डार है जो इंसान के अवचेतन (नइबवदबपवने) की गहराइयों में समाहित है और आनन्द की भावनाऐं (ष्चसम्नतम चतपदबपचसमष) उस पर छाई हुई होती हैं, यह ऐसी चीज़ है जो स्वभाविक शक्तियों से प्राप्त होने वाला पहला संतोष है। दूसरे चरम पर सुपरईगो है जो घर और समाज की शिक्षा व प्रशिक्षण से विक्सित होता है, और एक आन्तरिक पहरेदार की तरह काम करता है और ज़मीर अन्तरात्मा का अंग है। फिर सब से अन्तिम चीज़ ईगो है जिसे राइड ने आईडी का अंग बताया है जो व्यक्तित्व के बाहर के कारकों से सम्पर्क में आने से क्रियाशील होता है और उन भावनाओं का जमावड़ा होता है जिसे आम तौर से बाख़बरी और होशमन्दी कहा जाता है, और तीन विपरीत बलों : व्यक्तित्व के बाहर सामाजिक वातावरण के तक़ाज़ों या तथ्यों, यौन इच्छाओं (जिनका सम्बंध यौन प्रवृत्ति से है जिसे फ़्राइड ने खास तौर से कामभावना कहा है हालांकि वह विभिन्न मानवीय प्रवृत्तियों को अपने अन्दर लिए हुए है) और सुपरईगो के बीच संतुलन बनाए रखने वाला मानसिक कारक होता है (दि न्यू कोलम्बिया एन्साइक्लोपीडिया पेज 2235)।

मलामत करने वाला नफ़्स इंसान का ज़मीर है जो व्यक्तिक के भीतर की आवाज़ है और उसे ज़िम्मेदारी व जवाबदेही का अहसास दिलाती है और अन्तिम फैसला होने से पहले अपना काम करती है वह अन्तिम फ़ैसला जब इंसान ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देगा और मअज़िरत पेश करेगा। अल्लाह तअला इस पर क़ुदरत रखता है कि वह हड्डियों को फिर से जोड़ दे, जैसे कि वह इस पर क़ुदरत रखता है कि हड्डियों के पोर पोर इस तरह से बना दे कि हर व्यक्ति के पोरवे अलग अलग हों, जिसकी बदौलत इंसानी सभ्यता विक्सित होती चली जाती है। इंसान आख़िरत के जीवन का पता देने वाले अध्यात्मिक और बौद्धिक संकेतों को नज़रअंदाज़ करता है, और कमनज़री, अदूरदर्शिता और स्वार्थपूर्ति की मस्ती में अपना समय और क्षमताएं व्यर्थ करता है। यह दुनिया और इसके सभी गुण इसकी समाप्ति की तरफ़ इशारा करते हैं और एक नयी दुनिया का पता देते हैं जो इसके बाद बसेगी, और तब किसी के लिए हिसाब किताब से बचने का कोई मौक़ा नहीं होगा और हर एक को अल्लाह के इंसाफ़ और बदले व सज़ा का सामना करना होगा।

बेशक फ़ैसला का दिन एक मोअय्यना वक़्त है। जिस दिन सूर फूंका जायेगा तो तुम गिरोह दर गिरोह आओगे। और आसमान खुल जायेगा तो दरवाज़े ही दरवाज़े होंगे। और पहाड़ हटाये जायेंगे तो वो रेत की तरह हो जायेंगे। बिला शुबह दोज़ख एक घात में है। सरकशों के लिये एक ठिकाना है। जिस में वो बरसहा बरस पड़े रहेंगे। वहां ना सर्दी का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का। मगर गर्म पानी और बहती हुई पीप। ये बदला है पूरा पूरा अपने गुनाहों का। ये लोग (दरअसल) हिसाबे आख़िरत का अक़ीदा ही नहीं रखते थे। और हमारी आयात को झूटा ख़्याल करते थे। और हमने हर चीज़ को लिख कर महफ़ूज़ कर लिया है। सो अब मज़ा चखो (अपने आमाल का) हम तुम पर अज़ाब बढ़ाते ही रहेंगे। बेशक परहेज़गारों के लिये कामयाबी है। यानी बाग़ात और अंगूर होंगे। और हम उम्र नौजवान औरतें होंगी। और शराब के छलकते हुए गिलास होंगे। वो वहां ना बेहूदा बात सुनेंगे और ना झूट। ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सिला है (तुम्हारे आमाल का)। जो मालिक है तमाम आसमानों

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ﴿۱۷﴾ يَّوْمَ
يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ﴿۱۸﴾ وَّ
فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ﴿۱۹﴾ وَّ سُيِّرَتِ
الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ؕ﴿۲۰﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ
كَانَتْ مِرْصَادًا ۙ﴿۲۱﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۙ﴿۲۲﴾
لّٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا ۚ﴿۲۳﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا
بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ۙ﴿۲۴﴾ اِلَّا حَمِيْمًا وَّ غَسَّاقًا ۙ﴿۲۵﴾
جَزَآءً وِّفَاقًا ؕ﴿۲۶﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
حِسَابًا ۙ﴿۲۷﴾ وَّ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ؕ﴿۲۸﴾ وَ كُلَّ
شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۙ﴿۲۹﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ
نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۚ﴿۳۰﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ
مَفَازًا ۙ﴿۳۱﴾ حَدَآئِقَ وَ اَعْنَابًا ۙ﴿۳۲﴾ وَّ كَوَاعِبَ
اَتْرَابًا ۙ﴿۳۳﴾ وَّ كَاْسًا دِهَاقًا ؕ﴿۳۴﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ
فِيْهَا لَغْوًا وَّ لَا كِذّٰبًا ۚ﴿۳۵﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ
عَطَآءً حِسَابًا ۙ﴿۳۶﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ

مَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ
خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ
صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَ قَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ
شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ
عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا
قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَ يَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِىْ
كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

और ज़मीन का और जो उन दोनों में हैं, बड़ा मेहरबान है किसी को उसी से बात करने का हौसला ना होगा। जिस रोज़ रूहुलअमीन और फ़रिश्ते एक सफ़ में खड़े होंगे कोई बोल ना सकेगा बग़ैर इजाज़ते रहमान के, और वो बात भी दुरूस्त करे। ये दिन बरहक़ है पस जो चाहे तो अपने रब के पास अपना ठिकाना बना ले। हमने तुम को अज़ाब से डराया है जो क़रीब है, उस रोज़ हर शख़्स अपने आमाल को देख लेगा जो उसने अपने हाथों से किये होंगे और काफ़िर कहेगा, काश के मैं मिटटी होता। (78:17-40)

क़ुरआन की जो आयतें मक्का में उतरीं उनमें हिसाब के दिन और आख़िरत के जीवन का विवरण दिया गया है। उस समय यह ख़ास तौर से ज़रूरी था कि आख़िरत पर ईमान को मज़बूत किया जाए और ईमान वालों की रूह को पक्का किया जाए। ताकि हर तरह के विरोध और प्रतिरोध के बावजूद वो जिस चीज़ पर ईमा लाए हैं उस पर मज़बूती के साथ जम जाएँ और टिके रहें। क़ुरआन उन्हें बताता है कि वह दिन जब कि सत्य को घमण्ड के साथ झुटलाने वालों के साथ सभी मतभेदों का फ़ैसला हो जाएगा, क़रीब है और दुनिया का यह जीवन चाहे कितना भी लम्बा हो आख़िरत के जीवन के मुक़ाबले बहुत ही छोटा सा है।

एक और विवरण जो हिसाब के दिन की तसवीर को और ज़्यादा स्पष्ट करता है यह है कि उस दिन रूह और फ़रिशते क़तारबन्द खड़े होंगेः अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई भी बोल नहीं सकेगा और कोई भी अनुचित बात नहीं कहेगा (और देखें 21:27-28)। इसके अतिरिक्त इस दुनिया के जीवन के ख़ात्मे और एक नया जीवन शूरू होने की निशानियां भी इन आयतों में दी गयी हैः आसमान खोल दिया जाएगा और दरवाज़े दरवाज़े बन जाएगा, यह एक ऐसा हवाला है जिससे यह अर्थ यह लिया जा सकता है कि आसमान के रहस्य इंसानी आँखों के सामने खुल जाएंगे।

जहन्नम जो कि कुकर्मियों का ठिकाना है, उनके इंतेज़ार में होगी जो ढिटाई के साथ हक़ का इंकार करते हैं। जहन्नम वालों को जो शर्बत मिलेगा वह बहुत गर्म होगा, और उसकी रंगत के लिए ग़स्साक़ का शब्द स्तेमाल किया गया है जिसका साधारण सा मतलब है काली रात की तरह बहुत ही गहरी रंगत का। लेकिन इसका एक मतलब बर्फ़ीला ठण्डा भी हो सकता है। जहन्नम के ख़ास मज़रों की, जो सब के सब बहुत भयावह हैं, जन्नत से तुलना (76:13) इंसानी नफ़्स के विरोधाभास और उसके कुकर्मों के उचित बदले को जताने के लिए है, जैसे यह कि

अपने पसन्दीदा लोगों के लिए बहुत नर्म व्यवहार और दूसरों के लिए बहुत ही कठोर और निर्मम, ये दोनों रवैये अनुचित हैं। जो लोग ऐसे कर्म करते हैं वो ज़्यादा से ज़्यादा पीड़ा झेलेंगे, लेकिन उनकी ये सारी पीड़ाएं उनके कुकर्मों का बराबर सराबर बदला होंगी जो उन्होंने पिछले जीवन में किए होंगे, ये सज़ा न तो उनके कुकर्मों से कम होगी और न ज़्यादा (6:160)। दूसरी तरफ़ जो लोग अल्लाह पर ईमा लाए होंगे और आख़िरत के जीवन का यक़ीन किया होगा वो अपने अपने बहतरीन कामों का भरपूर बदला पाएंगे और अल्लाह ने जो वायदे उनसे किए थे वो उनके लिए पूरे होंगे। वो स्वादिष्ट व्यंजनों और प्रेमपूर्ण संगतों से आनन्दित होंगे और वहाँ कोई अप्रिय, घटिया और झूटी बात नहीं सुनेंगे, ऐसी घटिया और तकलीफ़ देने वाली बातें जिनसे दुनिया में हमैशा बचा नही रहा जा सकता। ये वो लोग होंगे जिन्होंने हमैशा अपनी जवाबदेही का ख़्याल रखा होगा, और जो कुछ उन्होंने किया उसका पूरा पूरा मान सम्मान किया जाएगा और अधिक से अधिक बदला मिलेगा (2:261; 6:160; 28:84; 42:23), क्योंकि अल्लाह के फ़ज़ल और दया व कृपा की कोई सीमा नहीं है (39:10; 40:40)।

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝١ وَ اِذَا الْكَوَاكِبُ
انْتَثَرَتْ ۝٢ وَ اِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣ وَ اِذَا
الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا
قَدَّمَتْ وَ اَخَّرَتْ ۝٥ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا
غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦ الَّذِىْ خَلَقَكَ
فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِىْۤ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ
رَكَّبَكَ ۝٨ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝٩ وَ
اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۝١٠ كِرَامًا
كَاتِبِيْنَ ۝١١ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝١٢ اِنَّ
الْاَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ۝١٣ وَ اِنَّ الْفُجَّارَ لَفِىْ
جَحِيْمٍ ۝١٤ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ۝١٥ وَ مَا
هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ۝١٦ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ
الدِّيْنِ ۝١٧ ثُمَّ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٨
يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَ الْاَمْرُ
يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝١٩

जब आसमान फट जायेगा। और जब तारे झड़ पड़ेंगे। और जब सब दरया बहने लगेंगे (और एक दूसरे से मिल जायेंगे) और जब क़ब्रें कुरेदी जायेंगी। उस वक़्त हर शख़्स जान लेगा के उसने आगे क्या भेजा और पीछे क्या छोड़ा। ऐ इन्सान! तुमझ को किस चीज़ ने अपने रब्बे करीम के बारे में धोके में डाल दिया। जिसने तुझ को पैदा किया, तुम्हारे आज़ा दुरूस्त किये और तुम्हारा क़दोक़ामत मौतदिल बनाया। जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। हरगिज़ नहीं बल्कि तुम जज़ा और सज़ा को झुटलाते हो। और बेशक तुम पर कुछ निगहबान मुक़र्रर हैं। मौजिज़ लिखने वाले। जो कुछ तुम करते हो वो उसे जानते हैं। बेशक नेको कार नेमतों के बहिश्त में होंगे। और बदकिरदार दोज़ख़ में होंगे। यानी जज़ा के दिन उसमें दाख़िल होंगे। और उससे छुप नहीं सकेंगे। और तुम्हें क्या मालू के जज़ा का दिन कैसा है। फ़िर तुम्हें क्या मालूम जज़ा का दिन कैसा होता है। जिस रोज़ कोई किसी का कुछ भला ना कर सकेगा, और हुक्म उस रोज़ ख़ुदा ही का होगा। (82:1-19)

यह पूरी सूरत जो मक्का में नाज़िल हुई यह मंज़र पेश करती है कि दुनिया का यह जीवन आख़िरकार समाप्त हो जाएगा और इसके बाद हिसाब का दिन आएगा और आख़िरत का जीवन शुरू होगा। इस सृष्टि की व्यवस्था जो कहकशाओं, सितारों, ग्रहों और समुद्रों के रूप में दिखाई देती है बिखर जाएगी, क़बरें उखड़ जाएंगी, और इंसान यह समझ लेगा कि उसने आगे क्या भेजा और क्या कुछ गंवा दिया है। ऊपर की आयतों में इस चीज़ का भी हवाला दिया गया है कि इंसान को कितने संतुलित रूप में पैदा किया गया है, जिसमें उसके शरीर की बनावट, संतुलित स्वरूप और उसकी सुन्दरता तथा उसकी बौद्धिक, अध्यात्मिक और मानसिक शक्तियां जो इंसान को ख़ुद अपने आप को और अपनी दुनिया को विक्सित करने के योग्य बनाती हैं। इंसान का पैदा करने वाला जिसने इंसान का आकार बनाया और अपनी योग्यताओं से फ़ायदा उठाने के लिए उसको संतुलित शरीर दिया, और उसे सभ्यता को आगे बढ़ाने के लायक़ बनाया, उसे जिस तरह से और जिस रूप में चाहे पैदा कर सकता है। आख़िरत और हिसाब के दिन का पूरा विवरण हालांकि इंसानी बूझ के दायरे से परे हैं लेकिन आसमानी संदेश उतरने के ज़माने में जो सवाल उठाए गए उनकी तकरार से यह मालूम होता है कि इंसान की बौद्धिक और अध्यात्मिक योग्यताएं उसे एक आने वाले जीवन की कल्पना की तरफ़ ले जा सकती है जहाँ इंसाफ़ की पूर्ति हो, शान्ति हो, प्रेम हो और इंसान की सभी कामनाएं वहाँ पूरी हों, जन्नत में कोई थकावट और मुशक़्क़त नहीं होगी (35:35)।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ① وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ
حُقَّتْ ② وَ اِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ③ وَ اَلْقَتْ
مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ ④ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ
حُقَّتْ ⑤ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى
رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ⑥ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ
كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ⑦ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ
حِسَابًا يَّسِيْرًا ⑧ وَّ يَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ
مَسْرُوْرًا ⑨ وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ
ظَهْرِهٖ ⑩ فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ⑪ وَّ
يَصْلٰى سَعِيْرًا ⑫ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ
مَسْرُوْرًا ⑬ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ⑭
بَلٰۤى اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ⑮

जब आसमान फट जायेगा। और अपने रब का फ़रमान बजा लायेगा, और वो इस लायक़ है। और जब ज़मीन दराज़ की जायेगी। और अपने अन्दर की तमाम चीज़ों को (मुर्दों वग़ैरा को) बाहर कर देगी और .ख़ाली हो जायेगी। अपने रब का फ़रमान बजा लायेगी, और वो इसी लायक़ है। ऐ इन्सान! तू अपने परवरदिगार के पास पहुंचने की कोशिश कर रहा है तो फ़िर तू उससे ज़रूर मिलेगा। तो जिसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा। तो उससे आसान हिसाब लिया जायेगा। और वो अपने घर वालों में .ख़ुश ख़ुश जायेगा। और जिसका आमालनामा (बायें हाथ में) इसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा। तो वो मौत को पुकारेगा। और वो दोज़ख में दाख़िल होगा। ये दुनिया में अपने अहले अयाल में ख़ुश .ख़ुश रहा करता था। और .ख़्याल करता था के .ख़ुदा की तरफ़ लौट कर ना जायेगा। हाँ, हाँ

उसका परवरदिगार उसको (ख़ूब) देख रहा था।

(84:1-15)

ये आयतें दुनिया के इस जीवन की समाप्ति और एक नए जीवन की शुरूआत की कुछ निशानियां भी पेश करती है। आसमान टुकड़ों में बंट जाएगा और ज़मीन समतल हो जाएगी और जो कुछ उसमें दफ़न है उसे निकाल बाहर करेगी। इससे पता चलता है कि इस सृष्टि के रहस्य आसमान के फटने और ज़मीन के भण्डार बाहर निकल आने से ज़ाहिर हो जाएंगे। दुनिया के इस जीवन में इंसान को यहाँ एक दूसरे कोण से सामने लाया गया है। यह जीव जो एक सुन्दर और संतुलित काया में ढला हुआ है और जिसे बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और अध यात्मिक शक्तियां दी गयी हैं, पीड़ादायक मुशक़्क़त से गुज़रता रहेगा जब तक कि यह दुनिया समाप्त न हो जाए और एक नया जीवन शुरू हो जिसमें इंसान की आरज़ूएं पूरी हों और अल्लाह की दया व पा पूरी तरह खुल कर सामने आए, लिहाज़ा नेक लोग दोबारा उठाए जाएंगे तो उन्हें कोई कठिनाई और थकन नहीं होगी (35:35)। दुनिया के इस जीवन में इंसान व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, या इंसान और इंसानी समाज कठिनाई और दिक़्क़तों को बर्दाश्त करते हुए लगातार शरीरिक और नैतिक बदलावों और उतार चढ़ाव से गुज़रते रहते हैं क्योंकि वो इस पूरे जगत का ही अंग हैं जहाँ बदलाव कभी थमता नहीं है। व्यक्ति और समाज विभिन्न पहलुओं से विकास और बदलाव के चरणों से गुज़रते हैं जिस तरह पूरी सृष्टि में बदलाव लगातार जारी रहते हैं।

लेकिन आख़िरत के जीवन में नेक (सदाचारी) लोगों को किसी भी वजह से कोई दुख, दिक़्क़त और दीगर नैतिक या शरीरिक कष्ट नहीं झेलने होंगे बल्कि उन्हें उनकी नेकी और अच्छे आचरण का बदला मिलेगा क्योंकि वहाँ न्याय पूरी तरह लागू होगा। तमाम कुकर्मी अपने कुकर्मों का बुरा अंजाम भुगतेंगे, हालांकि वो यह समझते हैं कि वो इस जीवन के मज़ें उठाते रहेंगे और मरने के बाद फिर कभी उठाए नहीं जाएंगे और अल्लाह के सामने कोई जवाबदेही नहीं होगी। अगर इस दुनिया के जीवन में बदलाव प्रति का एक नियम हो सकता है तो आख़िरत में भी बदलाव की आशा की जा सकती है। इंसानी आरज़ूओं की पूर्ति और न्याय, शान्ति व प्रेम के सम्बंध में अल्लाह के वायदे पूरे होना इस विचार के मुक़ाबले ज़्यादा समझ में आने वाली और अक़्ल के मुताबिक़ बात है कि मौत ही बस अंतिम अंजाम है, उनका भी जिन्होंने इस दुनिया में कष्ट झेले और उनका भी जिन्होंने अन्यायपूर्ण ढंग से दुनिया के मज़े लूटे। इंसान अपने उन तमाम कामों के लिए जवाबदेह होगा जो उसने दुनिया के इस जीवन में अंजाम दिए। और सबके साथ निश्चित रूप से इंसाफ़ किया जाएगा।

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝٨ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝٩ فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝١٠

बेशक अल्लाह तो उसको दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत रखता है। उस रोज़ दिलों के भेद जांचे जायेंगे। तो आदमी के पास ना कुछ ज़ोर होगा ना कोई मददगार। (86:8-10)

अल्लाह के फ़ैसले की एक और विशेषता पर इस आयत में ज़ोर दिया गया है। हर वह चीज़ जिसे इंसान ने इस दुनिया में अपनी अक़्ली और शरीरिक ताक़त से छुपाने का प्रयास किया होगा वह उस दिन वहाँ सामने ले आई जाएगी ताकि फ़ैसले के दिन सही सही फ़ैसला हो (2:284; 4:149; 11:15; 40:16; 69:18)। अल्लाह के रसूल सल्ल० की एक हदीस के अनुसार अल्लाह का इंसाफ़ नियत के आधार पर होगा (बुखारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल, अबु दाऊद, तिरमिज़ी, नसई और इब्ने माजा), और यह केवल ज़ाहिरी सुबूतों तक सीमित नहीं है जैसा कि मानवीय न्याय के लिए ज़रूरी है, क्योंकि अल्लाह ही इंसान की असिल नियत को जानता है और उन तमाम चीज़ों से बाख़बर है जो किसी विशेष स्थिति में किसी समय छुपी रह सकती हैं। लेकिन अल्लूाह की पा किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं ठुकराती जिसने केवल बुराई का इरादा किया हो लेकिन फिर अपना इरादा बदल लिया हो, जबकि इसके विपरीत उसे अपना इरादा बदल लेने का सवाब मिलेगा (हदीसः बुख़ारी व मुस्लिम)। लेकिन यदि कुछ निश्चित मामलों में कोई व्यक्ति कुछ ग़लत काम करता है यह जाने बिना क वह ग़लत है, या कोई ऐसा काम करता है जिसे वह लाभदायक समझता है लेकिन वह नुक़सानदेह साबित होता है तो अल्लाह का इंसाफ़ हर एक की नियत को देखता है और सही व ग़लत के ज्ञान के आधार पर उस अमल का जो नतीज निकलता है उसके आधार पर होता है (4:115; 47:25,32 में स्पष्ट मार्गदर्शन आ जाने के बाद पैग़म्बर की नाफ़रमानी का नतीजा बताया गया है)। दूसरी तरफ़ कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करता है जो देखने में अच्छा हो लेकिन उसके पीछे अपने किसी ग़लत मक़सद या नियत को छुपाए तो तमाम पोशीदा नियतें और सोचें उस दिन खुल कर सामने आ जाएंगी और अल्लाह उनके आधार पर फ़ैसला करेगा जो इन छुपी नियतों को जानता हैः वह उनकी छुपी और खुली बातों को जानता है, वह तो दिलों तक की बातों से बा ख़बर है (11:5), वह आंख़ों की चोरी को जानता है और जो (बातें) सीनों में छुपी हैं (उनको भी) (40:19)। इस परीक्षा में किसी इंसान के बस में यह नहीं होगा कि वह कोई बात छुपा सके, किसी धोखे और फ़रेब से काम ले सके या उसे कहीं से कोई मदद ही मिल जाए।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣

क्या तुम को उमूमी और आलमगीर क़यामत की ख़बर मिली है। उस रोज़ बहुत से चेहरे ज़लील (और नादिम) होंगे। सख़्त मेहनत करने वाले थके मांदे। दहकती आग

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿۴﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ
اٰنِيَةٍ ۭ﴿۵﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ
ضَرِيْعٍ ۙ﴿۶﴾ لَّا يُسْمِنُ وَ لَا يُغْنِيْ مِنْ
جُوْعٍ ۭ﴿۷﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ﴿۸﴾
لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ﴿۹﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿۱۰﴾
لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۭ﴿۱۱﴾ فِيْهَا عَيْنٌ
جَارِيَةٌ ۭ﴿۱۲﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ وَّ
اَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّ نَمَارِقُ
مَصْفُوْفَةٌ ۙ﴿۱۵﴾ وَّ زَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۭ﴿۱۶﴾

में दाख़िल होंगे। खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जाएगा। उनके लिये कांटे वाले झाड़ के सिवा कोई खाना नहीं होगा। ना तो मोटा करेगा और ना भूक को रफ़ा करेगा। बहुत से चेहरे उस रोज़ बारौनक़ होंगे। अपने आमाल की कोशिशों की बदौलत ख़ुश ख़ुश होंगे। बहिश्ते बरीं में (चैन कर रहे) होंगे। वहां वो कोई बेहूदा बात ना सुनेंगे। उसमें चश्मे बह रहे होंगे। वहां ऊँचे ऊँचे तख़्त होंगे। और आबख़ौर क़रीना से रखे होंगे। और गाव-तकीये सफ़ ब सफ़ लगे होंगे। और सब तरफ़ नफ़ीस क़ालीन बिछे होंगे। (88:1-16)

इन आयतों में क़ियामत और हिसाब किताब के दिन को ढांप लेने वाली घटना का नाम दिया गया है। अपमान, ख़ुशी, संतोष और इनाम व सज़ा के ज़ाहिरी और मनोवेज्ञानिक प्रतीक बयान किए गए हैं। जन्नत के आराम और आनन्द को दिखाने के लिए जो शब्द स्तेमाल किए गए हैं उनसे यह इशारा मिलता है कि इस तरह की राहतें और ऐश इस्लाम से पहले के अरब में कुछ ख़ास वर्गों में प्रचलित थे, जबकि इसके विपरीत आम तौर से पूरे अरब द्वीप में बंजारागर्दी वाले जीवन का चलन था। (इस्लाम से पहले के अरब और ख़ास तौर से मक्का व मदीना के जीवन के बारे में जानने के लिए देखेः मुहम्मद इज़्ज़त दरवाज़ा की असुर्रसूल क़बल अलबअस, जव्वाद आली की अलमुस्तफ़ी फ़ी तारीख़ अलअरब क़ब्ल अलइस्लाम, कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ़ इस्लाम जिल्द 1 फ़िलिप हिट्टीः हिस्ट्री आफ़ दि अरब्स)।

كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ﴿۲۱﴾ وَّ جَآءَ
رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ﴿۲۲﴾ وَ جِايْٓءَ
يَوْمَىِٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ
الْاِنْسَانُ وَ اَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۭ﴿۲۳﴾ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۚ﴿۲۴﴾ فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا
يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۙ﴿۲۵﴾ وَّ لَا يُوْثِقُ وَ
ثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۭ﴿۲۶﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَىِٕنَّةُ ۙ﴿۲۷﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً

और जब ज़मीन को कूट कूट कर रेज़ा रेज़ा कर दिया जायेगा। और तुम्हारे रब का हुक्म आये और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार आयेंगे। और दोज़ख उस रोज़ हाज़िर की जायेगी और इन्सान उस रोज़ सोचेगा, और जब उसे सोचने का वक़्त कहां? कहेगा काश! इस ज़िन्दगी के लिये कुछ आगे भेजा होता। तो उस रोज़ ना कोई अल्लाह के अज़ाब की तरह अज़ाब देगा। और ना कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा। ऐ इतमीनान (पाने) वाली रूह। तू अपने रब की तरफ़ लौट चल, तू उससे राज़ी और वो

مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِي فِي عِبٰدِي ﴿٢٩﴾ وَ ادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

तुझसे ख़ुश। तो तू मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और मेरी बहिश्त में दाख़िल हो जा। (89:21-30)

अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने वाला इंसान (मर्द हो या औरत) अपने अन्दर संतुलन, स्थिरता और शान्ति महसूस करता है क्योंकि उसका. ष्टिकोण और उसकी जिज्ञासा कमनज़री, स्वार्थपूर्ति और भौतिक आनन्दों की प्राप्ति तक ही सीमित नहीं होती। ये चीज़ें उसके जीवन में एक हद तक ही होती हैं, लेकिन बहुत ही संतोष, सुरक्षा, तसल्ली और तसकीन उस समय मिलेगी जब इस जीवन की यात्रा समाप्त हो जाएगी, और आख़िरत के जीवन में हमैशा की कामयाबी का लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। उस समय मोमिन अपने रब की तरफ़ वापस जाएगा, अपने आप से संतुष्ट और अपने रब से राज़ी, उस से कहा जाएगा कि दाख़िल हो जा जन्नत में अल्लाह के सच्चें बंदों के साथ। यह सब से बड़ी उपलब्धि, इनाम और कामयाबी होगी।

दूसरी तरफ़ जिन लोगों ने हठधर्मी के साथ सत्य को नकारा होगा और बुरे कर्म किए होंगे वो आख़िरत के जीवन में यातना और पीड़ा में डाले जाएंगे। इस यातना और पीड़ा का ज़िक्र बेड़ियों और आग के संदर्भ कें साथ किया गया है जिससे उस कष्टदायक स्थिति की तसवीर हमारे सामने आती है जिसका हम इस जीवन में अनुभव करते हैं कि इसी तरह भावी जीवन में मिलने वाले इनामों का ज़िक्र किया गया है। हालांकि इस यातना या इस इनाम का वास्तविक रूप और स्थिति हमारी कल्पना से परे हैः कोई प्राणि नहीं जानता कि उनके लिए कैसी आँखों की ठण्डक छुपा कर रखी गयी है यह उन कर्मो का फल है जो वो करते थे (32:17)। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन नेअमतों का वर्णन इन शब्दों में किया हैः न उन्हें किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना, न किसी इंसान के ज़हन में कभी उनका विचार आया (तिबरीः अलकबीर)। यह बात बिल्कुल स्पष्ट और समझ में आने वाली है कि आख़िरत के अनन्त जीवन के इनाम या अज़ाब को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

अलराज़ी ने जो कि अप्राकृतिक (नचमतदंजनतंस) मामलों में शब्दों के सीधे और प्रचलित अर्थों से हट कर उनका अर्थ ढूंढने के इच्छुक रहते थे, आयतें 73:12-13 की तफ़सीर में जहन्नम की बेड़ियों की व्याख्या करते हुए उसे दुनिया के जीवन में किए गए कामों के नतीजों के रूप में लिया है, क्योंकि अज़ाब (यातना) में घिरा व्यक्ति दुनियावी और शरीरिक आनन्दों में घिरा हुआ था जिन्होंने उसे अंजाम को देखने से रोक रखा, और ये बेड़ियां और हथकड़ियां उसे समझ में आ जाएंगी और पिछले जीवन की तकलीफ़देह यादें बन जाएंगी, जिन से छुटकारा या जिनकी भरपाई सम्भव न होगी। यह इस बयान किये गये. श्य को समझने का एक ढंग है लेकिन निश्चित रूप से यही एक मतलब नहीं है, तौक़ या बंधन का मतलब क़ैद, या किसी

ऐसी चीज़ की चाहत जो मना हो या मिलना मुमकिन न हो, या किसी दरवाज़े का बन्द हो जाना और कोई अवसर न पाना भी होता है। दुनियावी और शरीरिक इच्छाओं की ये बेड़ियां जो आख़िरकार धोखा साबित हुईं, आख़िरत में रूहानी आग भड़काएँगी और इस तरह अज़ाब में डाला जाने वाला इंसान (मर्द या औरत) अपने पिछले और वर्तमान जीवन की कड़वाहट को महसूस करेगा या करेगी, मानो यह स्थिति गले की हड्डी बन जाएगी न निगल सकेंगे न उगल सकें। इन लोगों को सब से ज़्यादा दुख देने वाली तकलीफ़ यह होगी कि वो अल्लाह के नूर से वंचित हो जाएंगे और जिन लोगों पर अल्लाह की पा होगी उनकी संगत से भी महरूम होंगे। तथापि, यह इंसानी अक़्ल पर निर्भर है कि जो कुछ हमारी समझ के दायरे से परे है उनके बारे में क़ुरआन जो कुछ कहता है उसे भाषाई सिद्धांतों के अनुसार सम्भव और विश्वसनीय तरीक़े से समझें, बजाए इसके कि किसी एक ख़ास मतलब पर ज़ोर दें, जब तक उसके पक्ष में तर्क और सुबूत न हों और क़ुरआन से या हदीस से उसकी कोई निश्चित गवाही न मिले।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ﴿۱﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۙ﴿۳﴾ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ؕ﴿۴﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۙ﴿۵﴾ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۶﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ﴿۸﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۹﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿۱۰﴾ وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿۱۱﴾ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۖ﴿۱۲﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿۱۳﴾ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ﴿۱۴﴾ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ﴿۱۵﴾ الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿۱۶﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ﴿۱۷﴾ الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ﴿۱۸﴾ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۙ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ﴿۲۰﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۧ﴿۲۱﴾

रात की क़सम जब वो (दिन को छुपा ले)। और दनि की क़सम जब चमक उठे। और उस ज़ात की क़सम जिसने नर और मादा पैदा किये। के तुम लोगों की कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं। तो जिसने दिया और ख़ुदा से डरा। और सब से अच्छी को सच माना। तो बहुत जल्द हम उसको आसानी मोहिया कर देंगे। और जिसने बुख़्ल किया और बे परवाहों। और अच्छी बात को झुटलाया। तो हम उसको तकलीफ़ की चीज़ के लिये असबाब दे देंगे। और उसका माल उसके कुछ काम ना आयेगा जब वो दोज़ख के गढ़े में गिरेगा। हमारा काम तो राह बनाना है। और आख़िरत भी हमारे क़ब्ज़े में है और दुनिया भी। सो मैंने तुमको भड़की हुई आग से डराया है। उसमें वही दाख़िल होगा जो बड़ा बदबख़्त है। जिसने झुटलाया और मुंह फ़ेर लिया। और उससे उस शख़्स को दूर रखा जायेगा जो परहेज़गार होगा। जो अपना माल (अल्लाह की राह में) देता है ताके सुथरा हो। और (वो इसलिये नहीं देता) के किसी का उस पर एहसान है वो उसका बदला उतार रहा है। मगर वो अपने रब की खुशनूदी के लिये देता है जो सब से आला है। और वो जल्दी ख़ुश हो जायेगा।

(92:1-21)

रात और दिन का क्रम, अक्षांश के अनुसार उनके अन्तराल में फ़र्क़, देशान्तर के मुताबिक़ समय के विभाजन में उनकी समानता, और जीवन पर आम तौर से, और इंसानी जीवन पर ख़ास तौर से उन दोनों के प्रभाव दुनिया के चमत्कारों में से हैं (25:47; 78:9-11)। पुलिंग और स्त्रीलिंग के बीच अन्तर भी एक अजूबा है जिससे जीवों में पैदावारी प्रक्रिया चलती है और भौतिक वस्तुओं में यह चीज़ दूसरे ढंग से पाई जाती हैः और हर चीज़ को हम ने जोड़ों में पैदा किया (51:49), वही है जिसने हर चीज़ा का जोड़ा बनाया (43:12 और देखें 13:3; 36:6; 75:39)। आयत 43:12 की व्याख्या में राज़ी ने इब्ने अब्बास का यह कथन नक़ल किया है कि क़ुरआन में जोड़ों से अभिप्राय प्रति में आम तौर से पाया जाने वाला विरोधाभास हो सकता है जैसे रात और दिन एक दूसरे के विपरीत हैं, काला और सफ़ेद एक दूसरे का विलोम हैं। अलराज़ी तो यहाँ तक कह गए हैं जोड़े से अभिप्राय वो तत्व हैं जो एक दूसरे को पूरा करते हैं जैसे दायां और बायां, आगे और पीछे, ऊपर और नीचे, भूत और भविष्य। दबाव और ऊषमा में ऊंचा व नीचा स्तर और बिजली में पाज़िटिव व नेगेटिव। इसी तरह जीवन का अन्त उसकी शुरूआत के समानान्तर है, और इस दुनिया का जीवन और दुनिया के बाद आने वाला नया जीवन एक दूसरे के पूरक या एक ही लगातार जीवन क्रम के दो चरण हो सकते हैं। केवल अल्लाह ही ऐसी हस्ती है जिसका कोई दूसरा नहीं है, कोई उसका समानान्तर या उसकी हस्ती को मुकम्मल करने वाला नहीः कोई उस जैसा नहीं है (114:4)।

कठिनाई में अपने कामों के लिए ज़िम्मेदार है। जब कोई व्यक्ति सत्य और अच्छाई की तरफ़ क़दम उठाता है तो अल्लाह उसका रास्ता आसान कर देता है और उस पर चलते रहना उसके के लिए आसान कर देता है। इसी तरह, जो व्यक्ति बुराई की तरफ़ क़दम बढ़ाता है उसके लिए कठिन रास्ता खोल दिया जाता है जिस पर वह किसी रुकावट के बग़ैर चलता चला जाता है। इंसान को पसन्द की आज़ादी दी गयी है, और अल्लाह केवल मार्गदर्शन करता है वह किसी व्यक्ति को मजबूर नहीं करता या उसे किसी ख़ास दिशा में चलने के लिए धकेलता नहीं है। अल्लाह के प्रति आभारी होने का तक़ाज़ा यह है कि अच्छे कर्म किए जाएं और दूसरों के साथ शालीनता से व्यवहार किया जाए, किसी उपकार का बदला प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को ख़ुश करने के लिए और उसकी रज़ामन्दी पाने के लिए। दूसरों के लिए अपने हक़ को क़ुर्बान करके आदमी को बहुत ही प्रसन्नता और संतोष प्राप्त होता है।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَ أَخْرَجَتِ
الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝٢ وَ قَالَ الْإِنْسَانُ مَا
لَهَا ۝٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝٤ بِأَنَّ رَبَّكَ
أَوْحَىٰ لَهَا ۝٥ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ

जब ज़मीन अपनी सख़्त हरकत से हिलाई जाएगी। और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी। और इन्सान कहेगा के ज़मीन को क्या हो गया है। उस रोज़ ज़मीन अपने सब हालात बयान कर देगी। क्योंके तुम्हारे

اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

परवरदिगार ने उसको इसका हुक्म दिया होगा। उस रोज़ लोग गिरोह दर गिरोह वापस आयेंगे ताके अपने आमाल को देखें। सो जिसने ज़र्रा बराबर भी कोई नेकी की होगी वो देख लेगा। और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वो उसे देख लेगा। (99:1-8)

यह इस जीवन की समाप्ति का एक और संकेत है, जिस तरह दूसरे संकेत और प्रतीक आसमान, सूरज, चांद, सितारों, ग्रहों, पहाड़ों और समुद्रों के संदर्भ में बयान हुए हैं (75:7-9; 81:1-6; 82:1-4; 84:1-5द्ध। दूसरी जगहों पर क़ुरआन ज़मीन के फटने और अपने अन्दर की चीज़ें निकाल बाहर करने का ज़िक्र करता है (सम्भवतः ज्वाला मुखी, 84:3-4), और क़ब्रों के उखड़ जाने का बयान करता है (82:4), लेकिन ऊपर की आयतों में ज़ोरदार भूकम्प का ज़िक्र है जो अचानक आ जाएगा और अपने विनाश में हर उस चीज़ को पीछे छोड़ देगा जो हमारे ज्ञान में है। अल्लाह का फ़ैसला सुनने के लिए इंसान बिखरे हुए त्राहि त्राहि की स्थिति में सामने आएंगे, और अल्लाह के फ़ैसले में कण बराबर नेकी या बुराई को नहीं छोड़ा जाएगा (21:47; 4:40), न किसी व्यक्ति की न जमाअत की (3:57-76, 113-115; 22:17), हर एक को पिछले जीवन में उसके द्वारा किए गए हर काम या हर बात का महत्व और मूल्य जता दिया जाएगा, हालांकि उन्होंने अपने जीवन में उसे छुपाने या उसका कोई बहाना बनाने की कोशिश की होगी।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝ وَ اِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝ وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝ وَ حُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۝ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝

बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और वो ख़ुद भी इससे वाक़िफ़ है। और वो माल की मोहब्बत में बहुत सख़्त है। क्या वो नहीं जानता के क़ब्र के सारे मुर्दे निकाल लिये जायेंगे। और जो कुछ उनके सीनों में है सब ज़ाहिर कर दिया जायेगा। बिला शुबह उनका रब उस रोज़ ख़ूब वाक़िफ़ होगा। (100:6-11)

ये आयतें दूसरी बातों के अलावा इस बात क जताती हैं कि फ़ैसले के दिन जो कुछ इंसानों ने अपने दिल और दिमाग़ों में छुपा रखा होगा, ज़ाहिर हो जाएगा और अल्लाह उसे इंसान के कर्मपत्र में दिखाएगा ताकि उसका हिसाब चुकाया जाए, यह बात दूसरी कई आयतों में भी आई है (जैसे 2:284; 40:116; 69:18)। इस तरह इंसान को उसकी जवाबदेही की ज़िम्मेदारी याद दिलाई गयी है क्योंकि इंसान प्रायः अपने रब का नाशुक्रा बन जाता है। दुनियावी आनन्दो और धन दौलत से प्रेम इंसान के अन्दर अधिकतर स्वार्थपूर्ति, लालच, वासना, अहंकार, घमण्ड,

बेकार ख़र्च करने जैसी बुराइयां पैदा कर देता हे। फिर वह दूसरों की ज़रूरत से बे ख़बर रहता है और अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों को भूल जाता है (मिसाल के तौर पर देखें 3:10,14; 9:34-35; 11:116; 17:16; 18:34; 19:77; 23:33; 34:34-35; 43:23; 48:11; 56:45-46; 57:20; 68:10-14; 89:20; 102:1-12; 104:1-13)। भौतिक और संसारिक सम्पन्नता को अल्लाह की हिदायत और इंसानी ज़िम्मेदारी तथा आख़िरत में जवाबदेही की चिंता के साथ बरतना चाहिए। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान इंसान के अन्दर व्यक्तिगत रूप से भी और समाज में सामूहिक रूप से भी संतुलन और स्थिरता को बनाए रखता है।

اَلْقَارِعَةُ ۝١ مَا الْقَارِعَةُ ۝٢ وَ مَآ اَدْرٰىكَ مَا
الْقَارِعَةُ ۝٣ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ
الْمَبْثُوْثِ ۝٤ وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ
الْمَنْفُوْشِ ۝٥ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧ وَ اَمَّا مَنْ خَفَّتْ
مَوَازِيْنُهٗ ۝٨ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩ وَ مَآ اَدْرٰىكَ
مَا هِيَهْ ۝١٠ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

वो खड़खड़ाने वाली चीज़। वो खड़खड़ाने वाली चीज़ क्या है। और तुम क्या जानो के वो खड़खड़ाने वाली चीज़ क्या है। जिस रोज़ इन्सान बिखरे हुए पतंगों की मानिंद होंगे। और पहाड़ ऐसे हो जायेंगे जैसे धुन्की हुई रंगबिरंग की ऊन। सो जिसके आमाल वज़न में भारी होंगे। वो दिल पसंद ऐश में होगा। और जिसके आमाल वज़न में हल्के होंगे। तो उसका ठिकाना दोज़ख होगा। और आप क्या जानते हैं वो क्या चीज़ है। एक दहकती हुई आग है। (101:1-11)

क़ियामत के दिन की कई तरह की स्थितियां और विशेषताएं क़ुरआन में बताई गयी हें ताकि इंसानों को उसके हालात का कुछ अंदाज़ा हो सके और उसके भयंकर प्रभावों को वह कुछ महसूस कर सकें, इसी लिए क़ियामत के हालात को अलग अलग नामों से बयान किया गया हे। यह फ़ैसले का दिन है, आख़रित है, न टलने वाली आफ़त है (1:56), यह यौमुल हक़ यानि सच्चाई के खुल जाने का दिन है या अधिकारों को दिलाने का दिन है (69:1-3), छा जाने वाली आफ़त है (79:34), कान फाड़ देने वाली आवाज़ है (80:33), और सूर (बिगुल) फूंकने का दिन है, जैसा कि ऊपर की आयत में आया है। यह सही सही पैमाना और तराज़ू स्थापित होने की तसवीर जिसमें कण बराबर नेकी या बुराई का वज़न तौलने से नहीं रह जाएगा, क़ुरआन में जगह जगह पेश की गयी है (जैसे 4:40; 7:8-9; 23:102-103; 99:7-8)। लेकिन इसके बावजूद उसकी वास्तविक स्थिति कोई नहीं जान सकता कि तराज़ू कैसा होगा और उसमें कर्म किस तरह तौले जाएंगे, उस दिन जो कुछ भी होगा वह हमारी कल्पना और बोध से परे है, लेकिन ऐसे शब्दों से उसका इज़हार किया जा सकता है जिन्हें हम समझते हों ताकि उसे हम अपनी इंसानी और दुनियावी अनुभवों के मुताबिक़ समझ सकें। इंसान जिनके अन्दर

घमण्ड और अहंकार का तत्व पाया जाता है वह उस दिन बिखरे हुए कीड़ों मकोड़ों की तरह निकलेंगे, उसी तरह जिस तरह पहाड़ जिन्हें क़ुरआन में मज़बूती से जमे हुए कहा गया है (13:3; 15:19; 16:15; 21:31; 27:61; 31:10; 41:10; 50:7; 77:27) रूई के गोलों की तरह उड़ते हुए होंगे। उस दिन जिन लोगों पर रहमत होगी, आनन्द में होंगे, और आग का गहवारा जो पापियों को अपने घेरे में ले लेगा उसे आख़िरत में अंजाम और बदले रूप में कल्पना में लाया गया है, जो लोगों के उन बुरे कर्मों का नतीजा होगा जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ ۙ الَّذِیْ جَمَعَ
مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ۝٢ ۙ یَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ
اَخْلَدَهٗ ۝٣ ۚ كَلَّا لَیُنْۢبَذَنَّ فِی الْحُطَمَةِ ۝٤ ۖ وَ
مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ ؕ نَارُ اللّٰهِ
الْمُوْقَدَةُ ۝٦ ۙ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ ؕ
اِنَّهَا عَلَیْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ ۙ فِیْ عَمَدٍ
مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

जो लोगों के सामने और पसे पुश्त ऐब बयान करता है उसके लिये बहुत .ख़राबी है। जो माल जमा करता और गिन गिन कर रखता है। वो .ख़्याल करता है के उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा। हरगिज़ नहीं वो ज़रूर ऐसी आग में डाला जायेगा जो रौंद के रख दे। और तुम क्या जानते हो रोंदने वाली क्या है। वो अल्लाह की भड़काई हुई आग है। जो दिलों तक पहुंच कर लिपटेगी। बेशक वो उन पर बन्द कर दी जायेगी। (यानी आग के) लम्बे लम्बे सतूनों में। (104:1-9)

यहाँ क़ुरआन के पाठक को यह मालूम होता है कि लांछन लगाना, झूठे आरोप लगाना, बुरा कहना, फब्तियां कसना, पीठ पीछे बुराई और दूसरों के दोषों का बयान करना जैसी बातें माल जमा करने और गिन गिन कर रखने की चाह से जुड़ी हुई हैं और इस विचार का नतीजा हैं कि मालदार होने से अमर जीवन प्राप्त हो जाएगा। धन दौलत से प्रेम और धन दौलत को ही सब कुछ समझने से घमण्ड पैदा होता है और ऐसा इंसान दूसरों को तुच्छ समझने लगता है, दूसरों पर व्यंग करना उनके अन्दर बुराइयां निकालना और उनके पीछे उन्हें बुरा कहना उसकी आदत बन जाती है (और देखें 68:10-14)। अत्यधिक माल व दौलत की भूख और कभी न समाप्त होने वाले जीवन का लालच ही इस दुनिया में कुछ लोगों की चिंता का केन्द्र बिन्दु होता है। ऐसे लोगों का अंजाम ष्हड्डियों को चिकनाचूर कर देने वालाष होगा जो माल व दौलत की भूख को कुचल कर ख़त्म कर देगा (9:34-35), और जिसकी आग की लपटें वहाँ तक पहुंचेंगी जो जीवन का प्रतीक है अर्थात इंसान का दिल। इसलिए जो लोग बेहिसाब दौलत जमा करते हैं या करना चाहते हैं और अमर जीवन के इच्छुक हैं वो इन दोनों चीज़ों से वंचित होकर चिकनाचूर कर देने वाली आग में पड़े रहेंगे।

❀ ❀ ❀

This document was created with Win2PDF available at http://www.win2pdf.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.
This page will not be added after purchasing Win2PDF.